श्रीरत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडों प्रबंध.

भाग १३–१४ वा.

संग्राहक,
श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनिश्री
ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)



प्रकाशक,
श्रीसंघफलोधी सुपनादिकी आवंदसे.

प्रबन्धकर्ता,
शाह मेघाराजजी मोणोयत मु फलोधी

प्रथमावृत्ति १००० —— विक्रम संवत् १९७८

भावनगर—धी आनंद प्रिन्टींग प्रेसमां शा गुलाबचंद लल्लुभाइए छाप्यु

विषयानुक्रमणिका

शीघ्रबोध भाग १३ वा.

शीघ्र बोध भाग १४ वा.

सवत् १९७७ कि शालमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज का चतुर्मासा फालोधी नगरमे हूवा था आपश्री का सदूउपदेशसे ज्ञानवृद्धि के लिये निम्न लिखत पुस्तके प्रकाशित हूइ है.

१००० शीघ्रबोध भाग ४वा शाहा रेखचन्दजी लीछमीलालजी कोचर की तर्फसे
१००० शीघ्रबोध भाग १ शाहा हीरचन्दजी फुलचन्दजी कोचर की तर्फसे (आवृति २ जी)
१००० शीघ्रबोध भाग ८ वा शाहा अगरचन्दजी जोगराजजी लोढाकि तर्फ से.
१००० शीघ्रबोध भाग ९ वा शाहा सेसमलजी मीसरीलालजी गोलेच्छा तथा सुगनमलजी ढढाकी तर्फ से.
५००० सुबोधनियमावली अवृतिदुजी शाहा जुहारमलजी दीपचन्दजी वेदकि तर्फ से
४५०० द्रव्यानुयोग प्रथम प्रविशका शाहा धनसुखदासजी आसकरणजी गोलेच्छाकि तर्फ से.
१००० हिंदी मेजकर नामो श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमालाकि तर्फ से
१००० त्रण निर्नामा लेखों का उत्तर श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमालाकि तर्फ से
१००० आनदघन चौवीशी शाहा अगरचन्दजी जोगराजजी लोढाकी तर्फ से.

१७५०० श्रीसंघ फलोधी सुपनो आदि कि आवंदसे.

२००० तीर्थयात्रा स्तवन.

१००० अमे साधु शामाटे थया.

१००० नन्दीसूत्र मूलपाठः

१५०० द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका

७००० सात पुष्पो का गुच्छा एकजील्द

१००० स्तवन संग्रह भाग १ चो. आ.

१००० स्तवन संग्रह भाग २ द्वि० आ.

१००० स्तवन संग्रह भाग ३ "

१००० दान छत्तिसी "

१००० अनुकंप्पा छत्तिसी "

१००० प्रश्नमाला स्तवन "

१००० विनति शतक

१००० शीघ्रबोध भाग १० वा

१००० शीघ्रबोध भाग ११ वा

१००० शीघ्रबोध भाग १२ वा

१००० शीघ्रबोध भाग १३ वा

१००० शीघ्रबोध भाग १४ वा

१७५००

३५००० कार्य चालु है ॥

श्री रत्नप्रभसूरी सद्गुरुभ्यो नम

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडाप्रबंध.

भाग १३ वा



थोकडा नम्बर १.



बहुश्रुती कृत १४ राज

जहाँपर पाचास्तिकाय है उन्हीकों लोक कहा जाते है वह लोक असख्याते कोडनकोड योजनके विस्तारवाला है उन्हीका परिमाणके लिये राजसज्ञा दी गइ है. वह राज भी असख्य कोडोनकोड जोजनका है उन्ही राजका परिमाणसे १४ राज परिमाण लोक कहे जाते है, वह उर्ध्व-अधोलोककि अपेक्षा है, परन्तु कितना उर्ध्व वा अधोजानेपर कितने विस्तार आता है, वह सर्व इन्हीं थोकडे द्वारा कहेगे ।

वस्तुनिर्देशमें नय कि अपेक्षा अवश्य होती है, वह नय मौख्य दो प्रकारकि है. (१) निश्चयनय, (२) व्यवहारनय. जिस्मे निश्चयनयसे लोकका मध्यभाग प्रथम रत्नप्रभा नरकके अवकाश अन्तराके असंख्यातमे भागमें है. वास्ते अधोलोक संभूमितलासे साधिक सात राज है, और उर्ध्वलोक कुच्छ न्यून सात राज है तथा तीरच्छालोक जाडा १८०० योजनका है, परन्तु व्यवहारनयसे सात राज अधोलोक और सात राज उर्ध्वलोक और तीरच्छालोक उर्ध्वलोकके सेमल माना जाता है, वह व्यवहारनयकि अपेक्षासे ही यहापर वतलाये जावेगा.

प्रथम च्यार प्रकारके राज होते है उन्हीकों ठीक (२) समझना.

(१) घनराज–एक राज लंवा, एक राज चोडा, एक राज जाड हो.

(२) परतरराज–एक घनराजका च्यार परतरराज होता है.

(३) सूचिराज—एक परतरराजका च्यार सूचिराज होता है.

(४) खण्डराज-एक सूचिराजका च्यार खण्डराज होता है.

अधोलोक सात राजका जाडपणामें है और अधोलोकमें सात नरक है, वह प्रत्यक नरक एकेक राजकि जाडी है त्रिस्तार यंत्रसे देखो.

नाम	जाडी	पहूली	घनराज	परतर.	सूचि	खण्ड.
रत्नप्रभा	१ राज	१ राज	१ राज	४ राज	१६ राज	६४ राज
शार्करप्रभा	१ ,,	२॥ ,,	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,
वालुप्रभा	१ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,	२५६ ,,	१०२४ ,,
पकप्रभा	१ ,,	५ ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,	१६०० ,,
धूमप्रभा	१ ,,	६ ,,	३६ ,,	१४४ ,,	५७६ ,,	२३०४ ,,
तमप्रभा	१ ,,	६॥ ,,	४२। ,,	१६६ ,,	६७६ ,,	२७०४ ,,
तमतमा०	१ ,,	७ ,,	४६ ,,	१९६ ,,	७८४ ,,	३१३६ ,,

अधोलोकमें सर्व घनराज १७५ परतरराज ७०२ सूचिराज २८०८ खण्डराज ११२३२ होते है

सभूमितलासे १॥ राजउर्ध्व जावे तब पेहला दुसरा देवलोक आता है जिस्मे आदो राजउर्ध्व जावे तब एक राजविस्तार है वहासे आदो राजउर्ध्व जावे तब १॥ राजविस्तार है वहासे पाच राज जावे तब २ राजविस्तार वहासे पाच राज जावे तब २॥ राजविस्तार है वहा पर सुधर्म इशान देवलोक है.

सौधर्म इशान देवलोकसे उर्ध्व एक राज जाते है वहापर तीजा चोथा देवलोक आते है जिस्में आदा राज जावे तब तीन राजविस्तार है वहासे आदा राज जावे

वहां च्यार राजविस्तार है वहां पर सनत्कुमार महेन्द्र देवलोक आता है.

सनत्कुमार महेन्द्र देवलोकसे पुण ०।।। राज उर्ध्व जावे तब पांचवा ब्रह्मदेवलोक आता है वह पांच राजका विस्तारवाला है।

पांचवा देवलोकसे पाव ०। राज उर्ध्व जावे तब छठा लंतक देवलोक आता है वह भी पांच राजके विस्तावाला है।

छठा देवलोकसे पाव ०। राज उर्ध्व जावे तब सातवा महाशुक्र देवलोक आता है वह च्यार राजके विस्तारवाला है वहांसे पाव राज उर्ध्व जावे तब आठवा सहस्र देवलोक च्यार राजके विस्तारवाला आता है।

आठवा देवलोकसे आदा ०।। राजउर्ध्व जाता है तब नवमा दशवा देयलोक आता है वह तीन राजके विस्तारवाला है वहांसे आदा ०।। राज उर्ध्व जाता है तब इग्यारवा बारहवा देवलोक आता है वह अढाइ राजविस्तारवाला है।

इग्यारवा बारहवा देवलोकसे एक राज उर्ध्व जाता है तब नव ग्रीवैग आता है जीस्मे ०। राज तो आढाइ राजका और ०।।। राज दो राजके विस्तारवाला है।

नव ग्रीवेगसे एक राज उर्ध्व जाता है तब पांचाणुत्तर वैमान आता है जिस्में आदा ०।। राज तो दोढ १।। राज और आदा ०।। राज एक राजविस्तारवाला है एवं सात राज उर्ध्व लोक है जिस्के धनराजादि देखो यंत्रसे.

देवलोक	जाडपण.	निस्तार.	घन०	परतर.	सूचि.	खण्ड०
सभूमिसे	०॥ राज	१ राज	०॥ राज	२ राज	८ राज	३२ राज
वहासे	०॥ ,,	१॥ ,,	१$\frac{१}{८}$,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,
वहासे	०। ,,	२ ,,	७ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,
सूधर्म इशान	०। ,,	२॥ ,,	१॥$\frac{१}{१६}$	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,
वहासे	०॥ ,,	३ ,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,	२८८ ,,
३–४ देवलो	०॥ ,,	४ ,,	८ ,,	३२ ,,	१२८ ,,	५१२ ,,
५ देवलो	०॥। ,,	५ ,,	१८॥।,,	७५ ,,	३०० ,,	१२०० ,,
६ देव०	०। ,,	५ ,,	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,
७ देव०	०। ,,	४ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,	२५६ ,,
८ दे०	०। ,,	४ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,	२५६ ,,
९–१० दे०	०॥ ,,	३ ,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,	२८८ ,,
११–१२ दे०	०॥ ,,	२॥ ,,	३$\frac{१}{८}$,,	१२॥ ,,	५० ,,	२०० ,,
वहासे	०। ,,	२॥ ,,	१॥$\frac{१}{१६}$	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,
९ ग्री० वै	०॥। ,,	२ ,,	३ ,,	१२ ,,	४८ ,,	१९२ ,,
वहासे	०॥ ,,	१॥ ,,	१$\frac{१}{८}$,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,
अणुत्तर ५०	०॥ ,,	१ ,,	०॥ ,,	२ ,,	८ ,,	३२ ,,

उर्ध्वलोकके सर्व घनराज ६३॥ परतर २५४ सूचि १०१६ खण्डराज ४०६४ तीरच्छो लोक एक राजविस्तार-वाला है जिस्में असंख्यातद्वीप समुद्र है परन्तु १८०० जोजनका जाडपणामें होनासे किसी राजकी संख्या नहीं है.

सम्पुरण लोकके घनराजादि संख्या.

(१) घनराज २३६ (३) सूचिराज ३८२४
(२) परतरराज ६५६ (४) खण्डराज १५२९६

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

इति.



थोकडा नम्बर २

बहूतसूत्र संग्रहकर.

(नारकीके २१ द्वार)

(१) नामद्वार (२) गोत्रद्वार (३) जाडपणा
(४) पाहूलपणा० (५) पृथ्वीपण्ड (६) करंडद्वार

(७) पात्थडेद्वार (८) अन्तराद्वार (९) पात्थडे२अन्तरो०
(१०) घणोदद्धि० (११) घणवायु० (१२) तृणवायु०
(१३) आकाशद्वार (१४) नरक२अन्तरो० (१५) नरकावासा
(१६) अलोकान्तरो०(१७) वलीयाद्वार (१८) क्षेत्रवेदना०
(१९) देवेदना० (२०) वैक्रयद्वार (२१) अल्पबहूतद्वार

(१) नामद्वार—गमा वनशा शीला अञ्जना रीठा मघा माघवती

(२) गोत्रद्वार—रत्नप्रभा शार्कर० वालुकाप्रभा पंकप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा और तमतमाप्रभा।

(३) जाडपणो—प्रत्यक नरक एकेक राजकी जाडी है।

(४) पाहुलपणो—पहेली नरक एक राजविस्तारवाली है, दुसरी २॥ राज, तीसरी च्यार राज, चोथी पाच राज, पाचमी छे राज, छठी साडाछे राज, सातमी नरक सात राज के विस्तारमें है परन्तु नारकिके नेरिया एक राजके विस्तारमें है उन्हीकों त्रसनाली कही जाती है।

(५) पृथ्वीपण्डद्वार-प्रत्यक नारकी असंख्यात असंख्यात जोजनकि है परन्तु पृथ्वीपण्ड पेहली नरकका १८०००० दुसरीका १३२००० तीसरीका १२८००० चोथीका १२०००० पांचमीका ११८००० छठीका ११६००० सातमीका १०८००० योजनका है

(६) करंडद्वार-पेहली नरकमें ३ करंड है. (१) खरकरंड शोला जातका रत्नमय १६००० जोजनका (२) आयुलबहूल पाणीमय ८०००० जोजनका (३) पंकबहूल कर्दममें ८४००० जोजनका सर्व १८००० जोजनका पेहली नरकका पण्ड है शेष ६ नरकमें करंड नहीं है.

(७) पात्थडद्वार (८) अन्तराद्वार पेहली नरक १८०००० जोजनकी है जिस्में एक हजार जोजन उपर एक हजार जोजन निचे छेडके मध्यमें १७८००० जो० है, जिस्में १३ पात्थडा ओर १२ अन्तरा है अन्तरोंमें २ उपरका अन्तरावर्जके शेष १० अन्तरोंमें दश जातका भुवनपतिदेव निवास करते है शेष नरकमें भुवनपतिदेव नहीं है. पात्थडा है वह प्रत्यक पात्थड ३००० जोजनका है जिस्में उपर ओर निचे हजार हजार जोजन छोडके मध्यमें १००० जोजन पण्ड है जिस्में नारकीके उत्पन्न होने योगकुंभीयो है इसी माफीक छठी नरक तक अपने अपने पृथ्वीपण्डसे १००० जो० उपर १००० जो० निचे छेडके शेष मध्यमें दुसरी नरकमें ११ पात्थडा १० अन्तर. तीसरीमें ९ पात्थडा ८ अन्तरा, चोथीमें ७ पात्थड ६ अन्तर, पांचमिमें ५ पात्थडा ४ अन्तरा, छठीमें ३ पात्थडा २ अन्तरा, सातमी नरक १०८००० जिस्में ५२५०० उपर ५२५०० जो० निचे छोडके मध्यमें ३००० जोजनका एक पात्थडा है परन्तु अन्तरा नहीं है.

(९) पात्थडेपात्थडे अन्तरद्वार-पेहली नरकके पात्थडे पात्थडै ११५८३३ दुसीरा ९७०० तीसरी १२७५० चोथी १६१६६३ पांचमी २५२५० छट्ठी ५२५०० सातमी नरकमें पात्थडा एक ही है

(१०) घणोदद्धिद्वार प्रत्यक नरकपण्डके निचे २०००० जो० कि घणोदद्धि पकाबन्धा हूया पाणी है

(११) घणवायु-प्रत्यक नरकके घणोदद्धिके निचे असख्यात २ जोजनकि घनवायु है पकाबन्धा हूवा वायु है.

(१२) तृणवायु-प्रत्यक नरकके घणवायुके निचे असख्यात २ जोजनके तृणवायु पातला वायु है.

(१३) आकाश-प्रत्यक नरकके तृणवायुके निचे असंख्यात २ जो० का आकाश है अर्थात् आकाशके आधार तृणवायु है तृणवायुके आधार घनवायु है घनवायुके आधार घनोदद्धि है घनोदद्धिके आधारमे पृथ्वीपण्ट है.

(१४) नरक नरकके अन्तरा-एकेक नरकके विचमें असख्यात असख्यात जोजनका अन्तरे है.

(१५) नरकावासाद्वार-नरकावासा दो प्रकारके है (१) असंख्यात जोजनके विस्तारवाला जिस्में असख्यात नेरीया है (२) सख्यात जो० जिस्में सख्यात नेरीया है सर्व नरकावासोंका पांच विभाग कर दीया जाय जिस्में च्यार विभाग तो

असंख्याता जोजनका है और एक विभाग संख्याते जोजनवाले हैं नरकावास पेहली नरकमें ३० लक्ष, दुसरीमें २५ लक्ष तीसरीमें १५ लक्ष, चोथीमें १० लक्ष, पांचमीमें ३ लक्ष, छठीमें पांचकम लक्ष, सातमी नरकमें ५ महानरकावास हैं संख्याता जोजनका नरकावासाका परिमाण जेसे कोइ शीघ्रगतिका देवता तीन चीमटी बजावे इतनामें जम्बुद्वीपके २१ प्रदिक्षणा दे आवे इसी शीघ्रगतिसे चाले वह देवता जघन्य १-२-३ दिन उत्क० ६ मास तक चले तो कितनेक संख्यात जोजनके नरकावासोंका अन्त आवे और कितनेकके अन्तभी नहीं आवे.

(१६) अलोक अन्तरा० (१७) वलीयाद्वार-अलोक और नारकीके अन्तर हैं जिस्में तीन तीन प्रकारका गोल चुडी माफीक वलीया हैं वह यंत्रसे देखो.

नरक	रत्न०	शा०	वा०	पं०	धूम०	तम०	तम०
अलोकअन्तरो	१२जो.	१२ २/३	१३ १/३	१४	१४ २/३	१५ १/३	१६
वलीयासंख्या	३	३	३	३	३	३	३
घणोदाद्धि	६	६ १/३	६ २/३	७	७ १/३	७ २/३	८
घणवायु	४॥	४॥।	५	५।	५॥	५॥।	६
तुणवायु	१॥	१॥ १/१२	१॥ २/१२	१॥।	१॥। १/१२	१॥। २/१२	२

(१८) क्षेत्रवेदनाद्वार-प्रत्यक नरकमें क्षेत्रवेदना दश दश प्रकारकी है अनन्त क्षुधा, पीपासा, शीत, उष्ण, रोग, शोक, ज्वर, कुटागपणे, कर्कशपणे, अनन्त पराधिनपणे यह वेदना हमेसो होती है पेहली नरकमे दुसरी नरकमें अनन्त गुणी वेदना है एवं यावत् छठीसे सातमी नरकमें अनन्त गुणी वेदना है अथवा नरकोंके नामानुस्वारभी नरकमें वेदना है जेसे रत्नप्रभामें खरकंड रत्नोंका है तथा वह वेदना बहुत है ओर शार्करप्रभामें जमीनके स्पर्श तरवारकी धारासे अनन्त गुण तीक्षण है वालुकाप्रभाकी रेती अग्निके माफीक जल रही है, पंकप्रभा रौद्रमेद चरबीका किचमचा हुवा है धूमप्रभामें शोमलनिनश्राकमे अनन्त गुण खारो धूम है, तमप्रभामें अन्धार, तमतमाप्रभामें घोरोनघोर अन्धार है इत्यादि अनन्त वेदना नरकमें है.

(१९) देवकृतवेदना-पेहली, दुसरी, तीसरी नरकमें परमाधामी देवता पूर्वभव कृत पापोंको उदेश २ के मरते है चोथी पांचमी नरकमें अगर वैमानि देवोंका वैर हो तो वैर लेनेको जाके वेदना करते है छठी सातमी नारकीमें नारकी आपसमे ही श्वान माफीक मरते कटते है देवकृत वेदनावाला नरकसे आपसमें वेदनावाला नारकी असंख्यातगुणा है

(२०) वैक्रयद्वार—नारकी जो वैक्रय वनता है वह

बीलकुल खराब शस्त्रादि बनाते है या वज्रमुख कीडा बनाके दुसरे नारकीके शरीरमें प्रवेश होता है फीर बडा रुप बनाके शरीरके खण्ड खण्ड कर देते है.

(२१) अल्पाबहुत्वद्वार.

(१) स्तोक सातमी नरकके नैरिया.

(२) छठी नरकके नैरिया असं० गुणा.

(३) पांचमी नरकके नैरिया असं० गुणा

(४) चोथी नरकके नैरिया असं० गुणा

(५) तीजी नरकके नैरिया असं० गुणा

(६) दुसरी नरकके नैरिया असं० गुणा

(७) पेहली नरकके नैरिया असं० गुणा

इन्हीके सिवाय ओर भी द्वार है परन्तु वह लघु दंडकादि थोकडोंमें आजानेके सबबसे यह नहीं लीखा है. इति.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्.



थोकडा नम्बर ३

बहुत सूत्रोसे संग्रह.

(भुवनपतियोंके २१ द्वार)

(१) नामद्वार	(८) चन्हद्वार	(१५) देवीद्वार
(२) वासाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) परीपदा०
(३) राजधानी	(१०) सामानीक०	(१७) परिचारणा
(४) सभाद्वार	(११) लोकपाल०	(१८) वैक्रयद्वार
(५) भुवनसख्या	(१२) तावतेसका	(१९) अवधिद्वार
(६) वर्णद्वार	(१३) आत्मरक्षक	(२०) सिद्धद्वार
(७) वस्त्रद्वार	(१४) अनकाद्वार	(२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार दिशाकुमार उदद्धिकूमार वायुकुमार स्तत्कुमार

(२) वासाद्वार—भुवनपति देवोका निवास कहा पर है ? यह रत्नप्रभानरक १८०००० जोजनकी है जिस्में १००० जो० उपर १००० जो० नीचे छोडके मध्यमें १७८००० जो० जिस्में १३ पात्थडा और १२ अन्तरा है उन्होंसे ऊपरका दो अन्तरा छोडके १० अन्तरोमें दश जातके भुवनपतियोंकी

राजधानी तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रमें हे यथा चमरेन्द्रकी राजधानी इस जम्बुद्वीपके मेरुपर्वतसे दक्षिणकी तर्फ असंख्यात द्वीप समुद्र चला जाने पर एक अरुणवर द्वीप आता उन्हीमें ४२००० जोजन जाने पर रूचक उत्पात पर्वत आवे वह पर्वत १७२१ जो० उंचा है ४३० जो० १ गाउ० धरतीमें है १०२२ मूल विस्तार ७२३ मध्यमें ४२४ उपर विस्तारवालो है। वन-खण्ड वेदीकासे सुशोभीत है उन्ही पर्वतके उपर एक मनोहर देवप्रासाद है उन्हीके अन्दर एक देव योग्य शय्या हे देवता मृत्युलोकमें आने जानेके समय वहांपर ठेरते है। उन्ही पर्वतसे ६३५५५५०००० जोजन आगे चले जावे वहांपर एक दादरा आता है उन्हीके अन्दर ४०००० जोजन जावे वहांपर चमरे-न्द्रकि चमरचंचा राजधानी आती है वह राजधानी १ लक्ष जोजन विस्तारवाली है ३१६२२७। ३। १२८। १३ साधिक परद्धि वह कोट १५० जो० उंचा है मूलमें ५० जो० मध्यमें २५ जो० उपरसे १२॥ जो० उन्ही कोट उपर कोशीषा है एक गाउ विषम आदा गाउका उंचा है अच्छा शोभनिक है एकेक दिशीमें पांचसो पांचसो दरवाजा है वह २५० जो० उंचा १२५ पहूला सर्व रत्नमय है राजधानीके मध्यभागमें १६०००० जो० विस्तारवाला एक गोल चौतरा है उन्हीके उपर ३४१ प्रासाद है मध्य प्रासाद २५० जो० का उंचा १२५ पहूला है अनेक स्थंभ पुतली मौक्तफलकी मालासे

शोभनीक है इत्यादि और भी ९ निकायदेवोंकी राजधानी दक्षिणकी तर्फ है इसी माफीक उत्तरदिशामें भी समझना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

(४) सभाद्वार–एकेक इन्द्रके पांच पाच सभा है (१) उत्पात सभा (२) अभिशेप सभा (३) अलकार सभा (४) व्यवाय सभा (५) सौधर्मी सभा.

(१) उत्पात सभा–देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.

(२) अभिशेप सभामें इन्द्रका राजअभिशेप कीया जाता है

(३) अलकार सभा–देवतोंके शृगार करने योग वस्त्र-भूषण रेहते है

(४) व्यवाय सभा–देवतोंके योग धर्मशास्त्रका पुस्तक रहेते है.

(५) सौधर्मी सभा–जहा जिनमन्दिर चैत्यस्थम शास्त्रकोष आदि है और सुधर्म सभामें देवतोंके इन्साफ कीया जाता है इत्यादि.

(५) भुवनसख्याद्वार-भुवनपतियोंके भुवन७७२००००० है जिस्में ४०६००००० भुवन दक्षिणदिशामें है ३६६००००० उत्तरकी तर्फ है. देखो यत्रमे—

१० भुवनपति.	दक्षिणादिशा.		उत्तरादिशा.		कुलभुवन.	
असुरकु०	३४	लक्ष	३०	लक्ष	६४	लक्ष
नागकु०	४४	,,	४०	,,	८४	,,
सुवर्णकु०	३८	,,	३४	,,	७२	,,
विद्युत्कु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
अग्निकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
द्विपकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
दिशाकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
उदद्धिकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
पवनकु०	५०	,,	४६	,,	९६	,,
स्तनत्कु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,

(६) वर्ण, (७) वस्त्र, (८) चन्ह, (९) इन्द्र

दश भु०	वर्ण द्वार	वस्त्र द्वार	चन्ह द्वार	दक्षणेन्द्र	उत्तरेन्द्र
(१) अ०	कालो	राता	चुडामणि	चमरेन्द्र	वलेन्द्र
(२) ना०	धोवला	निला	नागफण	धरणेन्द्र	भूताइन्द्र
(३) सु०	सुवर्ण	धोला	गुरुड	वेणुदेव ,,	वेणुदाली ,,
(४) वि०	राता	निला	वज्र	हरिकत ,,	हरिसिंह ,,
(५) अ०	राता	निला	कलश	अग्निसिंह,,	अग्नि-मानव,,
(६) द्वि०	राता	निला	सिंह	पूर्ण ,,	विशेष ,,
(७) दि०	पङ्कर	निला	अश्व	जलकत ,,	जलप्रभ ,,
(८) उ०	सुवर्ण	सुपेत	गज	अमृतगति,,	अमृतवहान,,
(९) प०	श्याम	पाच वर्ण	मगर	वेलव ,,	प्रभजन ,,
(१०) स्त०	सुवर्ण	सुपेत	वर्द्धमान	घोष ,,	महाघोष ,,

(१०) सामानीकदेव--इन्द्रके उमराव माफीक देव होते है चमरेन्द्रके ६४००० देव, वलेन्द्रके ६०००० शेप १८ इन्द्रोंके छे छे हजार देव.

(११) लोकपाल-इन्द्रके कोतवाल माफीक देव-सब इन्द्रोंके च्यार च्यार लोकपाल होते है.

(१२) तावतेसीका-राजगुरु माफीक शान्तिकारक देव-सर्व इन्द्रोंके तेतीस तेतीस देव तावतिसका होते है.

(१३) आत्मरक्षक देव-इन्द्रोंके आत्माकी रक्षा करनेवाले देव-चमरेन्द्रके २५६००० वलेन्द्रके २४०००० शेप इन्द्रोंके २४०००=२४००० देव.

(१४) अनिका-हस्ति, अश्व, रथ, महेप, पेदल, गंधर्व नृत्यकारक एवं ७ अनिका सर्व इन्द्रोंके होती है प्रत्यक अनिकके देवसंख्या चमरेन्द्रके ८१२८००० देव, वलेन्द्रके ७६२०००० शेप १८ इन्द्रोंके ३५५६००० देव होते है.

(१५) देवीद्वार-चमरेन्द्रके पांच अग्रमहेपी एकेकके ८००० का परिवार एवं ४०००० एकेक देवी आठ आठ हजार वैक्रय करे ३२०००००००० एवं वलेन्द्रके शेप १८ इन्द्रोंके छे छे देवी एकेक के छे छे हजारका परिवार एवं ३६००० एकेक देवी छे छे हजाररूप वैक्रय २१६००००००

(१६) परिषदा—परिषदा तीन प्रकारकी है (१) अभिंतर—खाम शला विचार करने योग वडेआदरसे बोलानेपर आवे भेजनसे जावे, (२) मध्यम—सामान्य विचार करने योग बोलानेपर आवे परन्तु विगर भेज जावे, (३) बाह्य—उन्होंको हूकम दिया जाय की अमूक कार्य करो विगर बुलायों आना जाना अर्थात् टैमपर आ के हाजर होना ही पडता है.

परिषदा	चमरेन्द्र	बलेन्द्र	द्रक्षण नवेन्द्र	उत्तर नवेन्द्र
देव अभिंतर	२४०००	२००००	६००००	५००००
,, स्थिति	२॥ पल्यों	३॥ पल्यों	१ पल्यों	०॥ साधि
,, मध्यम	२८००० -	२४०००	७००००	६००००
,, स्थिति	२ पल्यों	३ पल्यों	०॥ साधि	०॥ प०
,, बाह्य	३२०००	२८०००	८००००	७००००
,, स्थिति	१॥ पल्यों	२॥ पल्यों	०॥ प०	०॥ प० न्यू
देवी अभिंतर	३५०	४५०	१७५	२२५
,, स्थिति	१॥ पल्यों	२॥ प०	०॥ प० न्यू	०॥ प०
,, मध्यम	३००	४००	१५०	२००
,, स्थिति	१ प०	२ प०	०। प० सा०	०॥ न्यून
,, बाह्य	२५०	३५०	१२५	१७५
,, स्थिति	०॥ प०	१॥ प०	०। प०	०। साधिक

(१७) परिचारण—भुवनपति देवोंके परिचारणा (मैथुन) पांच प्रकारकी है यथा मनपरिचारणा रूप० शब्द. स्पर्श० कायपचारण—मनुष्यकी माफीक देवांगनाके साथ भोगविलाश करे इति. देखो परिचारणापद.

(१८) वैक्रयद्वार—चमरेन्द्र वैक्रयकर भुवनपति देव-देवीसे सम्पुरण जम्बुद्वीप भरदे असंख्यातेकी शक्ति है एवं समानिक लोकपाल तावतीसका और देवी परन्तु लोकपाल देवीकी शक्ति संख्यातेद्विपकी है एवं बलेन्द्र परन्तु एक जम्बु-द्विप साधिक समझना शेष १८ इन्द्र एक जम्बुद्विप भरे और सबके संख्यातेद्विपकी शक्ति है देवतोंके वैक्रयका काल उ० १५ दिनका है.

(१९) अवधिद्वार—असुरकुमारके देवता अवधिज्ञानसे ज० २५ जोजन उ० उर्ध्व सौधर्म देवलोक अधो० तीसरी नरक तीर्य० असंख्याते द्वीप समुद्र शेष ९ देव उ० उर्ध्व जोतीषीयोंके उपरका तला अधो० पेहला नरक तीर्य० संख्याताद्विप समुद्र देखे.

(२०) सिद्धद्वार—भुवनपतियोंसे निकल मनुष्य हो के एक समयमे १० जीवमोक्ष जावे देवीसे निकलके एक समय ५ जीव मोक्ष जावे.

(२१) उत्पन्न—सर्व प्राण भूत जीव सत्व भुवनपति देवों देवी पणे पूर्व अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवे अर्थात् देव होनेपर भी जीवकी कुच्छ भी गरज सरे नही वास्ते ज्ञानो-द्यमकर आत्माको अमर बनानी चाहिये इति

सेवंभते सेवंभंते—तमेवसच्चम्.



थोकडा नं. ४



बहूत सूत्रसे संग्रह



(व्यतर देवोंके द्वार २१)

(१) नामद्वार	(८) चन्हद्वार	(१५) वैक्रयद्वार
(२) वासाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) अवधिद्वार
(३) नगरद्वार	(१०) सामानीक देव	(१७) परिचारणा
(४) राजधानी	(११) आत्मरचक	(१८) सुखद्वार
(५) सभाद्वार	(१२) परिषदाद्वार	(१९) सिद्धद्वार

(६) वर्णद्वार (१३) देवीद्वार (२०) भवद्वार
(७) वस्त्रद्वार (१४) आनिकाद्वार (२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किंनर, किंपुरष, मोहग, गभर्व, आणपुन्य, पाणपुन्ये इशीवाइ, भुइवाइ, कंडे, महाकंडे, कोहंड, पयंगदेवा, इति.

(२) वासाद्वार—व्यंतर देव काहापर रेहते है ? यह रत्नप्रभा नरक जो १८०००० जोजनकी जाडपणावाली है जिस्मे एकहजार उपर ओर एकहजार निच छोडनेसे मध्यमे १७८००० जोजन रहेती है इस्मे उपर जो एकहजार जोजनका पण्ड था उन्हीकों एकसो जोजन उपर और एकसो जोजन निचे छेड देनासे मध्य ८०० जोजनका पण्ड है इन्हीके अन्दर वांणमित्र आठ जातका देवता निवास करते है यथा पिशाच यावत् गंधर्व और जो उपर १०० जोजनका पण्ड था जिस्मे १० जोजन उपर और दश जोजन निचे छेडकर मध्यमे ८० जोजनका पण्ड है जिस्मे आठ जताका व्यंतर देव निवास करते है.

(३) नगरद्वार—दुसरेद्वारमें बताये हूवे स्थानमे तीरच्छा लोकमे वांणमित्र और व्यंतर देवतोंके असंख्याते नगर है वह

नगर असख्याते और सख्याते जोजनके-विस्तारवाले है सर्व रत्नमय है परिमाण भुवनपतियों माफीक.

(४) राजधानीद्वार—वाणमित्र और व्यतर देवोंकी राजधानीयों तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रोंमें है जेसे भुवनपतियोंके राजधानीका वर्णन कीया गया था उसी माफीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः १२ हजार जोजन के विस्तारवाली है सर्व रत्नमय है.

(५) सभाद्वार—एकेक इन्द्रके पांचपाच सभा है यथा (१) उत्पातसभा (२) अभिशेषसभा (३) अलकारसभा (४) व्यवायसभा (५) सौधर्मसभा विस्तारभुवनपतिसे देखो.

(६) वर्णद्वार—देवतोंका शरीरका वर्ण-'यक्ष पिशाच मोहरग गधर्व इन्ही च्यारोंका वर्ण श्याम है किंनरदेवोंको निलो वर्ण, राक्षस और किंपुरषको वर्ण धवलों भूतदेवोंको वर्ण कालो इसी माफीक व्यतरदेवोंके समजना

(७) वस्त्रद्वार—पिशाच राक्षस भूतके निलावस्त्र यक्ष किंनर किंपुरषके पीलावस्त्र मोहरग गधर्वके श्यामवस्त्र

(८) चन्हद्वार, (९) इन्द्रद्वार.

देव.	दक्षिण इन्द्र.	उत्तर इन्द्र.	ध्वजपरचंन्ह.
पिशाचके दो इन्द्र	कालेन्द्र	महाकालेन्द्र	कदंबवृक्ष
भूतके दो इन्द्र	सुरूपेन्द्र	प्रतिरूपेन्द्र	सुलक्षवृक्ष
यक्ष ,,	पूर्णेन्द्र	मणिभद्र ,,	वडवृक्ष
राक्षस ,,	भिम	महाभिम	खटंगउपकर
किन्नर ,,	किन्नर	किंपुरुष	आशोकवृक्ष
किंपुरुष ,,	सापुरुष	महापुरुष	चम्पकवृक्ष
मोहरग ,,	अतिकाय	महाकाय	नागवृक्ष
गन्धर्व ,,	गतिरति	गतियश	तुंबरूवृक्ष
आणपुन्ये,,	सनिहिंइन्द्र	सामानीइन्द्र	कदंबवृक्ष
पाणपुन्ये ,,	धाइइन्द्र	विधाइइन्द्र	सुलसवृक्ष
ऋषिवादी,,	ऋषिइन्द्र	ऋषिपाल०	वडवृक्ष
भूतवादी ,,	इश्वरइन्द्र	महेश्वरेन्द्र	खटंग
कंडे ,,	सुविच्छ	विशाल	आशोकवृक्ष
महाकंड ,,	हास्येन्द्र	हास्यरति०	चम्पकवृक्ष
पयंग ,,	श्वेतेन्द्र	महाश्वेतेन्द्र	नागवृक्ष
कोहडदेवा,,	पतंगेन्द्र	पतंगपतिइन्द्र	तुंबरूवृक्ष

(१०) सामानीक द्वार—सर्व इन्द्रोंके च्यार च्यार हजार देव सामानीक है.

(११) आत्मरक्षक—सर्व इन्द्रोंके सोले सोले हजार देव आत्मरक्षक है.

(१२) परिषदा द्वार—कार्य भुवनपतियोंके माफीक.

परिषदा.	देव परिषदा.	देवी परि०
अभिंतर	८०००	१००
स्थिति	०॥ पल्यो०	०। साधिक
मध्यम	१००००	१००
स्थिति	०॥ प० न्यून	०। प०
बाह्य	१२०००	१००
स्थिति	०। साधिक	०। न्यून

(१३) देवी—प्रत्यक इन्द्रके च्यार च्यार देवी है एकेक देवीके हजार हजार देवीका परिवार है एकेक देवी हजार हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है.

(१४) अनिका द्वार—गजतुरगादि सात सात अनिका है प्रत्यक अनिकाके ५०८००० देवता है सर्व इन्द्रोंके समझना.

(१५) वैक्रयद्वार—इन्द्र सामानीक और देवी एक

जम्बुद्विप व्यंतर देव -देवीका रूप वैक्रय वना शक्ते है संख्यातेकी शक्ति है.

(१६) अवधिद्वार—वाणमित्र देव अवधिज्ञानसे ज० २५ जोजन उ० उर्ध्व जोतीपीयोके उपरका तला अधो० पेहली नरक तीर्य० संख्यातेद्विप समुद्र.

(१७) परिचारणाद्वार—सर्व देवोंके पाच प्रकारकि परिचारणा है यथा मन, रूप, शब्द, स्पर्श, और कायपरिचारणा अर्थात् मनुष्यकि माफीक भोगविलाश करते है.

(१८) सुखद्वार—यहा मनुष्यलोकमे कोइ मनुष्य युवक अवस्थामे मनमोहन युवक सुन्दर जोवन रूप लावण्यवान्से सादि कर विदेशमें द्रव्यार्थी गया था वहसे मनोइच्छत द्रव्य लाया दोनोंकी परिपक्व जोवन अवस्थामें अवादित सुख भोगवे उन्होंसे व्यंतर देवोंका सुख अनन्तगुण है.

(१९) सिद्धद्वार—वाणमित्रोंसे निकलके मनुष्यभवकर एक समयमें १० और देवीसें निकलके ५ जीव एक समय मोक्ष जाते है.

(२०) भवद्वार—वाणमित्र देव अगर संसारमें भव करे तो १-२-३ उत्कष्ट अनन्त भव कर शक्ते है.

(२१) उत्पन्नद्वार—सर्व प्राण भूत जीव सत्व वाणामित्र देवतों पणे एकवार नही किन्तु अनन्ती अनन्तीवार उत्पन्न

हुवे है इसीसे चैतन्यादि चेतनता प्रगट नहीं होती है यह तो पौद्गलीक गुण है मगर आत्मीक गुण श्री जिनेन्द्र देवोंके धर्मको अंगीकार करनेसे प्राप्त होता है इति.

सेवंभंते सेवंभंते—तमेवसच्चम्

थोकडा नं. ५

बहुत सूत्रोंसे संग्रह करके.

तक सर्व जोतीषी स्थिर है इन्हीका परिवार विगरह अन्दरके जोतीषीयों माफीक समझना.

अढाइद्वीपके अन्दर जो जोतीषी है वह चर-भ्रमण करनेवाले है और भ्रमण करनेमें ही कुशी मानते है उन्हीका विस्तारके लिये जोतीषी चक्रका थोकडा चन्द्रप्रज्ञाप्ती और सूर्य-प्रज्ञाप्तीसें लिखेंगे परन्तु सामान्यतासें यहांपर ३१ द्वारसें जोती-षीयोंका थोकडा लिखा जाता है कि साधारण मनुष्याभि इन्हीका लाभ उठा सके.

(१) नामद्वार	(२) गतिद्वार	(२२) देवीद्वार
(२) वासाद्वार	(१३) तापक्षेत्रद्वार	(२३) गतिद्वार
(३) राजधानी	(१४) अन्तर ,,	(२४) ऋद्धिद्वार
(४) सभा	(१५) संख्या ,,	(२५) वैक्रय ,,
(५) वर्णाद्वार	(१६) परिवार ,,	(२६) अवधि ,,
(६) वस्त्रद्वार	(१७) इन्द्र ,,	(२७) परिचारणाद्वार
(७) चन्हद्वार	(१८) सामानीकद्वार	(२८) सिद्ध ,,
(८) वैमान पहूल	(१९) आत्मरक्षक,,	(२९) भव ,,
(९) वैमान जाडपणा	(२०) परिषदा ,,	(३०) अल्पाबहूत ,,
(१०) वैमान वहान	(२१) अनिका ,,	(३१) उत्पन्न ,,
(११) मांडलाद्वार		

(१) नामद्वार-चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, और तारा.

(२) वासाद्वार–जोतीषी देवोंका तीरच्छालोकमें असस्याता वैमान है वह वैमान सभूमिसे ७६० जोजन उर्ध्व जावे तब तारोंका वैमान आवे उन्ही तारोंके वैमानसे १० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आवे अर्थात् सभूमिसे ८०० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आता है सभूमिसे ८८० जोजन उर्ध्व जावे अर्थात् सूर्य वैमानसे ८० जोजन उर्ध्व जावे तब चन्द्र वैमान आवे चन्द्रवैमानसे ४ जोजन और सभूमिसे ८८४ जोजन उर्ध्व जावे तब नक्षत्रोंका वैमान आवे वहासे ४ जो० और सभूमिसे ८८८ जो० उर्ध्व जावे तब बुध नामा ग्रहका वैमान आवे वहासे ३ जो० सभूमिसे ८९१ जो शुक्र ग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जोजन और सभूमिसे ८९४ जो० बृहस्पतिग्रहका वैमान आवे, वहसे ३ जो० और सभूमिसे ८९७ मगलग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जोजन और सभूमिसे ९०० जोजन उर्ध्व जावे तब शनिश्चर ग्रहका वैमान आवे अर्थात् ७९० जोजनसे ९०० जोजन निचमें ११० जोजनका जाडपणे और ४५ लक्ष जोजनका विस्तारमें चर जोतीषी है.

जोतीषी	तारा	सूर्य	चन्द्र	नक्षत्र	बुध	शुक्र	बृह	मग	शनि
सभूमिसे	७९०	८००	८८०	८८४	८८८	८९१	८९४	८९७	९००

जिस्मे तारोंके वैमान ११० जोजनमें सर्व स्थानपर है।

(३) राजधानी—जोतीषी देवों कि राजधानीयां तीरच्छलोकमें असंख्याती है जेसे इस जम्बुद्विपके जोतीषी देव है उन्हों कि राजधानी असंख्यात द्विपसमुद्र जानेपर दुसरा जम्बुद्विप आता है उन्ही के अन्दर २५ हजार जोजनके विस्तारवाली है वडीही मनोहार सर्व रत्नमय है विस्तारभुवनपतियोंके माफीक है और जोतीषी देवोंके द्विपा भी असंख्याते है परन्तु वह द्विपा सर्व द्विपसमुद्रोंके जोतीषीयोंका द्विपासमुद्रमें है जेसे जम्बुद्विपके जोतीषीयोंके द्विपालवण समुद्रमें है और लवण समुद्रके जोतीषीयोंका द्विपा भी लवणसमुद्रमें है तथा धात कि खण्डद्विपके जोतीषीयोंका द्विपा कालोदद्धि समुद्रमें है इसी माफिक सर्व स्थानपर समजना.

(४) सभाद्वार—जोतीषिदेवोंका इन्द्रोंके पांच पांच सभावों है (१) उत्पातसभा (२) अभिशेषसभा (३) अलंकारसभा (४) व्यवशायसभा (५) सौधर्मसभा यह सभा राजधानीयोंके अन्दर है वर्णन देखो भुवनपतियोंकों.

(५) वर्णद्वार—ताराके शरीर पांचों वर्णका है शेष तपा हूवा सुवर्ण जेसा है.

(६) वस्त्रद्वार—अच्छा सुन्दर कोमल सर्व वर्णका वस्त्र जोतीषीयोंके है.

(७) चन्हद्वार—चन्द्रके मुकटपर चन्द्रमांडलका चन्ह

है सूर्यके मुकटपर सूर्यमाडलका चन्ह है एव नक्षत्र ग्रह तार उन्ही चन्हद्वारा वह देखता पेच्छाना जाता है.

(८) वैमानका पहूलपणा (९) वैमानका जाडपणा — एक जोजनका ६१ भाग किजे उन्हीमें ५६ भाग चन्द्रका वैमान पहूला है और २८ भाग जाडा है सूर्यका वैमान ४८ भागका पहूला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहूला एक गाउका जाडा है। नक्षत्रका वैमान एक गाउका पहूला आदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका पहूला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फकट रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान—यद्यपि जोतीषीयोंके वैमान आकाशके आधारमें रहेते है अर्थात् वैमानके पौद्गलोंके अगुरुलघु पर्याय है वह आकाशके आधारसें रहे शक्ते है। तद्यपि देव अपने मालकका बहूमानके लिये उन्ही वैमानोंको हमेशोंके लिये उठाये फीरते है कारन अढाइद्वीपके अन्दरके देवोंकि स्वभाव-प्रकृति गमन करनेकि है। चन्द्र सूर्यके वैमानकों शोला शोला हजार देव उठाते हैं जिस्में च्यार हजार पूर्व दिशाकी तर्फ मुह कीये हूवे सिंहके रूप, च्यार हजार दक्षिण दिशा मुह कीये हूवे हस्तिके रूप, च्यार हजार पश्चिम दिशामें मुह कीये हूवे वृषभके रूप, च्यार हजार उत्तर दिशामें मुह कीये हूवे अश्वके रूप एव ग्रहवैमानकों ८००० देव उठाते हैं नक्षत्रके वैमानकों

४००० देव उठाते हैं ताराके वैमानकों २००० देव उठाते है पूर्वादि दिशा पूर्ववत् समझना.

(११) मांडलाद्वार-जोतीषीदेव दक्षिणायनसे उत्तरायन गमनागमन करते है उसे मांडला केहते है अर्थात् चलनेकि सडककों मांडला केहते हैं वह मांडलोंके क्षेत्र ५१० जोजन है जिस्में ३३० जोजन लवण समुद्रमें और १८० जोजन जंबुद्वीपमें है कुल ५१० जोजन क्षेत्रमें जोतीषी देवोंका मांडला है चन्द्रका १५ मांडला है जिस्में १० मांडला लवणसमुद्रमें और ५ मांडला जंबुद्विपमें है एवं सूर्यके १८४ मांडला है जिस्में ११९ लवणसमुद्रमें और ६५ मांडला जंबुद्विपमें है ग्रहका ८ मांडला है जिस्में ६ मांडला लवणसमुद्रमें २ जंबुद्विपमें है जो जोतीषीयोंका जंबुद्विपमें मांडला है वह निषेड और निलवेत पर्वतके उपर है। चन्द्रमांडल मांडल अन्तर ३५ जोजन उपर ३०/६१। ४/७ ओर सूर्य मांडल मांडल अन्तर दो जोजनका है इति.

(१२) गतिद्वार-सूर्य कर्के शंक्रात अर्थात् आसाढ श्रुक्ल पूर्णमाके रोज एक महूर्तमें ५२५१-२९/६१ इतनों क्षेत्र चाले तथा मक्रे शंक्रात अर्थात् पोष श्रुक्ल पूर्णमाने एक महूर्तमें ५३०५ १/६१ इतने क्षेत्र चाल चले। चन्द्रमा कर्के शंक्रातमें एक महूतमें ५०७३ ७४४/१३७२५ मक्रे शंक्रातने ५१२५-६९९०/१३७२५.

(१३) तापक्षेत्र-कर्के शंक्रातमें तापक्षेत्र ९७५२६। २९/६१

उगते सूर्य ४७२६३ २१/६० जोजन दुरोसें द्रष्टिगोचर होता है मक्के शकात तापक्षेत्र ६३६६३ १५/६० । उगतो सूर्य ३१८३१ ३०/६० द्रष्टिगोचर होते है इति.

(१४) अन्तराद्वार-अन्तरा दो मकारसे होता है व्याघात-किसी पदार्थकि विचमें ओट आवे निर्व्याघात कीसी प्रकारकी बाद न होय जिस्मे व्याघातापेक्षा जघन्य २६६ जोजनका अन्तरा है क्योंकी निषेड निलवन्तपर्वतके उपर कूटशिखरपर २५० जोजनका है उन्हीसे चौतर्फ आठ आठ जोजन जोतीषीदेव दुरा चाल चालते है वास्ते २६६ जो० उत्कृष्ट १२२४२ जो० क्योंकि १०००० जो० मेरूपर्वत है उन्हीसे चौतर्फ ११२१ जो० दुरा जोतीषी चाल चलते है १२२४२ जो० अन्तर है, अलोक ओर जोतीषीदेवोंके अन्तर १११' जो०, मडलापेक्षा अन्तरा मेरूपर्वतसे ४४८८० जो० अन्दरका मडलका अन्तर है, ४५३३० जो० बाहारका मडलके अन्तर है । चन्द्र चन्द्रके मडलके ३५ । ३०/६१ ४/७ अन्तर है सूर्य सूर्यके मडलके दो जोजनका अन्तर है। निर्व्याघातापेक्ष जघन्य ५०० धनुष्यका अन्तर उत्कृष्ट दो गाउका अन्तर है इति.

(१५) सख्याद्वार-जम्बुद्विपमें दो चन्द्र दो सूर्य, लवणसमुद्रमें च्यार चन्द्र च्यार सूर्य, धातकिखण्डद्विपमें १२ चन्द्र १२ सूर्य, कालोदद्धि समुद्रमें ४२ चन्द्र ४२ सूर्य, पुष्का-

द्वीद्विपमें ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, एवं मनुष्यक्षेत्रमें १३२ चन्द्र १३२ सूर्य। आगे चन्द्र सूर्यकि संख्या अम्नाय-जिस द्विप या समुद्रका प्रश्न करे उन्हीके पीच्छेका द्विपमें जितना चन्द्र हो उन्हीकों तीनगुणा कर शेष पिच्छलेको सेमल करदेना, जेसे घातकीखण्डद्विपमें १२ चन्द्र है उन्हीकों तीनगुणा करनासे ३६ और पिच्छले जंबुद्विपका २ लवणसमुद्रका ४ एवं ६ को ३६ के साथमें मीलादेनासे ४२ चन्द्र कालोदद्धिसमुद्रमें हूवे ४२ को तीन गुणकर १२६ पिच्छला २-४-१२ एवं १८ मीलानेसे १४४ चन्द्र पुष्करद्विपमें हूवा जिस्में आदा मनुष्य-लोकमें होनासे ७२ गीना गया है इसी माफीक सर्व स्थानपर भावना रखने इति.

(१६) परिवारद्वार-एक चन्द्र या सूर्यके २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६९७५ क्रोडाक्रोड तारोंका परिवार है शंका-तारोंकी संख्याका क्षेत्रमान करनेसे इस लक्ष जोजनका क्षेत्रमें इतना तारा समावेस हो नहीं शक्ता है ? इसके लिये पूर्वाचार्योंने क्रोडाक्रोडीको एक संज्ञारूपमे मानी मालम होते है या किसी आचार्योंने तारोंका वैमानको उत्सेदांगुलसे भी माना है तत्त्व केवलीगम्य। इसी माफीक सर्व चन्द्र सर्व सूर्योंके भि समझना। नक्षत्रेग्रहेंदवाका नाम वडेजोतीषी चक्रसे देखों.

(१७) इन्द्रद्वार-असंख्याता चंद्र सूर्य है वह सर्व इन्द्र है परन्तु क्षेत्र कि अपेक्षा एक चन्द्र इन्द्र दुसरा सूर्य इन्द्र है.

(१८) सामानीकद्वार–एकेक इन्द्र के च्यार च्यार हजार सामानीक देव है.

(१६) आत्मरत्तक–एकेक इन्द्र के शोला शोला हजार आत्मरत्तक देव है.

(२०) परिपदा–एकेक इन्द्र के तीन तीन परिपदो है अभिंतर परिपदा के ८००० देव, मध्यम के १०००० बाह्य की १२००० देव है और देवी तीनों परिपदा मे १००–१००–१०० है.

(२१) अनिकाद्वार–एकेक इन्द्र के सात सात अनिका प्रत्यक अनिका के ५८०००० देवता है पूर्ववत्.

(२२) देवी–एकेक इन्द्र के च्यार च्यार अग्र महेपि देवीयों हैं एकेक के च्यार च्यार हजार देवीका परिवार है प्रत्यक देवी च्यार च्यार हजार रूप वैक्रयकर शक्ती है ४००० १६००० ६४००००० कुल देवी है ।

(२३) गति–सर्वसे मद गति चन्द्रकी, उन्होंसे । शीघ्र गति सूर्यकी, उन्हों से शीघ्र गति ग्रहकी, उन्होसे शीघ्र गति नचत्र कि, उन्होंमे शीघ्र गति तारोंकी हैं, अर्थात् सर्वसे मन्द गति चन्द्रकी ओर शीघ्रगति तारोंकी हैं ।

(२४) ऋद्धि–सर्व से स्वल्पऋद्धि तारोंकी, उन्होसे महाऋद्धि नचत्र कि, उन्होंसे महाऋद्धि ग्रहकी, उन्हीसे महा

ऋद्धि सूर्यकी, उन्होसे महाऋद्धि चन्द्रकी अर्थात् सर्वसे स्वल्प ऋद्धि तारोंकी ओर सर्वसे महाऋद्धि चन्द्र देवों की है।

(२५) वैक्रय-जोतीपी देव वैक्रयसे जोतीपी देवी देवता बनाके सम्पुरण जम्बुद्विप भर दे ओर संख्याता जम्बुद्विप भर देने कि शी है एवं चन्द्र सूर्य सामानीक और देवी भी समझना.

(२६) अवधिद्वार-जोतीपी देव अवधिज्ञानसे ज० संख्याते द्विप समुद्र देखे उ० भी संख्याते द्विप समुद्र देखे उर्ध्व अपने अपने ध्वजा। अधो पेहली नरक देखे तीरच्छा संख्याते द्विपसमुद्र देखे।

(२७) परिचारणा-जोतीपी देवोंके परिचारणा पांच प्रकारकी है मनकी शब्दकी रूपकि स्पर्शकी कायाकी अर्थात् जोतीषी देव मनुष्योंकी माफीक भोग विलाश करते हैं.

(२८) सिद्ध-जोतीपीयोंसे निकल मनुष्यभव कर एक समय १० जीव मोक्ष जावे, देवी से निकल एक समयमे २० जीव मोक्ष जावे.

[२९] भवद्वार-जोतीपी देवोंसे निकल १-२-३ भव ओर उत्कष्ट करे तो अनंन्ताभव भी कर शक्ते है।

[३०] अल्पावहूत्वद्वार स्तोक चन्द्र सूर्य उन्होसे नक्षत्र संख्यात गु० उन्होसे ग्रहसंख्या० गु० उन्होसे तारादेव संख्यात गु०

[३१] उत्पन्न–हे भगवान् सर्व प्राणभूत जीव सत्व जोतीषी देवों पणे पूर्व उत्पन्न हूवा ? हे गौतम एकवार नहीं किन्तु अनन्ती अनन्ती वार जोतीषी देवो पण उत्पन्न हूवा है परन्तु देव होना पर भी जीवकों आत्मीक सुख नही मीला आत्मीक सुख के दाता एक वीतराग है वास्ते उन्होंकी आज्ञाका आराद्धि ननना चाहिये इति.

सेवभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

थोकडा नम्बर ६

बहूतसूत्रसे सग्रहकर

(वैमानिकदेवोंका द्वार २७)

१ नामद्वार	१० इन्द्रनाम द्वार	१९ देवीद्वार
२ वासाद्वार	११ इन्द्रवैमान ,,	२० वैक्रयद्वार
३ सस्थानद्वार	१२ चिन्हद्वार ,,	२१ अवधिद्वार
४ आधारद्वार	१३ सामानीक ,,	२२ परिचारणा
५ पृथ्वीपएट०	१४ लोकपाल ,,	२३ पुन्यद्वार
६ वैमान उचपणो	१५ तायत्रिसका ,,	२४ सिद्धद्वार
७ वैमान सख्या	१६ आत्मरक्षक ,,	२५ भवद्वार
८ वैमान विस्तार	१७ अनिकाद्वार	२६ उत्पन्नद्वार
९ वैमान वर्णद्वार	१८ परिषदाद्वार	२७ अल्पाबहूत्व ,,

(१) नामद्वार—वैमानिकदेवोंका नाम यथा सौधर्मदेव-लोक, इशान देवलोक सनत्कुमार० महेन्द्र० ब्रह्म० लंताक० महाशुक्र० सहस्त्र० अणत्० पाणत्० अरण० अचुतदेवलोक। । १२ । नौग्रीवेग भद्दे, सुभद्दे, सुजाये, सुमाणसे, सुदर्शने, प्रयदर्शने, आमोये, सुप्रतिबन्धे, यशोधरे, । ९ । पाचाणुत्तर वैमान–विजय, विजयन्त, जयन्त, अप्राजित, सर्वार्थसिद्ध, ।५। पांचमा देवलोकके तीसरा परतरमें नव लोकान्तीक तथा तीन किल्बिपीदेव मीलके सर्व ३८ जातका देवोंकों वैमानिकदेव कहा जाता है॰

(२) वासाद्वार-संभूमिसे ७९० जोजन उर्ध्व जावे तब जोतीपीदेव आते है वह ११० जोजनके जाडपणामें अर्थात् ९०० जोजन संभूमिसे उर्ध्व जावे वहां तक जोतीपीदेव है वहांसे असंख्यात कोडनकोड उर्ध्व जावे तब वैमानिकदेवोंका वैमान आते है वहां वैमानिकदेवोंका निवास है उन्होंकि राज-धानी ओर प्रत्यक इन्द्रके पांच पांच सभा स्वस्ववैमानमें है शक्रेन्द्र, ईशानेन्द्रके प्रासाद या इन्होंके लोकपाल तथा देवां-गनाकि राजधानीयों तीरच्छालोकमें भी है।

[३] संस्थानद्वार–पेहला दुसरा तीसरा चोथा तथा नवमा दशमा इग्यारवा वारहवा यह आठ देवलोक आदा चक्रके संस्थान है अथवा कुंभकारका लागलके आकार है

५-६-७-८ देवलोक ओर नौग्रीवैग ९ ग्रह पूर्णचन्द्र के आकार एक दुसराके उपरा उपर है च्यार अणुत्तर वैमान तीरुखा च्यार दिशामे है सर्वार्थसिद्ध वैमान गोलचंद्र सस्थान है.

[४] आधारद्वार-वैमान् और पृथ्वीपड रत्नमय है परन्तु वह किसके आधार है? पेहला दुसरा देवलोक घणोदद्धि के आधार है तीजा चोथा पाचवा घण वायु के आधार है छटा सातवा आठवा देवलोक घणोदद्धि घण वायु के आधार है शेष वैमान यावत् सर्वार्थसिद्ध वैमनतक केवल आकाश के ही आधार है.

(५) पृथ्वीपएड (६) वैमानकाउचा (७) वैमान और परतर (८) वर्ण.

वैमान	पृथ्वीपएड	वै० उचा	वै० सख्या	वर्ण	परतर
१	२७०० जो	५०० जो	३२ लक्ष	५ वर्ण	१३
२	२७०० ,,	५०० ,,	२८ ,,	५ ,,	१२
३	२६०० ,,	६०० ,,	१२ ,,	४ ,,	१२
४	२६०० ,,	६०० ,,	८ ,,	४ ,,	१२
५	२५०० ,,	७०० ,,	४ ,,	३ ,,	६
६	२५०० ,,	७०० ,,	५०हजार	३ ,,	५

७	२४०० ,,	८०० ,,	४० ,,	२ ,,	४
८	२४०० ,,	८०० ,,	६०००	२ ,,	४
९	२३०० ,,	९०० ,,	४००	१ ,,	४
१०	२३०० ,,	९०० ,,		१ ,,	४
११	२३०० ,,	९०० ,,	३००	१ ,,	४
१२	२३०० ,,	९०० ,,		१ ,,	४
९ ग्री०	२२०० ,,	१००० ,,	३१८	१ ,,	६
५ अणु.	२१०० ,,	११०० ,,	५	१ ,,	१

(९) वैमान विस्तार—वैमान का विस्तार कितनेक (च्यार भागके) असंख्यात जोजनके विस्तारवाले है कितनेक (एक भागके) संख्यात जोजनके विस्तारवाले है परन्तु सर्वार्थसिद्ध वैमान एकलक्ष जोजन विस्तारवाले है।

(१०) इन्द्रद्वार—बारह देवलोकोंका दश इन्द्र है और नौ ग्रीवैग तथा पांचाणुत्तर वैमानका देवोंके इन्द्र नहीं है अर्थात् अहमेन्द्र—सर्व देवता इद्र है वहापर छोटे वडेका कायदा नही है दश इन्द्रोका नाम यंत्रमें.

(११) वैमानद्वार—प्रत्यक इन्द्र तीर्थकरोंके जन्मादि कल्याणके लिये मृत्यु लोकमे आते है उन्ही समय वैमानमे वेठ के आते है उन्हीका नाम यथा—पालक वैमान, पुप्प वैमान,

सुमाखस, श्रीवत्स, नन्दीवर्तन, कामगमनामावैमान मणोगम प्रीयगम विमल सर्वतोभद्र.

(१२) चन्ह, (१३)सामानीक, (१४) लोकपाल, (५) तान० (१६) आत्मरचकद्वार.

इन्द्र.	चन्ह.	साम०	लो०	ता०	आत्म०
शक्रेन्द्र	मृग	८४०००	४	३३	३३६०००
इशानेन्द्र	महेष	८००००	४	३३	३२००००
सनत्कु०	सूयर	७२०००	४	३३	२८८०००
महेन्द्र	सिंह	७००००	४	३३	२८००००
ब्रह्मेन्द्र	बकरा	६००००	४	३३	२४००००
लतकेन्द्र	देडका	५००००	४	३३	२०००००
महाशुकेन्द्र	अश्व	४००००	४	३३	१६००००
सहस्रेन्द्र	हस्ती	३००००	४	३३	१२००००
पणतेन्द्र	सर्प	२००००	४	३३	८००००
अचुतेन्द्र	गरूड	१००००	४	३३	४००००

(१७) अनिकाद्वार-प्रत्यक इन्द्रके सात सात अनिका है, यथा-गज, तुरग, रथ, वृषभ, पैदल, गन्धर्व नाटिक-नृत्यकारक प्रत्यक अनिकाके देव अपने अपने सामानीकदेवोंसे १२७ गुणे है जेसे शक्रेन्द्रके ८४००० सामानीकदेव है उन्होंसें

१२७ गुण करनेसे १०६६८००० देव प्रत्यक अनिकाका होते है इसी माफीक सर्व इन्द्रोंके समझना.

(१८) परिषदाद्वार—प्रत्यक इन्द्रके तीन तीन प्रकारकि परिषदा होती है अभिंतर, मध्यम, बाह्यदेव देखो यंत्रसे.

इन्द्र.	अभिंतर.	मध्यम.	बाह्य.	देवी.
१	१२०००	१४०००	१६०००	शक्रेन्द्र
२	१००००	१२०००	१४०००	७००
३	८०००	१००००	१२०००	६००
४	६०००	८०००	१००००	५००
५	४०००	६०००	८०००	इशानेन्द्र
६	२०००	४०००	६०००	९००
७	१०००	२०००	४०००	८००
८	५००	१०००	२०००	७००
९	२५०	५००	१०००	शेष इन्द्रके
१०	१२५	२५०	५००	देवी नहीं.

(१९) देवीद्वार—शक्रेन्द्रके आठ अग्र महेषीदेवी है प्रत्यक देवीके शोला शोला हजार देवीका परिवार है १२८००० प्रत्यक देवी शोला शोला हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है.२०४८००००० इतनि देवी एक इन्द्रके भोगमें

आ शक्ती है एवं इशानेन्द्रके भी समभना शेष देवलोकमें देवी उत्पन्न होनेका स्थान नही है उर्ध्व अचुत देवलोकके देवों तकके देवी पेहला दुसरा देवलोकमें रहेती है वह देवोंके भागमें आती है देवीका उर्ध्व आठमा देवलोक तक गमन होता है

(२०) वैक्रयद्वार—शक्रेन्द्र वैमानीकदेवी देवतोंसे दो जम्बुद्विप भरदे असख्यातेकी शक्ती है एव सामानीक—लोकपाल—तावत्रिसका ओर देवी भी समभना इशानेन्द्र दो जम्बुद्विप साधिक सपरिवार तथा सनत्कुमार ४ जम्बु० महेन्द्र ४ साधिक ब्रह्मेन्द्र ८ जम्बु० लांतकेन्द्र आठ साधिक महाशुक्र १६ जम्बु० सहस्त्र १६ साधिक पाणत् ३२ अचुतेन्द्र ३२ साधिक जम्बुद्विप वैक्रयमे देवी देव बनाके भरदे सबकि शक्ती असख्या जम्बुद्विप भरदेनेकी है शेष वैक्रय नहीं करे.

(२१) अवधिद्वार—अवधिज्ञान सर्व इन्द्र ज० अंगुलके असख्यातमो भाग उ० उर्ध्व अपने अपने वैमानके ध्वज तीरच्छा असख्याते द्विप समुद्र अधो शक्रेन्द्र इशानेन्द्र पेहला नरक देखे, सनत्कु० महेन्द्र दुसरी नरक देखे, ब्रह्मेन्द्र लांतकेन्द्र तीसरी नरक देखे, महाशुक्र सहस्र चोथी नरक देखे, अणतपणात अरण अचुत पांचमी नरक देखे, नौग्रीवैगके देव छठी नरक च्यार अणुत्तर वैमान सातमी नरक तथा सर्वार्थसिद्ध वैमानका देवा तमनाली सम्पुर्ण जाने देखे

(२२) परिचारणाद्वार–सौधर्मेशान देवलोकके देवोंको मन, शब्द, रूप, स्पर्श और कायपरिचारणा यह पांचो प्रकार कि परिचारणा है तीजा चोथा देवोंके स्पर्शपरिचारणा है पांचवा छठा दे० देवोंके रूपपरिचारणा है सातवा आठवा दे० देवोंके शब्दपरिचारणा है नव दश इग्यारा बारहवा देवलोकके देवोंके एक मनपरिचारणा है नौग्रीवैग और अनुत्तर वैमानके देवोंके परिचारणा नहि है विस्तार देखो परिचारणापदका थोकडामें.

(२३) पुन्यद्वार–जितना पुन्य व्यंतरदेव १०० वर्षमें क्षय करते है इतना पुन्य नागकुमारादि नव निकायके देव २०० वर्ष असुरकुमार ३०० वर्ष ग्रह नक्षत्र तारा ४०० चन्द्र सूर्य ५०० सौधर्मइशान १००० वर्ष सनत्कु० महेन्द्र २००० ब्रह्मेन्द्र लंतक ३००० महाशुक्र सहस्र ४००० अणतपणात अरण अचुत ५००० वर्ष पेहली त्रिक १ लक्ष दुसरी त्रिक २ लक्ष तीसरी त्रिक ३ लक्ष च्यार अणुत्तर ४ लक्ष सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव ५ लक्ष वर्षमें इतना पुन्य क्षय करते है अर्थात् व्यंतरदेव भोगविलास हास्य कौतूल्यादिमें १०० वर्षमें जीतना पुन्य क्षय करते है इतना पुन्य क्रमसर सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव पांच लक्ष वर्षोंमें पुन्य क्षय करते है.

(२४) सिद्धद्वार-वैमानिक देवोंमे निकलके मनुष्यका भवमे आके एक समय १०८ सिद्ध होते हैं एक देवीमे २० जीव सिद्ध होते हैं

(२५) भवद्वार-वैमानिक देवोंमे जाने पर भी जीव ससारमें भव करे तो जघन्य १-२-३ उ० सख्याते असख्याते अनन्ते भव भी कर शक्ता हैं।

(२६) उत्पन्नद्वार हे भगवान सर्व प्राण भूत जीव सत्व वैमानिक देवता या देवीपणे पूर्व उत्पन्न हूवा ! हे गोतम एक वार नही किन्तु अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवा है कहातक कि० नौग्रीवेमनक। ओर च्यार अणुत्तर वैमानमें जाने के बाद सख्याते (२४) भवमे ओर सर्वार्थसिद्ध वैमान मे एक भवमें निश्चय मोक्ष होता है।

(२७) अल्पाबहुतद्वार

(१) स्तोक पाच अणुत्तर वैमनके देव

(२) उपरकी त्रिकके देव सख्यातगुणा

(३) मध्यम त्रिकके देव ,,

(३) निचेकी त्रिकके देव ,,

(४) बारहवा देवलोकके देव ,,

(५) इग्यारवे ,, ,, ,,

(६) दशवे ,, ,, ,,

(७) नवमे ,, ,, ,,

(८) आठवा असंख्यातगुणा

(९) सातवा ,, ,, ,,

(१०) छटे ,, ,, ,,

(११) पाचवे ,, ,, ,,

(१२) चोथे ,, ,, ,,

(१३) तीजे ,, ,, ,,

(१४) दुजे ,, ,, ,,

(१५) दुजे देवलोककी देवी संख्यातगुणी.

(१६) पेहला देवलोकके देवा ,,

(१७) ,, ,, देवी ,,

सेवंभंते सेवंभंते–तमेवसच्चम्.



थोकडा नं. ७

सूत्रश्री जम्बुद्विपप्रज्ञाप्ती

(खण्डा जोयण)

गाथा—खंडा जोयेण वासा,
पव्वय कूडा तित्थ सेढीओ ।
विजय द्रह सलिलाओ,
पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥

इस लक्ष जोजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपको १० द्वारसे बतलाये जावेंगे

(१) खंडा-जम्बुद्विपका भरतक्षेत्र परिमाण कितने खंड होते हैं

(२) जोयण-जम्बुद्विपका जोजन परिमाणे कितना खंड होता है.

(३) वासा-जम्बुद्विपमें मनुष्य रेहनेका कितना वासा है

(४) पव्वय-जम्बुद्विपमें सास्वता पर्वत कितने हैं.

(५) कूडा-जम्बुद्विपमें पर्वतों उपर कूट है वहा कितने हैं.

(६) तित्थ-जम्बुद्विपमें माघद्वादि तीर्थ कितने हैं.

(७) सेढी-जम्बुद्विपमें विद्याधरोंकि श्रेणि कहां या कितनी हैं.

(८) विजय-महाविदेहक्षेत्रमें मनुष्य रहेनेकि विजय कितनी हैं.

(९) द्रह-जम्बुद्विपमें पद्मादि द्रह कितने है.

(१०) सलिला-जम्बुद्विपमें गंगादि नदीयों कितनी है

उपर वतलाये हूवे १० द्वारकों शास्त्रकार विस्तारपूर्वक विवरण करते है.

(१) खंडा-तीरच्छालोकमें जम्बुद्विप असंख्याते है परन्तु यहांपर जो हम निवास कर रहे है इसी जम्बुद्विपकि व्याख्या करेंगे.

जंम्बुद्विप गोल चुडि-चक्र-तेलका पुवा-कमलकि कर्णिका और पूर्ण चन्द्रके आकार है वह पूर्व पश्चम एक लक्ष जोजनका पहूला है इसी माफीक दाक्षिणोत्तर भी एक लक्ष जोजनका लम्बा है ३१६२२७ जोजन तीनगाउ १२८ धनुष्य

१३॥ अंगुल एक यव एक युक एक लिख छे बालाग्र पाच व्यवहारीये परमाणु इतना विस्तारवाली परद्धि है। एक जगति (कोट) एक पद्मवर वेदिका एक वनखंड च्यार दरवाजा कर अति शोभनिक है। इन्ही जम्बुद्विपका दक्षिण उत्तर भरतक्षेत्र परिमाण खंड किया जाय तो १९० खंड होता है यत्र।

न	क्षेत्र नाम	खंड	जोजन परिमाण.
१	भरतक्षेत्र	१	५२६+६
२	चुलहेमवन्तपर्वत	२	१०५२+१२
३	हेमवयक्षेत्र	४	२१०५+५
४	महाहेमवन्तपर्वत	८	४२१०+१०
५	हरिवासक्षेत्र	१६	८४२१+१
६	निषेडपर्वत	३२	१६८४२+२
७	महाविदेहक्षेत्र	६४	३३६८४+४
८	निलवंतपर्वत	३२	१६८४२+२
९	रम्यकवासक्षेत्र	१६	८४२१+१
१०	रुपीपर्वत	८	४२१०+१०
११	एरणवयक्षेत्र	४	२१०५+५
१२	सीखरीपर्वत	२	१०५२+१२
१३	एरभरतक्षेत्र	१	५२६+६
			९०+१००००० जोजन

जोजनका १९ वा भागकी कला जानिये

प्रसंगोपात पूर्व पश्चिम लक्ष जोजनका मान.

नं.	क्षेत्रका नाम.	जोजन परिमाण.
१	मेरूपर्वत पहला	१०००० जोजन.
२	पूर्व भद्रशाल वन	२२०:० ,,
३	,, आठ विजय	१७७०२ ,,
४	,, च्यार वस्कारपर्वत	२००० ,,
५	,, तीन अन्तरनदी	३७५ ,,
६	,, सीतामूख वन	२९२३ ,,
७	पश्चिम भद्रशाल वन	२२००० ,,
८	,, आठ विजय	१७७०२ ,,
९	,, च्यार वस्कार	२००० ,,
१०	,, तीन नदी	३७५ ,,
११	,, सीतामुख वन	२९२३ ,,

एवं १०००:० जोजन—

(२) जोयणद्वार–एक लक्ष योजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपका योजन योजन परिमाणके गोल खंड किया जाय तो १०००००००००० इतने खंड होते है अगर योजन परिमाण समचौरस खंड किये जाय तो ७९०५६९४१५० खंड होनापर ३५१५ धनुष ओर ६० अंगुल क्षेत्र वढजाता है इति द्वारम्.

(२) वासाद्वार—इन्ही लच योजनके विस्तार वाला जम्बुद्विप मे मनुष्य रेहनेका वासक्षेत्र ७ तथा १० है यथा (१) भरतक्षेत्र (२) एरभरतक्षेत्र (३) महाविदहक्षेत्र इन्हीं तीनों क्षेत्रमे कर्मभूमि मनुष्य निवास करते है और (१) हमवय (२) हरणवय (३) हरिवास (४) रम्यक्वास इन्ही च्यार क्षेत्रोंमें अकर्मभूमि युगल मनुष्य निवास करते है एवं ७ तथा दश गीना जावे तो पूर्वजो महाविदहक्षेत्र गीना गया है उन्हीका च्यार विभाग करना (१) पूर्व महाविदह (२) पश्चिम महाविदह (३) देवकुरू (४) उत्तर कुरु एवं १० क्षेत्र होता है। विवरण—

लक्ष योजनके विस्तार वाला जो जम्बुद्विप है जिन्होंके चौतर्फ एक जगति (कोट) है वह जगति आठ योजन की उची है मूलमे १२ मध्यमे ८ उपर ४ योजनके विस्तार वाली है सर्व वज्ररत्नमय है उन्ही जगति के कीनारेपर एक गौरा जाल अर्थात्–झरोखाकी लेन आगइ है वह आदा योजनकी उची पानसो धनुष कि चोडी कोपीसा और कागरा सर्व रत्नमय है।

जगति उपरमे च्यार योजनके विस्तारवाली है उन्ही के मध्यभागमे एक पद्मवरवेदिका आदा योजनकी उची ५०० धनुष कि चोडी दोनो तर्फ विला पनों का स्थामा पर अच्छा सुन्दर आकारवाली मनमोहक पुतलायों है और भि अनेक

सुन्दर रूप तथा मौक्तिफल की मालावों से सुशोभित है मध्य-भागमे पद्मवर वेदिका आजानेसे दो विभाग हो गये है (१) अन्दर का विभाग (२) वाहार का विभाग जो अन्दर का विभाग है उन्ही के अन्दर अनेक जातिके वृक्ष आजानेसे अन्दरका वनखंड कहा जाते है उन्ही के अन्दर पांच वर्ण के तृण रत्नमय है पूर्वादि दिशीका मन्द वायु चलनेसे छे राग ३६ रागणी मन और श्रवणोंको आनन्दकारी ध्वनी निकलती है उन्ही वनखंड मे और भी छोटी छोटी वावी ओर पर्वत आगय है वह अनेक आसन पडे है वहाँ व्यंतर देव ओर देवीयों आते है पूर्वकृत पुन्यकों सुखपूर्वक भोगवते है इसी माफीक वाहारका वन भी समझना परन्तु वहा तृण नही है ।

मरू पर्वत के च्यारों दिशा पैतालीस पैतालीस हजार योजन जानेपर च्यारो दिशा उन्ही जगतिके अन्दर च्यार दर-वाजा आते है वह दरवाजा आठ योजनके उचे च्यार योजन के चोड है दरवाजा उपर नवभूमि और सुपेतगुमट छत्रचमर ध्वजा और आठ आठ मंगलीक है । दरवाजाके दोनों तर्फ दो दो चौंतरा है उन्हींके उपर प्रासाद तोरण चन्दनके कलसे झारी थाल आदि यावत् धूपके कुडच्छ और मनोहर रुपवाली पुतलीयोंसे सुशोभीत है.

(१) पूर्वदिशमें विजय नामको दरवाजो है.

(२) दक्षिणदिशमें विजयन्त नामको दर०

(३) पश्चिमदिशमें जयन्तनामा दर०

(४) उत्तरदिशमें अप्राजित नामा दर०

इन्ही चारों दरवाजोंके नामके च्यारों देवता एकेक पल्योपमकि स्थितिवाले है उन्हीकी राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें है। अधिक विस्तारवालोको जीवाभिगमसूत्र देखना चाहिये।

(१) भरतक्षेत्र—जहांपर हम बैठे है इन्हीकों भरतक्षेत्र केहते है। वह चुलहेमवन्तपर्वतसे दक्षिणकि तर्फ विजयन्त दरवाजासे उत्तरकि तर्फ पूर्व और पश्चिम जगतिके बाहार लवणसमुद्र है अर्द्धचन्द्रके आकार है मध्यभागमें वैताड्यपर्वत आनासे भरतक्षेत्रका दो विभाग कहाजाते है (१) दक्षिणभरत (२) उत्तरभरत।

चुलहेमवन्तपर्वतपर पद्मद्रहसे गंगा और सिन्धुनदी उत्तर भरतका तीन विभाग करति हुइ तमसगुफा और खंडप्रभागुफाके निचे वैताड्यपर्वतको भेदके दक्षिणभरतका तीन विभाग करति हुइ लवणसमुद्रमें प्रवेश हुइ है इन्हीसे भरतक्षेत्रका छे खंड भी कहाजाता है।

दक्षिणभरत २३८ जो० ३ कलाका है जिन्होंके अन्दर तीन खंड है मध्यखंडमें १४००० हजार देश है मौर्य मध्यभागमें कोशलदेश वनिता (अयोध्या) नगरि है वह परिमाण अंगुलसे १२ जोजन लम्बी ९ जोजन पहूली है वनितानगरीसे उत्तरकि तर्फ ११४॥+१॥ वैताड्यपर्वत है और ११४॥+१॥

दक्षिणकी तर्फ विजयन्त नामका दरवाजा है। पूर्व पश्चिमके दोनों खंडमें हजार हजार देश मीलाके दक्षिणभरतके तीनों खंडमें १६००० देश है इसी माफीक उत्तरभरतमें भि १६००० देश हैं इन्ही भरतक्षेत्रमें कालकि हानि वृद्धिरुप सर्पिणी उत्सर्पिणी मीलके कालचक्र है वह देखो. छे आरोका थोकडामें। एक सर्पिणीमें २४ तीर्थंकर १२ चक्रवरत ६ बलदेव ६ वासुदेव ६ प्रतिवासुदेव नियमत होते है। इति.

(२) एरभरतक्षेत्र—भरतक्षेत्रकि माफिक है परन्तु भरतक्षेत्रकि मर्यादाकारक चुलहेमवन्तपर्वत है और एरभरतक्षेत्रकी मर्यादाकारक सीखरीपर्वत है शेप बराबर है इति.

(३) महाविदह क्षेत्र—निपेड और निलवन्त दोनों पर्वतोंकें विचमे महाविदहक्षेत्र है वह पलंक के संस्थान है चक्रवरतकि ३२ विजयसे अलंकृत है। अगर महाविदेहक्षेत्रका च्यार विभागकर दिया जावेगें तों (१) पूर्व विदह (२) पश्चिम विदह (३) देवकूरू (४) उत्तर कूरू.

विदहक्षेत्रके मध्य भागमे मेरू पर्वत पृथ्वीपर १०००० जो० के विस्तारवाला है उन्ही के पूर्व पश्चिम दोनुं तर्फ बावीस बावीस हजार योजनका भद्रशालवन है। उन्हीसे दोनों तर्फ (पूर्व पश्चिम) शोला शोला विजय है अर्थात् पूर्व विदहरूप १६ विजया और पश्चिम विदह रूप १६ विजय है।

मरू पर्वत १०००० जोजनका है उन्हीसे उत्तर दक्षिण

अढाइमो अढाइसो जोजनका भद्रशालवन है वहासे दक्षिणकि तर्फ निषेडपर्वत तक देवकूरू क्षेत्र और निलवन्त पर्वत तक उत्तर कुरूक्षेत्र है। एकेक क्षेत्र दोदो गजदन्तों कर आदा चन्द्राकार है इन्ही क्षेत्रोंमे युगल मनुष्य तीनगाउ कि अवगाहना और तीन पल्योपम कि स्थिति वाले है देवकूरूक्षेत्रमें कुड सामली वृक्ष चितविचित्र पर्वत १०० कचनगिरि पर्वत पाचद्रह इसी माफीक उत्तरकूरूमे परन्तु वह जम्बु सुदर्शनवृक्ष है इति विदेहेका च्यार भेद।

निषेडपर्वत और महा हेमवन्तपर्वत इन्ही दोनो पर्वतोंके विचमे हरिवास नामका क्षेत्र है तथा निलवन्त और रूपी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे रम्यक्‌वास क्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमे दो गाउकी अवगाहना और दो पल्योपम कि स्थिति वाले युगल मनुष्य रहे ते है।

महाहेमवन्त और चुलहेमवन्त इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे हेमवय नामका क्षेत्र है तथा रूपी और सीखरी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे एरणवयक्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमें एक गाउकी अवगाहाना और एक पल्योपम कि स्थिति वाला युगल मनुष्य रेहेते है। एव जम्बुद्विपमे मनुष्य रेहेने के दश क्षेत्र है इन्हीको शास्त्रकारोंने वासा काहा है अब इन्ही १० क्षेत्रोंका लम्बा चोटा बाहा जीवा धनुपपीठ आदिका परिमाण यत्रद्वारा लिखा जाता है।

क्षेत्रनाम	दाक्षिणोतर पहूलापणो	बाहू	जीवा	धनुपर्पीठ
दाक्षिणभरत	२३८ जो० ३	०	९७४८+१२	९७६६+१
उतरभरत	२३८ + ३	१८९२+७॥	१४४७१+६	१४५२८+११
हेमवयक्षेत्र	२१·५ + ५	६७५५+३	३७६७४+१६	३८७४०+१०
हरिवासक्षेत्र	८४२१ + १	१३३६१+६	७३९०१+१७	८४०१६+४
महाविदहक्षेत्र	३३६८४+४	३३७६७+७	१०००००	१५८११३+१६
देवकूरूक्षेत्र	११८४२ + २	०	५३०००	६०४१८+१२
उत्तरकूरूक्षेत्र	११८४२ + २	०	५३०००	६०४१८+१२
रम्यकूवासक्षेत्र	८४२१ + १	१३३६१+६	७३९०१+१७	८४०१६+४
एरणवयक्षेत्र	२१०५ + ५	६७५५+३	३७६७४+६	३८७४०+१०
दाक्षिणएरभरत	२३८+३	१८९२+७॥	१४४७१+६	१४५२८+११
उत्तरएरभरत	२३८+३	०	९७४८+१२	९७६६+१

(५) पञ्चयपर्वत-जम्बुद्विपमें २६९ पर्वत सास्वता हैं (२००) कञ्चनगिरिपर्वत-देवकूरू युगलक्षेत्रमें पाच द्रह हैं उन्ही द्रहके दोनों तटपर दश दश कञ्चनगिरिपर्वत मर्व सुवर्णमय है दश तटपर १०० पर्वत हैं इसी माफीक उत्तरकूरु युगलक्षेत्रमें १०० कञ्चनगिरि है एव २००

(३४) दीर्घवैताड्य-चक्रवरतकी ३४ विजय अर्थात महाविदेहकि ३२ विजय एक भरत एक एरभरत एव ३४ विजयके मध्यभागमें ३४ वैताढ्यपर्वत हैं।

(१६) वक्षारपर्वत-महाविदेहक्षेत्रके मध्यभागमें मेरूपर्वत आजानेसे महाविदहक्षेत्रके सोला सोला विजयरूप दो विभाग हूये सोला सोला विजयके बिचमें सीता सीतोदानदी आजानासे आठ आठ विजयरूप च्यार विभाग हूवे उन्हीसे आठ विजयरूप एक विभागके सात अन्तर है जिस्मे च्यार वक्षारपर्वत और तीन अन्तर नदी है एक विभागमें च्यार वक्षारपर्वत है इसी माफीक च्यार विभागमें १६ वक्षारपर्वत है।

(६) वर्षधरपर्वत-मनुष्य रेहनेका जो ७ क्षेत्र बतलाये है जिन्होंके ६ अन्तरोंमें छे पर्वत है अथवा सात क्षेत्रोंकि मर्यादा करनेवाले ६ वर्षधरपर्वत है यथा चुलहेमवन्त, महाहेमवन्त, निषेढ, निलवन्त, रूपी, और सीखरीपर्वत इति।

(४) गजदन्तापर्वत-निषेढ और निलवन्तपर्वतके पासमें

निकलते हूवे देवकूरू उत्तरकूरू युगलक्षेत्र और विजयके विचमें मर्यादा करनेवाले हस्तिके दन्तके आकार मेरूपर्व्वतके पास जायलागे है.

(४) वृतलवैताढ्य पर्वत हेमवय, एरणवय, हरिवास, रम्यक्-वास वह च्यार युगल मनुष्यांका क्षेत्र है इन्हींके मध्यभागमें च्यार वृतल वैताडच्यपर्वत है.

(४) चितविचितादि निषेडपर्वतके पासमें और सीतानदीके दोनो तटपर चित और विचित दो पर्वत है इसी माफिक निलवन्त पर्वतके पासमें सीतोदानदीके तटपर जमग समग दो पर्वत है.

(१) जम्बुद्विपके मध्यभागमें गिरिराज मेरूपर्वत है. इति.

(विवरण)

(१) दो सो (२००) कञ्चनागिरिपर्वत पच्चवीस जोजन धरतिमें १०० जोजन धरतिसें उंचा मूलमें १०० जो० लम्बा चोडा मध्यमें ७५ जो० उपरसे ५० जोजन विस्तारवाला है तीनगुणी जाम्झेरी पराद्धि सर्व कञ्चनमय है ।

(२) चौतीस दीर्घ वैताड्यपर्वत पचवीस गाउ धरतीमें हे पच्चवीस जोजन धरतीसें उंचा पचास जो० विस्तारवाला है। उन्होंकि दोनो तर्फ बाह ४८८ जो० १६ कला है जीवा १०७२० जो० १२ कला धनुपपीष्ट १०७४३ जो० १५ कला हे प्रत्यक वैताड्यपर्वतके अन्दर दो दो गुफावों है (१) तमस-गुफा (२) खंडप्रभागुफा वह गुफा ५० जोजनाकि लम्बी १२

जोजनकि चोडी ८ जो० उची है उन्ही गुफावोंके अन्दर दो दो नदीयों है (१) उमगजला (२) निगमजला-गुफावोंके दरवाजासें २१ जोजन गुफाके अन्दर जावे तब उगमजाल नदी आवे वह तीन जोजनका निस्तारमें पाणी वह रहा है उन्हीके अन्दर कीसी प्रकारका पदार्थ-कष्ट, कचरा, कलेवर पडजावे तो उन्हीकों तीन दफे इदर उदर भमाके बाहार फेंकदे इसी वास्ते उगमजला नाम है वहासे दो जोजन आगे जानेपर निगमजला नदी तीन जोजनके विस्तारवाली जिस्के अन्दर कोइ भी पदार्थ पडे तो उन्हीकों तीन उच्छाला देके नदीके अन्दर रखलेने वास्ते निगमजला नाम दीया है वहासें २१ जो० जानेपर तमसगुफके उतरका दरवाजा आजाता है। परन्तु महाविदे क्षेत्रके ३२ वैताड्यके बाहार जीवा धनुषपीष्ट नहीं है केहना नह पलकके सस्थान है। शेष विजयवत्।

(३) शोलावस्कार पर्वत-चित्र, विचित्र, निलन, एक शेल, त्रिकुट, वैसमण, अञ्जन, मयाञ्जन, अकानाइ, पत्रमानाइ, आसीविष, सुहावह, चन्द्र, सूर्य, नाग, देव एव १६ पर्वत १६५९२ जो० २ कलाके लम्बा है पाचसो पाचसो जो० पहूला विस्तार है निषेड निलवन्तपर्वतोंके पासमें च्यारसो जोजनका उचा और ४०० गाउका धरतीमें है वहासें वढते वढते सीता सीतोंदा नदीयोंके पासमें उचा पाचसो पाचसो जोजनका और ५०० पाचसो गाउका धरतीमें है। १६ वस्कारपर्वत अश्वके स्कन्धके आकार है

(६) नर्यद्वारपर्वत यासें देखो

पर्वत	उचा	धरतीमे	पहूलपणो	बाहा	जीवा	धनुष०
चूलहेमवन्त और सीखरी	१०० जोजन	२५ जो०	१०५२ जो १२ कला	५३५० जो १५ कला	२४९३२ जो ०॥ कला	२५२३० जो० ४ कला
महाहेमवन्त और रूपि	२०० जो०	५० जो०	४२१० जो १० कला	९२७६ जो ९ कला	५३९३१ जो ६ कला	५७२९३ जो० १० कला
निषेड और निलवन्त	४०० जो०	१०० जो०	१६८४२जो २ कला	२०१६५ जो २ कला	९४१५६ जो २ कला	१२४३४६ जो ९ कला

(४) गजदन्ता पर्वत च्यार—गधमदर्न, मालवन्त विद्युत्प्रभा और सुमानस एवं ४ गजदन्ता निषड निलवन्त पर्वत के पास च्यारां पर्वत च्यार च्यारसो जोजनका उचा और सोसो जोजनका धरतीमे उंडा तथा पांच पांचसो जोजनका पहूला वहासे क्रमःसर हस्तीके दन्त कि माफीक उचापणे वढते वढते और पहूलपणे कम होते हूवे मेरू पर्वतके पास आते हूवे पांचसो पाचसो जोजनके उचो और सवासे सवासे जोजन के धरतीमें उ० और पहूलपणे अंगुलके असंख्यातमेभाग रहा है लम्बाइमे ३०२०९ जो० ६ कालाका है च्यारो पर्वत रत्नमय है ।

(५) वृतल वैताढ्य—सदावाइ वयडावाइ गन्धावाइ मालवन्ता यह च्यार पर्वत १००० जो० उचा २५० जो० धरतीमें तीनगुणी साधिक परद्धि है धानकी पायलीके आकार एक हजार जो० पहूला विस्तारवाले है।

(६) चितविचित जमग समग यह च्यार पर्वत देवकुरू उत्तरकुरू युगल क्षेत्रमे निषेड निलवन्तसे ८३४ जो० और एक जोजनका सात भाग करना उन्होंमे च्यार भाग दुरे है। वह १००० जो० उचा और २५० जो० धरतीमे उडे है मूलमे १००० जो० पहूला–विस्तारवाला है मध्य ७५० जो० उपरसे ५०० जोजन विस्तारवाला है

(७) मेरूपर्वत—मेरूपर्वत जम्बुद्विपके मध्य भागमे है वह एक लक्ष जोजनका है जिस्मे १००० जोजन धरतिमे और ९९००० जो० धरतीसे उपर है मूलमे पहूलो १००९० जो० एक जोजनका इग्यारी या दश भाग है। धरतिपर दश हजार जोजन विस्तारवाला है उपर इग्यारे जोजन के पीछे एक जोजन कम होते क्रम होते मेरू के सीखरपर एक हजार जोजन के विस्तावाला है सब जगा तीनगुणी जाझेरी परद्धि है मेरूपर्वतके चौतर्फ एक पद्मवर वेदीका और एक वनखड है वह वर्णन करने योग्य है। मेरूपर्वत के च्यार वन है यथा (१) भद्रशालवन (२) नन्दनवन (३) सुमानसवन (४) पडकवन.

(१) भद्रशालवन—मेरूपर्वतके चौतर्फ धरति उपर पूर्व पश्चिम २२००० बावीस हजार जोजन ओर उत्तर दक्षिण अढाइसो २५० जोजनका है एक वनखंड एक वेदीका चौतर्फ है श्यामप्रभाकर अच्छा शोभनिक है। मेरूपर्वत के पूर्व दिशा तर्फ भद्रशालवनमे ५० जोजन जावे तब एक सिद्धायतन (जिनमन्दिर) आवे वह ५० जो० लम्बो २५ जो० चोडा ३६ जो० उचा अनेक स्थभा पुतलीयों आदिसे सुशोभीत है उन्ही सिद्धायतन के तीन दरवाजा है। वह आठ जोजनका उचा ओर च्यार जोजनका चोडा जीसपर सुपेत गुमटकर सोभायमान है उन्ही सिद्धायतन के मध्य भागमे एक मणि-पीट चोतरो ८ जो० लंम्बो चोड। च्यार जो० जाडो सर्व रत्नमय है। उन्ही चौतराके उपर एक देवच्छादो (जहा जिन प्रतिमा वीराजमान हे उन्ही को मूल गुभारा भी कहा जाते है) वह ८ जो० लंम्बा चौडा—साधिक आठ जो० उचा उंचपणे हैं वर्णन करने योग्यें है उन्ही के अन्दर त्रिलोक्य पूजनीक तीर्थकर भगवान कि प्रतिमावों पद्मासन विराजमान है यावत् धूपके कुडचे आदि रहे हूवे है। एवं दक्षिण एवं पश्चिम एवं उत्तर अर्थात् च्यारो दिशामें च्यार जिन मन्दिर पूर्ववत् समझना। मेरूपर्वत से इशान कोनमे भद्रशाल वनमे जावे तब च्यार नन्दा पुष्करणि वावी आति है पद्मा पद्माप्रभा, कुमुदा कुमुदप्रभा वह वावी ५० जो० लंम्बी २५

जो० चोडी १० जो० उढी वेदिका वनखड तोरणादि करी संयुक्त है उन्ही च्यार वावीयों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका प्रधान प्रासाद (म्हल) है वह प्रासाद ५०० जो० उचा २५० जो० विस्तारवाला है यावत् सपरिवार के आसन सहित हैं। एव अग्निकोनमें भी च्यार वावी हैं उत्पला, गुम्मा निलना उज्वला पूर्ववत् परन्तु इन्ही वावी के मध्य भागमे शकेन्द्रका प्रासाद है एव वायुकोनमे च्यार वावी हैं लिंगा भिंगनाभा अञ्जना अञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रासाद सिंहासन सपरिवार समझना एव नैऋतकोनमे च्यार वावी श्रीकान्ता श्रीचन्दा श्रीमहीता श्रीनलीता- मध्यभागमें प्रासाद इशानेन्द्रका समझना वावी-वावी के अन्तरामे जो० खुली जमिन है उन्हीं के उपर इन्द्रोंका प्रासाद हैं। भद्रशालवनमे आठ विदिशामें आठ हस्तिकुट हैं वह १२५ जो० धरतीमे ५०० जो० धरतीसे उचा हैं मूलमे पाचसो जो० मध्यमे ३७५ जो० उपर २५० जो० विस्तारवाला है तीनगुणी झाझेरी परद्धि है। पद्मुत्तर, निलवन्त, सुहस्ति, अञ्जन गिरि, कुमुद, पोलास, विडिस, रोयणगिरि, इन्ही आठ कुटोंपर कुटकेनाम देवता और देवतोंका भूवन रत्नमय है उन्ही देवोंकी राजधानी आपनी आपनि दिशासे अन्य जम्बुद्विपमे जानापर आति है विजय देववत् समझना भद्रशालवन वृक्ष गुच्छा गुमावेली तृण कर शोभाय-

मान है बहुतसे देवता देवी विद्याधरादि आवे है पूर्व संचित सुभ फलको भोगवते हूवे विचरे है ।

(२) नन्दनवन—भद्रशालवनकी संभूमिसें ५०० जोजन उंचा मेरूपर्वतपर जावे वहाँ गोल वलीयाकार नन्दनवन आवे वह पांचसो जो० विस्तारवाला है मेरूपर्वतको चोंतर्फ वीटा हूवा है अर्थात् वहांपर मेरूपर्वतकी एक मेखला निकली हुइ है उन्होंके उपर नन्दनवन है । वेदिकावन खंड च्यार जिन-मन्दिर १६ वावी ४ प्रासाद शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका पूर्वभद्र शालवनवत् समझना और नन्दनवनमें ९ कुंट है नन्दनवन-कुंट, मेरूकुंट, निषेडकुंट, हेमवन्त० रजीतकुं० रूचित० सागर-चित० वज्र० वलकुंट जिस्में आठ कुट पांचसो पांचसो जो० उंचा यावत् आठो कूटपर आठ देवीका भुवन है मेघंकरा, मेघवती, सुमेघा, हेममालनिदेवी, सुवच्छादेवी, वच्छमित्रादेवी, वज्रसेनादेवी, वलहकादेवी, आठों देवीयोंकि स्थिति एक पल्योपमकी है राजधानी अपनी अपनी दिशा तर्फ अन्य जम्बुद्विपमें समझना । वलकुट १००० जो० उंचा है मूलमें १००० मध्यमें ७५० उपरसें ५०० जो० विस्तारवाला है तीनगुणी साधिक पराद्धि है वलदेवता राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें है शेषभद्रशालवनवत् यावत् अच्छा सुन्दर है । देवदेवी आनन्द करते है.

(३) सुमानसवन–नन्दनवनके तलासे ६२५०० जोजन उर्ध्व जावे तब सुमानस नामका वन आवे। वह पाचसो जोजन के विस्तारवाला मेरूपर्वतको चौतर्फ वींट रखा है वेदीकावन खड च्यार जिनमन्दिर १६ वावी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका ४ प्रासाद पूर्ववत् समझना यावत् देवतादेवी आते है.

(४) पडकवन–सुमानसवनसे ३६००० जोजन उर्ध्व जावे तब मेरूपर्वतके शिखर उपर पडकवन आता है ४६४ जो० चक्रवाल चुडी आकार मेरूपर्वतकी चुलका (१२ जोजन) को चौतर्फ वींटरखा है। वेदीकावन खड च्यार जिनमन्दिर १६ वावी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका च्यार प्रासाद पूर्ववत् समझना। पडकवनके मध्यभागमे मेरूचुलका है वह ४० जोजनकी उची है मूलमे १२ मध्यमे ८ उपरमे ४ जोजन विस्तारवाली है साधिक तीनगुणी परद्धि। सर्व वैडूर्य रत्नमय है। एक वेदिका वनखडसे वींटी हूइ है। उपरका तलो मणिजडित है मध्यभागमें एक सिद्धायतन एक गाउका लम्बा आदा गाउका चोडा देशोना गाउका उचा अनेक स्थमकर शोभनीक है मध्य मणिपीट देवच्छदा और पद्मासन जिनप्रतिमाओं यावत् धूपडुचा आदि। देवतादेवी वहापर आते है या लब्धिधरमुनि भी जाते है त्रिलोक्य पूजनीक तीर्थंकरोकी सेवाभक्ति करते है.

पडकवनमे च्यार दिशाओंमें च्यार अभिशेष शीलाओं

हे जिन्होंकों उपर तीर्थंकर भगवान्का जन्माभिशेप इन्द्रमहाराज करते है । उन्होंके नाम–पंडूशीला, पंडूकनलशीला, रक्तशीला, रक्तकंनलशीला वह शीलावों पांचसो जोजन लम्बी अढाइसो जो० चोडी च्यार जो० जाडी है अर्धचन्द्रके आकार सर्व कनकमय अच्छी सुन्दर है । वेदिकावन खंडादिसे सुशोभित है । उन्ही शीलावोंके च्यारो तर्फ अच्छा पागोतीया उन्होंके उपर तोरणादिसे और शीलावोंके उपरका तला अच्छा साफ है जिस्में पूर्वपश्चम शीलावोंके उपर दो दो सींहासन ५०० धनुपका लम्बा २५० धनु० चोडा जिसपर विदेहक्षेत्रके तीर्थंकरोंका जन्माभिशेप जो भुवनपति व्यंतर जोतीपी और वैमानीकदेवता करते है और उत्तरदक्षिणकी शीलापर एकेक सींहासन है उन्हीके उपर तीर्थंकरोंका जन्माभिशेप पूर्ववत् च्यार निकायके देवता करते है.

मेरुपर्वतके तीन करंड है (१) हेठेका (२) मध्यमका (३) उपरका जिस्में हेठला करंड १००० जो० धरतीमें है जिस्में २५० जो० पृथ्वीमय २५० जो० पापाणमय २५० जो० वज्रमय २५० जो० शार्करा पृथ्वीमय है । मध्यमका करंड धरतीके उपर ६३००० जोजनका है जिस्में १५७५० जो० रजतमय १५७५० जो० रूपामय १५७५० जो० स्फटक रत्नमय १५७५० जो० अंकरत्नमय है उपरका करंड ३६०००

जो० जम्बुद्वीपा सुवर्णमय है एन तीन करड मीलाके १ लक्ष जोजन परिमाण मेरूपर्वत है मेरूपर्वतके १६ नाम है। मन्दिरमेरू, मनोरम, सुदर्शन, सयप्रभ, गिरिराज, रत्नोचय, शिलोचय, लोकमध्य, लोकनाभि, अवच्छर सूर्यावृतन, सूर्यावर्ण, उत्तम दिशादि चर्डमे इन्ही मेरूपर्वतका मन्दिर नामका देव एक पल्योपमकि स्थितिवाला है वास्ते इन्हीका मन्दिर नाम दीया है और देवादिकों आनन्दका घर है तथा सास्वता नाम है इति.

(५) कुटद्वार—जम्बुद्विपमे ५२५ कुट है जिस्मे ४६७ कुट पर्वतोपर है यथा—

१ चुलहेमवन्तपर्वतपर कुट ११ ८ गौंलावस्कारपर्वत प्रत्यक
२ महाहेमवन्तपर्वतपर ,, ८ पर्वत पर च्यार च्यार कुट ६४
३ निषेदपर्वत पर ,, ९ ९ विद्युत्प्रभा गजदन्ता पर ,, ९
४ निलवन्तपर्वत पर ,, ९ १० मालवन्ता ,, ,, ,, ९
५ रूपिपर्वत पर ,, ८ ११ सुमानस , ,, ,, ७
६ सीखरीपर्वत पर ,, ११ १२ गन्धमाल ,, ,, ,, ७
७ चौतीस वैताड्यपर्वत १३ मेरूपर्वतका नन्दनवनमे
है प्रत्यक पर्वतपर नव आये हूवे कुट ९
नव कुट ३०६

एवं ४६७ तथा भद्रशालवनमे ८ हस्तिकुट है देवकुरूमे ८ उत्तरकुरूमें ८ एवं २४ और ३४ चक्रवरत कि विजय में

३४ ऋषभकुंट एवं ५८ सर्व मीलके ५२५ कुंट हैं जिस्मे छे वर्षधरपर्वतोंका ५६ शोलावस्कारोंका ६४ च्यार गजदन्ताका ३० नन्दनवनका ८ भद्रशालवनका ८ एवं १६६ कुंट प्रत्यक कुंट ५०० जोजनका उचा ५०० जो० मूल पहूला शीखर पर २५० जोजन विस्तारवाला हैं और गजदन्ताके २ नन्दनवनका १ एवं ३ कुंट १००० जो० का उचा तथा मूलमे १००० जो० का पहूला शीखरपर ५०० जो० पहूल है एवं १६६

चौंतीस वैताढ्यका ३०६ कुंट २५ गाउका उचा और मूल पहूला तथा शीखर पर १२॥ गाउका पहूला है। जम्बु-पीठका ८ सामली पीठका ८ और ऋषभकुंट ३४ एवं ५० कुंट आठ जोजनका उचा आठ जोजनका मूलमे पहूला और शीखर पर ४ जोजका पहूला है एवं कुल ५२५ कुंट समझना।

उपर जो ५२५ कुंट कहे है इन्हींमें ७६ कुंट परतों जिनमंदिर है शेष ४४६ कुंट पर देवता और देवीयोंका भुवन है यथा–छे वर्षधरपर्वतों पर छे जिन मन्दिर–शोलावस्कार पर्वतों पर १६ जिनमन्दिर। च्यार गजदन्तों पर च्यार जिन-मन्दिर आठ देवकूर आठ उत्तरकूरू और चौतीस वैताढ्य पर्वतो पर ३४ जिनमन्दिर एवं कुल ७६ जिनमन्दिर है इन्हींके सिवाय भद्रशालवनमे ४ नन्दनवनमे ४ सुमानसवनमे ४ पंडग वनके च्यार ४ मेरू चुलाका पर १ जम्बु वृक्ष पर १ सामली वृक्ष पर १

एव १५ मीलाके ५५ जिनमन्दिर सास्वता है परिमाण–छे वर्षधर शोलावस्कार च्यार गजदन्ता च्यार भद्रशाल च्यार नन्दनवन च्यार सुमानसवन च्यार पडगवन एव ४२ स्थानके जिनमन्दिर पचास पचास जो० लम्बा पचविस पचविस जो० चोडा छतीस छतीस जो० उचा अनेक स्थाम पुतलीया हार आदिसे अच्छा शुशोभित सर्व रत्नोंमय हैं उन्ही जिनमन्दिरोंके तीन तीन दरवाजा है प्रत्यक दरवाजा आठ जोजनका उचा च्यार जो० पहूला तोरण स्थाभ आदिसे अच्छा मनोहर हैं

चोतीस वैताढ्य आठ देवकुरू आठ उत्तरकुरूके पीठका तथा जम्बुवृक्षका एक सामलीवृक्षका एक और मेरूचुलकाका एक एव ५३ जिनमन्दिर एक कोषका लम्बा आदा कोषका पहूला १४४० धनुषका उचा सर्व रत्नमय हैं इन्ही सर्व सिद्धायतनों अर्थात् जिनमन्दिरोंमें त्रीलोक्य पूजनिक तीर्थकरोंकी शान्तमुद्रा पद्मासनमय मूर्तियों है उन्होंकी सेवाभक्ति अर्चनादि देवदेवी विद्याधर करते है.

शेप ४४६ कुट तथा २०० कञ्चनगिरि ४ वृतलवैताढ्य ४ चितनिचित जमगमगग एव सर्व ६५७ स्थानपर देवीदेवतोका आवास (भुवन) हैं इति.

(६) तीर्थद्वार–जम्बुद्विपमें तीर्थ १०२ हैं यह लौकिक सास्वता तीर्थ है जिस समय चक्रवरत खड साधनेको जाते हैं

तव्र वहांपर ठेरते है यह तीर्थाध्यष्टायक देवोंका अष्टमतप करते है या तीर्थंकरोंका जन्माभिशेषके लिये उन्ही तीर्थोंका जल औषधि आदि देव लाते है इत्यादि वह तीर्थका नाम–मागध, वरदाम और प्रभास एवं चक्रवरतकि ३४ विजयमें तीन तीन तीर्थ होनासे १०२ तीर्थ है.

(७) श्रेणी–जम्बुद्विपमें श्रेणी १३६ है यथा वैताढ्य-गिरि २५ जोजनका धरतिसें उंचा है उन्ही पर्वतके उपर धरतिसं १० जोजन उपर जावे तव विद्याधरोंकी २ श्रेणि (१) दक्षिण श्रेणि जिस्में ५० नगर है (२) उत्तर श्रेणि जिस्में ६० नगर आते है उन्ही विद्याधरोंकी श्रेणिसे दश दश जोजन उंचा जावे तव अभियोग देवोंकी दो दो श्रेणि आति है (१) दक्षिण श्रेणि (२) उत्तर श्रेणि वहांपर व्यंतरदेवता पूर्व कीये हूवे सुकृतके फल भोगवते है एवं ३४ वैताढ्यपर च्यार च्यार श्रेणि है सर्व मीलके १३६ श्रेणि होती है इति.

(८) विजयद्वार–जम्बुद्विपमें ३४ विजय है जहांपर चक्र-वर्त छे खंडको विजय करते है अर्थात् छे खंडसें एक छत्र-राज करते है.

महाविदेहक्षेत्र एक है परन्तु उन्हींमें ३२ विजय अलग अलग है जिस्में १६ विजय मेरूपर्वतसे पूर्वकी तर्फ है और १६ विजय मेरूपर्वतसे पश्चिमकि तर्फ है जो पूर्व महाविदेहमें १६

विजय है उन्हींके विचमें सीता नाम नदी है वास्ते सीतानदीके उत्तर तटपर ८ विजय और दक्षिण तटपर आठ विजय है इसी माफीक पश्चिम महाविदेहमें सीतोदा नदीके दोनों तटपर आठ आठ विजय है एव विदेहक्षेत्रमें ३२ विजय है उन्हीका नाम—

पूर्व विदेह सीतानदी		पश्चिम विदेह सीतोदानदी.	
उत्तर तट.	दक्षिण तट	उत्तर तट	दक्षिण तट
१ कच्छ विजय	वच्छ विजय	पद्म विजय	विप्रा विजय
२ सुकच्छ ,,	सुवच्छ ,,	सुपद्म ,,	सुविप्रा ,,
३ महाकच्छ ,,	महावच्छ ,,	महापद्म ,,	महाविप्रा ,,
४ कच्छवती ,,	वच्छवती ,,	पद्मावती ,,	विप्रावती ,,
५ आवर्ता ,,	रमा ,,	मरवा ,,	वग्गु ,,
६ मगला ,,	रमक ,,	कुमुदा ,,	सुवग्गु ,,
७ पुरकला ,,	रमणीक ,,	निलीना ,,	गन्धीला ,,
८ पुष्कलावती,,	मगलावती,,	शलीलावती ,,	गन्धीलावती ,,

प्रत्यक विजय १६५९२ जोजन दो कलाकी दक्षिणोत्तरमें लम्बी है और २२१२॥। जोजन पूर्व पश्चिममें चोडी है तथा एक भरतक्षेत्र और दुसरा एरवतक्षेत्र एव चक्रवरतोंकी ३४ विजय समझना। इन्ही चौतीस विजयमें ३४ दीर्घ वैताड्य

चौतीस तमस गुफा ३४ खंडप्रभागुफा ३४ राजधानी ३४ नगरीयों ३४ कृतमाली देव ३४ नटमाली देव ३४ ऋषभकुट ३४ गंगानदी ३४ सिन्धुनदी यह सर्व पदार्थ सास्वता है शेष नाम देखो जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीसे इति.

(६) द्रहद्वार–जम्बुद्विपके अन्दर शोला द्रह है यथा पद्मद्रह, महापद्मद्रह, तीगीच्छद्रह, केशरीद्रह, महापुडरिकद्रह, पुडरिकद्रह, यह छे द्रह छे वर्षधर पर्वतोंके उपर है और पांच द्रह देवकूरु युगल क्षेत्रके अन्दर है निषेडद्रह, देवकूरुद्रह, सूर्यद्रह, सूलसद्रह, विद्युत्प्रभद्रह तथा पांच द्रह उत्तरकूरु युगल क्षेत्रके अन्दर है निलवन्तद्रह, उत्तरकूरुद्रह, चन्द्रद्रह एरवरत द्रह मालवन्तद्रह एवं सर्व १६ द्रह जम्बुद्विपके अन्दर है।

(१) पद्मद्रह—चुलहेमवन्त पर्वत १०५२–१२ पहूल है जिन्होंका मध्य भागमे पद्मद्रह है वह पूर्व पश्चम एक हजार जोजनको, लम्बो और उत्तर दक्षिणमें ५०० जोजनको चोडो दश जोजनको उंडो परिपूर्ण निर्मल पाणीसे भरा हूवा है वह द्रह अनेक कमलों कर अच्छा शोभनिक है। कमलोंका विवरण।

द्रहके मध्य भागमे श्रीदेवीका बडा कमल है उन्ही के चौतर्फ भंडारी देवोंका १०८ कमल है, च्यार कमल मेहत्तरीक देवीयोंका है, सात कमल श्रीदेवीके अनिकाके अधिपति देवोंका

है, ४००० कमल श्रीदेवीके सामान्यक देवोंका है, १६००० कमल श्रीदेवीके आत्मरचक देवोंका है, श्रीदेवीके अभितर परिषदाका ८००० मध्यम परिषदाका १०००० वाह्य परिषदाका १२००० एव ३०००० कमल परिषदा देवोंका है, इतना कमलों के नाहार फीरता तीन कोट हैं, जिस्मे अन्दरके कोटमें ३२००००० कमल । मध्य कोटमें ४०००००० कमल । नाहारके कोटमें ४८००००० कमल हैं । सर्व मीलके १२०५०१२० कमल-पुष्प हैं । कमलका परिमाण श्रीदेवीका कमल एक जोजनका पहूला आदा जोजनका जाटा दश जोजन जलमें उढा है दो कोप जलसे उचा है सर्व उचा दश योजन साधिक हैं । उन्ही कमलका मूल वज्र रत्नमय है अरिष्टरत्नमय कन्द वैडूर्यरत्नमय नालका पत्र है जम्बुनान्द सूवर्णमय अन्दरका पत्र है तपाये हूवे सूवर्णमय कमलका केशरा है नाना प्रकार मणिमय कमल कि पुष्करणा है सुवर्ण कि कीरणका है यह कीरणका दो कोप की पहूली लम्बी है एक कोपकी जाडी है उन्ही कीरणका के उपरका भाग अति सुन्दर मनोहर है । उन्ही के अन्दर श्रीदेवीका भुवन है यह भुवन एक कोप लम्बा आंर आदा कोप का पहूला है आर देशोंन एक कोपका उचा है । अनेक स्थभापुतलीयों चन्द्रकन्तादि कर शोभनिक है यह देवोंको भी देखने योग्य है। उन्ही भुवनके तीन दरवाजा दक्षिण दरवाजो पूर्वदिशा० उत्तरदिशा यह दरवाजा ५०० धनुष्यका उचा है अढाइसो धनुपका पहूला है

तोरण ध्वज आदि चित्रोसें सुन्दर है उन्ही भुवनके मध्यभागमें एक मणिपीट चौतरा है ५०० धनुप लम्बा २५० धनुप चोडा उन्ही चौतरा उपर एक देवशय्या है वह वर्णन करनेयोग है यावत् वहांपर श्रीदेवी अपने देवदेवीके साथ पूर्वउपार्जित शुभ फलोकों भोगवती हूइ आनन्दमें रेहती है। यह पद्मद्रहके बाहार एक पद्मवेदिका और एक वनखंड कर वीटा हूवा है शेपाधिकार नदीद्वारसें लिखेंगे इसी माफीक सीखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रह भी समझना परन्तु उन्हीके देवी लक्ष्मिदेवीका भुवन या कमल है इसी माफीक देवकूरु उत्तरकूरु युगल क्षेत्रोमें १० द्रहका भी वर्णन समझना परन्तु उन्ही द्रहोके बाहार वेदिका दो दो है कारण उन्ही द्रहोसें सीता और सीतोदानदी वेदिकाकों भेदके द्रहमें आति है और वेदिकाकों भेदके द्रहसें निकलती है वास्ते वेदिका दो दो है शेप अधिकार पद्मद्रह माफीक समझना। १२।

(१३) महापद्मद्रह—महाहेमवन्तपर्वतके उपर मध्यभागमें २००० जो० लम्बा और १००० जो० चोडा दश जो० उंढा महापद्म नामका द्रह है उन्होंपर ह्रैं नामा देवीका कमल तथा भुवन है परन्तु कमलका मान दुगुणा समझना इसी माफीक रूपिपर्वतपर महापुंडरिकनामा द्रह है परन्तु उन्हीपर बुद्धिदेवीका कमल और भुवन ह्रैं देवी माफीक समझना। १४।

(१५) तीगच्छद्रह-निषेडपर्वत उपर मध्यभागमें तीगच्छनामा द्रह ४००० जो० लम्बो २००० जो० चोडो दश जोजनका उढा है कमल भुवन वहापर घृतिदेवीका है ऊँ देवीमे छुगुण परिमाणवाला समझना इसी माफीक निलवन्तपर्वतपर केशरीद्रह भी समझना परन्तु वह कीर्तिदेवीका कमलभुवन समझना तथा युगलक्षेत्रका दश द्रहके नामवाले देवता मालिक है सब देवदेवीयोंकी एक पल्योपमकि स्थिति है और राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें समझना शोला द्रहका सर्व कमल १६२८०१६२० कमल भवे रत्नमय हैं इति.

द्रह नाम.	पर्वत उपर.	लम्बा.	चोडा	उटा.	देवी
पद्मद्रह	चुलहेम०	१०००	५००	१०	श्रीदेवी
महापद्म ,,	महाहेम०	२०००	१०००	१०	लछिम
तीगच्छ ,,	निषेड	४०००	२०००	१०	घृति
केशरी ,,	निलवन्त	४०००	२०००	१०	बुद्धि
महापुंडरिक,,	रूपि	२०००	१०००	१०	ह्रीँ
पुंडरिक ,,	सीखरी	१०००	५००	१०	कीर्ती
दशद्रह ,,	जमनीपर	१०००	५००	१०	देवता १०

ऊपरके साथ जोडना ४ देवों

(१०) नदीद्वार-जम्बुद्विपमें १४५६०९० नदी है जिसमें चुलहेमवन्तपर्वत उपर पद्मद्रह है उन्ही द्रहसे तीन नदी नीकली

है जिस्में प्रथम गंगानदी—पद्मद्रहके पूर्वदिशाका तोरणसे पूर्व-दिशामें ५०० जोजन चुलहेमवन्तपर्वतके उपर गइ वह गंगा-वृतनकुट है उन्हीसे टकर खाती हूइ ५२३ जो० ३ कला दक्षिणदिशा पर्वत उपर गइ वहांसे जेसे घटके मुखसे जौरसे पाणी न पडता हो या तुटे हूवे मौतीयोंका हारकी माफीक मगरमच्छके मुंहके आकार जिह्वासे साधिक १०० जो० उपरसे गंगाप्रभासानामा कुंडमें पाणी पडरहा है वह जिह्वा आदा जोजन की लम्बी और सवाछे जोजनकी पहूली है विकसा हूवे मगर-मच्छके मुहके संस्थान है सर्व वज्र रत्नमय अच्छी सुन्दर आका-रवाली है जिह्वा-नालिकाकों केहते है। चुलहेमवन्तपर्वतपर पद्मद्रहसे गंगानदी गंगाप्रभासकुंडके अन्दर पडति है वॉह गंगा-प्रभासकुंड ६० जोजन लम्बो पहूलो १० जो० उंढो है जिस्की रुपामय उपकंठा वज्र पाषाणमय तलो है, मुखसे अन्दर जाणके वेसा विवद प्रकारके रत्नकरा बन्धा हूवा है सुवर्णका मध्यभाग, रुपाकी वेलुरेत पात्थरी हूइ है गंभीर शीतल जलसे भरा हूवा है अनेक कमलोंके पत्रसे आच्छादित है बहूतसे कमल उत्पल कमल पद्म० नालिनंकुमुद० शतपत्र० सहस्रपत्रादि कमल उन्ही गंगाप्रभासकुंडके तीन दरवाजा है पूर्वदिशा दक्षिणदिशा पश्चिमदिशा तीनों दरवाजाके आगे पगोतीया है उन्होंको उपरका भाग रिष्टरत्नमय वैडूर्यरत्नमय स्थांभा सूवर्ण रुपाका पाटीया लोहीताक्ष रत्नोसें पाटीयोंकि सन्धी जोडी हूइ है

वज्ररत्नोंका खीला है मणिरत्नका आलम्बन (हाथ पकडनेका) पागोतीयेंके उपर प्रत्यक प्रत्यक तोरण है वह तोरण अनेक मणि मौक्ताफलहार आदि अनेक भूषण तथा चित्र कर सुन्दर है उन्ही गगाप्रभामकुडके मध्यभागमें एक गगाद्विपनामका द्विपा है। वह आठ जोजन लम्बा पहूला है दो कोश पाणिसे उचा है। सर्व रज रत्नमय अच्छो सुन्दर है। उन्ही द्विपका मध्यभाग पाच प्रकारके मणिसे मृदु स्पर्शवाला है उन्हीके मध्यभागमें गगादेवीका एक भुवन है वह एक कोपका लम्बो आदा कोशका पहूला देशोना एक कोशका उचा है अनेक स्थभापुतलीयों मौक्ताफलकी मालावों यावत् श्रीदेवीना भुवन माफीक मनोहर है वहा गगादेवी सपरिवार पूर्व किये हूवे सुकृतके फल भोगवती हूइ विचरे हैं कुडका या द्विपका और देवीका नाम सास्वता है अगर वह देवी चवतो दुसरी देवी उत्पन्न हूवे परन्तु नाम तो वहा ही गगादेवी रहेता है।

गगाप्रभासकुडका दक्षिणके दरवाजेमें गगानदी निकली हूइ उत्तर भरतक्षेत्रमे अन्य (छोटी) ७००० नदीयोंको साथ लेती हुइ वैताढ्यपर्वतकी खटप्रभागुफाके निचेसे दक्षिणभरतमें आती हुइ वहासे ७००० नदीयों अर्थात् सर्व १४००० नदीयोंको साथमें लेके जम्बुद्विपकी जगतिको भेदती हुइ पूर्वका लवणसमुद्रमें जा-मीली है इसी माफीक सिंधुनामा नदी भी

चुलहेमवन्तपर्वतका पद्मद्रहके पश्चिम तर्फसे निकली सिंधुप्रभाकुंडमें होके पूर्ववत् १४००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिमके लवणसमुद्रमें परन्तु वहां तमसप्रभागुफाके निचासे तथा कुंडका नाम सिंधुकुंड तथा सिंधुदेवीका भुवन समझना एवं दोनों नदीयोंका परिवार २८००० नदीयों है। वह पर्वतपर निकलती आदा जोजनकि उंडी और ६। जोजनकी विस्तारवाली थी पीछे क्रमसर वढते वढते जहां लवणसमुद्रमें मीली हैं वहांपर पांच गाउकी उढी और ६२'। जो० विस्तारवाली हूइ थी.

चुलहेमवन्तपर्वतके पद्मद्रहके उत्तरके तोरणसे रोहीता नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रभासनामा कुंडमें पडती हैं यह नदी हेमवय युगलक्षेत्रमें गइ है अधिकार गंगानदीके माफीक परन्तु नीकलती एक गाउकी उढी १२॥ जोजनका विस्तारवाली है तथा रोहीतप्रभासकुंडका विस्तार दुगुण १२० जोजनका समझना जहां लवणसमुद्र पासे १० गाउकी उढी १२५ जोजन विस्तारवाली है इसी माफीक महाहेमवन्तपर्वतपर महा पद्मद्रहसे रोहीतंसानदी हेमवय युगलक्षेत्रमें आइ है परिमाण सर्व रोहीता० माफीक इन्ही दोनों नदीयोंके २८००० नदीयोंका परिवार समझना। एवं ५६०००

महाहेमवन्तपर्वतका महापद्मद्रहका उत्तरका तोरणसे हरिकन्तानदी हरिवास युगलक्षेत्रमें गइ है वह निकलतीं २

गाउ उंडी २५ जोजन विस्तारवाली हरिक्रन्तकुंड २४० जोज-नकों परिवार ५६००० शेष अधिकार गंगानदी माफीक समझना और निषेडपर्वतपर तीगच्छद्रहसे हरिसलीलानदी हरिवास युगलक्षेत्रमें आइ है परिमाणादि सर्व हरिकन्तवत् परन्तु कुंडका नाम हरिसलीला है.

निषेडपर्वतपर तीगच्छद्रहके उत्तरके तोरणसे सीताना-मकी नदी एक जोजनकी उंडी ५० विस्तारवाली सीताकुंड ४८० जोजनका है उन्हीके अन्दर आती हुइ देवकूरू युगल क्षेत्रका दो विभाग करती हुइ पाच द्रहको भेदती हुइ देवकूरुसे ८४००० नदीयों साथ लेती हुइ मेरुपर्वतके पास होके भद्रशा-लवनका दो विभाग करती हुइ पश्चिम महाविदहका मध्यभागमें चलती हुइ चक्रवरतकी १६ विजयके प्रत्यक विजयकि गगा और सिधुनदीयों सपरिवार अर्थात् चौदा चौदा हजार नदी-योंका परिवारसे गगासिंधु नदीयों सीतानदीमें मीलती हुइ सर्व ५३२००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिममें मुडकर लवणसमुद्र में जा-मीली है ।

एव निलवन्तपर्वतपर केशरीद्रहसें सीतोदानदी उत्तरकुरु युगलक्षेत्रके पूर्ववत् ८४००० नदीयोंसे पूर्व महाविदहमें पूर्ववत् कुल ५३ ००० नदीयोंके साथमें पूर्व मुडकर लवणसमुद्रमें जा-मीली है सीतावत् जेसे दाक्षिणकी तर्फसे केहते आये है इसी माफीक उत्तरकी तर्फ भी समझना ।

निलवन्तपर्वतके केशरीद्रहके उत्तरके तोरणसे नरकन्ता और रुपीपर्वतके महापुंडरिकद्रहके दक्षिणका तोरणसें नारी-कन्ता यह दोनों नदीयां रम्यक्वास युगलक्षेत्रमें कुंड और देवीका नाम नदी माफीक विस्तार परिवार देखो यंत्रसें.

रुपीपर्वतपर महापुंडरिकद्रहके उत्तरके तोरणसे रुपकुल नदी और सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहका दक्षिणका तोरणसे सुवर्णकुलानदी यह दोनों नदी एरणवय युगलक्षेत्रमें गइ है परिवारादि देखो यंत्रसे.

सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहके पूर्व और पश्चिम तोरणसे रता रक्तवंति यह दो नदीयों एरवरतक्षेत्रमें गंगा सिन्धुवत् चौदा चौदा हजार नदीयोंके परिवारसे लवणसमुद्रसें प्रवेश कीया है नदीके माफीक कुंडका या देवीयोंका नाम समझना कुंड वा भुवनका अधिकार गंगादेवी माफीक है.

कोष्टक संकेत सूचिनाः—

नि० उ०—निकलतो उढी. प्र० उ०—समुद्रमें प्रवेश होतो उढी.
नि० वि०—निकलतो विस्तार. प्र० उ०—समुद्रमें प्रवेश होतो विस्तार.

न.	नदी.	पर्वतसे	द्रहसे	नि० उ०	नि० वि०	प्र० उ०	प्र. वि.	परिवार.
१	गगनदी	चुलहेम	पद्म	०॥ गाउ	६। जो०	१।जो०	६२॥	१४०००
२	सिन्धु ,,	,,	,,	,,	,,	,,	जोजन	१४०००
३	रोहिता ,,	,,	,,	१ गाउ	१२॥ जो	२॥जो.	१२५	२८०००
४	रोहितसा ,,	महाहेम०	महापद्म	,,	,,	,,	जोजन	२८०००
५	हरिकन्ता ,,	,,	,,	२ गाउ	२५ जो.	५ जो०	२५०	५६०००
६	हरिशलीला	निषेड	तीगन्छ	,,	,,	,,	जोजन	५६०००
७	सीता ,,	,,	,,	४ गाउ	५ जो.	१०जो.	५००	५३२०००
[illegible]	सीतोदा ,,	निलवन्त	केशरी	,,	,,	,,	जोजन	५३२०००
९	नरकन्ता ,,	,,	,,	२ गाउ	२५ जो.	५ जो०	२५०	५६०००
१०	नारिकन्ता	रुपि०	महापुड०	,,	,,	,,	जोजन	५६०००
११	रुपकुला	,,	,,	१ गाउ	१२॥ जो	२॥जो	१२५	२८०:००
१२	सुवर्णकुला	सिखरी	पुडरिक	,,	,,	,,	जोजन	२८०००
१३	रक्ता ,,	,,	,,	०॥ गाउ	६। जो	१।जो०	६२॥	१४०००
१४	रक्तवन्ती	,,	,,	,,	,,	,,	जोजन	१४०००
७८	चिदेहकी ६४ ,,	कुर्डोसे	धरतिपर	,,	,,	,,	,,	१४०००

एवं सर्व मीली १४५६००० नदीयों परिवारकी हूइ तथा यंत्रमें १४-६४ मीलके ७८ मूल नदीयों हूइ.

महाविदेहक्षेत्रके च्यार विभागमें ३२ चक्रवरतकि विजय है जिस्का २८ अन्तरोंमें १६ तो वस्कारपर्वत पेहले लिख आये है और १२ अन्तरमें वारह अन्तर नदी है यथा—गृहवन्ति, द्रहवान्ति, पंकवन्ति, तंतजला, मंतजला, उगमजला, क्षीरोदा, सिंहसोता, अन्तोवहनि, उपिमालनि, फेनमालनि, गंभीरमालनि यह १२ नदीयों प्रत्यक नदी १२५ जोजनकी चोडी है अढाइ जो० उंढी है १६५९२ जोजन और दो कलाकि लम्बी है एवं सर्व मीलके १४५६०९० नदीयों जम्बुद्विपमें है यह थोकडा सामान्य बुद्धिवाला सुखपूर्वक समझ शके वास्ते संक्षेपसें ही लिखा गया है विशेष विस्तारकि इच्छावालोंके लिये गुरुमहाराजकी विनयभक्ति कर जम्बुद्विप प्रज्ञासीसूत्र श्रवण करना चाहिये इत्यलम् ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥



शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध

भाग १४ वा.



थोकडा नं. १



सूत्र श्री जीवाभिगमसे



(लवणसमुद्राधिकार)

लवणसमुद्र—जम्बुद्विप एक लक्ष जोजनका है उन्हीके चौतर्फ वलीयाकार दो लक्ष जोजन विस्तारवाला लवणसमुद्र है जिनहोके अन्दर कि परद्धि जम्बुद्विपके परद्धि माफीक है और बाहार कि परद्धि १५८११३९ जोजन साधिक है लवणसमुद्रका पाणीका उढास जम्बुद्विप कि जगति (कोट) से ९५ जोजन लवणसमुद्रमें आवे तब एक जोजन उढा है पचाणवेमो ९५०० जोजन जगतिसे लवणसमुद्रमे जावे तब १०० जों० उढा तथा ९५००० जोजन जावे तब १००० जो० उढो आवे इसीमाफीक घातकि खण्डसे भि ९५००० जो० लवणसमुद्रमे आवे तो १००० जो० उढो आवे दोनों तर्फ से ९५०००-९५००० जो० आनासे मध्यमे १०००० जोजन लवणसमुद्र

१००० जोजन उढा है अर्थात् जम्बुद्विप कि जगतिसे चौतर्फ पच्चणवे पचाणवे हजार जोजन जानेपर चौतर्फ दश दश हजार जोजन लवणसमुद्र एक हजार जोजनका उढ़ा है वहासे पचणवे पचणावे हजार जोजन जानेपर धाताकि खंड द्विप आता है। लवणसमुद्रके च्यारों दिशामे च्यार दरवाजा है वह जम्बुद्विप माफीक समझना।

लवणसमुद्रके मध्यभाग जो १०००० जोजनका गोल चक्राकार १००० जोजनके उढस पाणी है उन्ही लवण-समुद्रके मध्यभागमे च्यार पाताल कलशा है (१) पूर्वदिशामे वडवा मुख पातालकलशो (२) दक्षिणदिशामे केतुनामा पाता-कलशो (३) पश्चिमदिशामे जेपु (४) उत्तरादिशामें इश्वर पाताल कलशो। यह च्यारो कलसा लक्ष लक्ष जोजन परिमाण लम्बा है मध्यभागमे लक्ष जोजन विस्तारवाला है कलशोका अधोभाग तथा उपरका मुख दश दश हजार जोजनका है उपर कि ठीकरी एक हजार जोजन कि जाडी है कलशोंका मुखपर हजार हजार जोजन लवण समुद्रका पाणी है। एकेक कलशाके विचमे अन्तर २१९२६५ जोजनका है उन्ही प्रत्यक अन्तरामे १९२१ छोटे कलशा है च्यारो अन्तरोंमे ७८८४ छोटे कलशा है कारण एकेक अन्तरामे कलशोंकी नव नव श्रेणि है उन्ही श्रेणिमे कलशा २१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३ एवं नव श्रेणिका १९७१ कलसा है च्यारो

अन्तराके ७८८४ कलशा होता है वह सर्व छोटा कलशा एक हजार जोजनका लम्बा और मध्यभागमे १००० निस्तार तथा ओघो भाग या मुख सो सो जोजनका और दश जोजनकी उपर ठीकरी है एव सर्व ७८८८ कलशा है। उन्ही कलशोके तीन तीन भाग करना जिस्मे निचेके ती भागमे वायु है मध्यके ती भागमे वायु और पाणी है उपरके ती भागमे पाणी है। जो निचेका भागमे वायु है वह वैक्रय शरीर करे उन्ही समय उपरका पाणी उन्छलने लग जात है वह प्रत्य-दिनमें दो वरात पाणी उन्छा ला देता है..

तन लवणसमुद्रकि वेल (दगमाला) का पाणी उन्छलता है परन्तु तीर्थंकर चक्रवरतादि पुन्यवानोंका प्रभावसे एक बुद भी निचि नहीं गिरती है अथवा यह लोकस्थिति है सास्वता भाव वर्तते है और च्यार पातालकलशोंका अधिपति च्यार देवता है कालदेव, महाकालदेव वेलवदेव, प्रभजनदेव एक पल्योपमकि स्थिति तथा ७८८४ कलशोंका देवतोंकी आधा पल्योपमकि स्थिति है। इति पातालकलशा।

लवणसमुद्रमें पाणिका दगमाला १०००० जो० चोडा निस्तारवाला १००० जो० उढा है १६००० जो० का उचा है सर्व १७००० जो० का है। जब पाणि उन्छलता है तब दो कोश उची सीखा आ–जाती है।

लवणसमुद्रके मध्यभाग अर्थात् दोनों तर्फ ६५००० ।

६५-०० जोजन छोडदेनेपर मध्यभागमें १०००० जोजन लवणसमुद्रका पाणी उर्ध्व भीतकि माफीक १६००० जोजन उंचा चला गया है और १००० जो॰ निचा उढा है उन्ही पाणीका जम्बुद्विपकि तर्फसे हाथमें चाटु लिये हूवे ४२००० देवता और दगमालके उपर ६०००० देवता तथा घातकि खण्डाकि तर्फसे ७२००० देवता पाणीकों धना रहा है। एवं १७४००० देवता पाणीकों धना रहा है। इन्ही देवतोंकों वेलन्धर देव भी कहा जाता है कारण यह देव पाणीकी वेलकों धरनेवाला है तथा इन्ही दगमालाकों गोतीत्थ भी कहेते है।

उक्त वेलन्धर देवतोंका आवासपर्वत—जम्बुद्विपकी जगतिसे ४२००० जोजन च्यारो दिश लवणसमुद्रमें जावें तव पूर्वदिशमें गोथुभ—दक्षिणमें दगाभास—पश्चिममें संख—उत्तरमें दगसीमा एवं च्यार पर्वत च्यारों दिशोमें है इशानकोनमे ककेटिक—अग्निकोनमे विद्युत्प्रभा-नैऋतकोनमे केलाश—वायुकोनमे अरूणप्रभ एवं च्यार पर्वत च्यारों कोनोंमे है एवं ८ पर्वत उचा १७२१ जोजन मूल पहूला १०२२ जोजन मध्यमे ७२३ जो. और सीखरपर ४२४ जोजन विस्तारवाला है एकेक पर्वत के अन्तरो ७२११४$\frac{८}{१३}$ है रत्न और कनकमय सर्व पर्वत है च्यार दिशाका च्यारों पर्वत वेलन्धर देवोंका है गोथभदेव, शिवदेव, संखदेव, मणोशीलदेव, इन्होंकी एक पल्योपमकि स्थिति है और विदिशाके पर्वतके नामका देव पल्योपम कि

स्थितिवाले अनुवेलन्धर देवोंका पर्वत है इन्ही आठों पर्वतोंपर वेलन्धरानुवेलन्धर नागराजा देवोंका आवास प्रासाद है सर्व रत्नमय देवत्तोंके योग्य वह प्रासाद ६२॥ जो. उचा ३१। जो का चोडा अनेक स्थभ कर अच्छा सुन्दर है। इति।

लवणसमुद्रमे छपनान्तरद्विप है उन्हों के अन्दर पल्योपम के असख्यात भागके आयुष्यवाला ओर ८०० धनुष्यकि आवग्गहानावाले युगल मनुष्य रहेते है जम्बुद्विपके चुलहेमवन्त ओर सीखरी पर्वत के निश्राय (सामिपसे) लवणसमुद्रमें दोडोके आकार टापुनों कि लेन गइ है जेसे जम्बुद्विप कि जगतिसे ३०० जोजन लवणसमुद्रमें जावे तब पेहला द्विपा ३०० जोजनका विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपासे ४०० जोजन तथा जगतिसे भि ४०० जो० जानेपरे दुसरा द्विपा ४०० जोजनके विस्तारवाला आता है। उन्ही द्विपासे ५०० जोजन तथा जगतिसे भी ५०० जोजन जानेपर तीसरा द्विपा ५०० जो० के विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपासे या जगतिसे ६०० जोजन जानेपर चोथो ६०० जो० विस्तारवाला द्विप आता है। उन्ही द्विपसे या जगतिसे ७०० जो० जानेपर ७०० जो० विस्तारवाला पाचवा द्विप आता है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ८०० जो० जानेपर ८०० जो० विस्तारवाला छठा द्विप आते है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ९०० जो० जानेपर ९०० जो० विस्तारवाला सातवा द्विप आता है सर्व लवणस-

मुद्रके ८४०० जोजन क्षेत्रमे युगल मनुष्योंका द्विपा है यह एक लेन (दाड) पर ७ द्विप है इसी माफीक पूर्व लवणसमुद्रकी ४ दाडो ओर पश्चिम लवणसमुद्रकी ४ दाडो एवं आठ दाडो पर ५६ द्विपा है उन्हो मे रहेनेवाला युगल मनुष्योंका मनोवंच्छीत सुख दश प्रकारका कल्पवृक्ष पूर्ण करते है इति।

लवणसमुद्रके अधिष्टायक लवणस्वस्थिक देव का गोतम द्विप नामका द्विपा—जम्बुद्विपकि जगतिसे पश्चिमदिशा १२००० जोजन लवणसमुद्रसे जावे तव १२००० जोजनके विस्तारवालों गोतमद्विपा आता है वेदिका वनखंड कर शोभनिक है उन्ही गोतमद्विपापर स्वस्थिकदेवका प्रासाद है वर्णन करने योग्य है वहापर देव निवास करते है इति।

सूर्यका द्विपा—जम्बुद्विपका दो सुर्य ओर अन्दरका लवणसमुद्रका दो सूर्य एवं च्यार सूर्यका च्यार द्विपा गोतम द्विपा के च्यारो तर्फ है अर्थात् सूर्यके च्यारो द्विपोंसे वीटा हूवा मध्य भागमे गोतमद्विपा है।

चंद्राद्विप—जम्बुद्विपकि जगतिसे पूर्वकि तर्फ लवणसमुद्रमे १२००० जोजन जानेपर दो जम्बुद्विपका चन्द्र दो अन्दरके लवणसमुद्रका चन्द्र एवं च्यारों चन्द्रका च्यारों द्विप है सूर्य ओर चन्द्रका द्विपा १२००० बाराह २ हजार जोजन विस्तारवाला है उन्ही द्विपोपर अपना अपना प्रासाद है वहाँपर देवता आते जाते निवास करते है।

धात कि खड कि तर्फससे लवणसमुद्रमे १२००० जोजन आनेपर लवणसमुद्रके नेलके बाहारका पूर्वमे दो चन्द्र द्विपा और पश्चिममे दो सूर्य द्विपा बारह बारह हजार जोजनके विस्तारवाला है इन्हीं १२ द्विपों उपर देवतोंका भुवन-प्रासाद है वह प्रत्यक प्रासाद ६२॥ जोजनका उचा ३१। जोजानके विस्तारवाला अनेक स्थामादिमे अच्छा शोभनिक है लवण-समुद्रके चौतर्फ पदम्वर वेदिका है विजयादि च्यार दरवाजा है दरवाजे दरवाजे ३९५२८०।ई का अन्तर है लवणसमुद्रमे ५०० जो० का मच्छ भी है।

इति लवणसमुद्राधिकार।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर २.

सूत्र श्री जीवाभिगम प्र ४

(धातकिखड द्विपादि)

लवणसमुद्रके चौतर्फ चलीयाके आकार च्यार लक्ष जोजन विस्तारवाला धातकिखड नामका द्विप है वह च्यार लक्ष

जोजनका पहूला है ४११०९६१ जोजन साधिक पराद्धि है उन्ही धातकिखंड द्विपमे उत्तर दक्षिण लम्बा च्यार लक्ष जोजनं । पूर्व पश्चिम एक हजार जोजनका पहूला मूलमें एक हजार जोजन चोडा यावत् सीखरपर पांचसो जोजन परिमाणवाले दो इक्षुकार पर्वत आजानेसे धातकिखंडके दो विभाग हो गये हैं (१) पूर्व धातकिखंड (२) पश्चिम धातकिखंड इन्ही दोनों विभागके अन्दर दो मेरुपर्वत है वह मेरुपर्वत एक हजार जोजन धरतीमें उंढा और ८४००० जोजन धरतीसे उंचा एवं ८५००० जोजनका प्रत्यक मेरु है । वह मेरुपर्वत च्यार वन करके अलंकृत है दुसरे पर्वत या वासा आदि सर्व जम्बुद्विपसे दुगुणा समझना परन्तु क्षेत्रका लम्बा चोडा अधिक है और धातकिखंड द्विपमें १२ चन्द्र और १२ सूर्य सपरिवार है शेषाधिकार अढाइ द्विपका यंत्रमें लिखा जावेगा इति ।

धातकिखंड द्विपके चौतर्फ गोल वलीयाकार ८०००० जोजनके विस्तारवाला कालोदद्धि नामका समुद्र है वह चौतर्फ आठ लक्ष जोजनका पहूला है ९१७०६०५ जोजन साधिक पराद्धि है एक पद्मम्बर वेदिका एक वनखंड च्यार दरवाजा और दरवाजे दरवाजे अन्तर २२९२६४६ जो० है वह समुद्र हजार जोजनका उंढा है अच्छा जलसे परिपूर्ण भरा हूवा ।

कालोदद्धि समुद्रके चौतर्फ गोल वलीयाकार पुष्कर नामका द्विप है वह १६००००० जोजनका चौतर्फ विस्तार-

वाला है १६२६३८६४ जोजन साधिक परादि है एक वेदिका एक वनखड च्यार दरवाजा है वर्णन पूर्ववत् इन्ही पुष्कर द्विपके मध्यभागमें मानुषोत्र नामका पर्वत बेठा हूवा सिंहके आकारके हैं वह १७२१ जोजनका धरतीसे उचा ४३' धरतीमें १०२२ मूल पहूला ४२४ मध्य पहूला ७२३ उपरसे पहूला सर्व तपाये हुवा सूवर्णमें हैं वह पर्वत पुष्करद्विपका दो विभाग करदिया है (१) अभितर पुष्कर्द्ध (२) बाह्य पुष्कर्द्ध जिसमें अभितरका पुष्कर्द्ध द्विपमें मनुष्य निवास करते है अर्थात् मानुषोत्रपर्वतके अन्दर जो पुष्कर्द्धक्षेत्र हैं उन्हीके अन्दर मनुष्य निवास करते हैं । बाहार केवलतीर्यंच हैं ।

पुष्कर्द्धक्षेत्रके मध्यभाग दक्षिणोत्तर दिशा आठ आठ लक्ष जोजनका दो इक्षुकारपर्वत आठ आठ लक्ष जो० लम्बा एक हजार जोजनका उचा २५० जो० धरतीमें मूल हजार जो० का विस्तार सीखरपर पांचसो जोजनका विस्तारवाला दोनों पर्वत पुष्कार्द्ध द्विपका दो विभाग करदिया है [१] पूर्व पुष्कार्द्ध [२] पश्चिम पुष्कार्द्ध । दोनों विभागमें दो मेरु यावत् धातकिखड द्विपके माफीक सर्व पदार्थ समझना परन्तु क्षेत्रका परिमाणादि विस्तार क्षेत्र माफीक अधिक हैं ।

जम्बुद्विप एक धातकिखड द्विप एक पुष्कार्द्ध आदा द्विप एवं अढाईद्विप और लवणसमुद्र एक कालोददि एक यह दो

समुद्र अर्थात् अढाइद्विप दोय समुद्रको समय क्षेत्र भी कहाजाते हैं कारन सिद्ध होता हैं सो इन्ही समय क्षेत्रसे ही होता है इन्ही अढाइद्विपके क्षेत्रका परिमाणः—

१ जम्बुद्विप पूर्व पश्चिम मीलके १ लक्ष जो०
२ लवणसमुद्र ,, ,, ,, ४ लक्ष जो०
३ धातकिखंड ,, ,, ,, ८ लक्ष जो०
४ कालोदद्धिसमु०,, ,, ,, १६ लक्ष जो०
५ पुष्कर्द्धद्विप ,, ,, ,, १६ लक्ष जो०

एवं मनुष्यलोक–समयक्षेत्र–अढाइद्विप ४५ लक्ष जोजनका है जिन्होकि परद्धि १४२३०२४९ जोजन साधिक है अढाइद्विपमें जो मौख्य पदार्थ है सो यंत्रद्वार बतलादिया जाता है।

पदार्थ.	(१) जम्बुद्विपमे.	(१) धातकिखंड.	०॥ पुष्कर्द्ध.
मेरूपर्वत	१	२	२
वर्षधरपर्वत	६	१२	१२
वस्कारपर्वत	१६	३२	३२
गजदन्ता	४	८	८
विजया	३२	६४	६४
मोटीनदी	९०	१८०	१८०

परिवारनदी	१४५६०००	२९१२०००	२९१२०००
द्रह	१६	३२	३२
वैताडपर्वत	३४	६८	६८
वटवैताड	४	८	८
वासा-क्षेत्र	७-१०	१४-२०	१४-२०
चन्द्रसपरिवार	२	१२	७२
सूर्यसपरिवार	२	१२	७२
तीर्थ	१०२	२०४	२०४
श्रेणी	६८	१३६	१३६
गुफा	६८	१३६	१३६
कुलपर्वत	२६९	५४०	५४०
कुलकुट	५२५	१०५०	१०५०
कुलसिद्धायतन	९१	१८२	१८२

मानोपोत्र पर्वतके बाहार जो आठलक्ष परिमाण पुष्करार्द्ध क्षेत्र है वह मनुष्य सुन्य है अन्दरका पुष्करार्द्ध क्षेत्र कि नदीयोंका पाणी मानोपोत्र पर्वतको भेदके बाहारका पुष्करार्द्धमे जाता है।

आगेके द्विपसमुद्रका नाम मात्र लिखा जाते है सर्व द्विपसमुद्रोंके च्यार च्यार दरवाजा है जम्बुद्विपके जगति है

शेष द्विपसमुद्रोंके वेदिका और वनखंड है परिमाण तथा चन्द्र सूर्य यंत्रमे लिखते है जीतना चन्द्र हैं इतना ही सूर्य हैं एकेक चन्द्र सूर्यका परिवारमे २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६९७५ कोडा कोड तारोंका परिवार समझ लेना।

अढाइद्विपके बाहार जोतीषीयों की चाल नही है मनुष्यका जन्म मृत्यु नही गाज विज वर्षाद बादर अग्नि भी नही है।

नाम	विस्तारपणो	चन्द्रसूर्य
जम्बुद्विप	१ लक्ष जोजन	२
लवणसमुद्र	२ ,, ,,	४
धातकिखंड	४ ,, ,,	१२
कालोदद्धिसमुद्र	८ ,, ,,	४२
पुष्करद्विप	१६ ,, ,,	१४४
पुष्करसमुद्र	३२ ,, ,,	४९२
चारुणि द्विप	६४ ,, ,,	१६८०
,, समुद्र	१२८ ,, ,,	५७३६
क्षीर द्विप	२५६ ,, ,,	१९५८४
,, समुद्र	५१२ ,, ,,	६६८६

घृत द्विप	१०२४ ,, ,,	२८८२८८
,, समुद्र	२०४८ ,, ,,	७७६४२४
इक्षु द्विप	४०९६ ,, ,,	२९६१११२०
,, समुद्र	८१९२ ,, ,,	६०८५६३२

इति सात द्विप सात समुद्र ।

सेवभते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर ३

(सूत्र श्री जीवाभिगम प्र० ३)



(नन्दीश्वर द्विप)

इक्षुसमुद्रके चौतर्फ गोल वलीयाके आकारे नन्दीश्वर द्विप है यह १६३८४००००० जोजनके विस्तारवाला है साधिक तीनगुण परद्धि है। नन्दीश्वर द्विपका भूमिविभाग अच्छा सुन्दर देवोंका मनको हरनेवाला है द्विपके मध्यभागमें च्यार पर्वत श्यामवर्णका अञ्जनागिरि पर्वत है पूर्वदिशामें पूर्वाञ्जगिरि। दक्षिणादिशामें दक्षिणाञ्जनागिरि । पश्चिमदिशामें पश्चिमाञ्जन-

गिरि और उत्तरदिशामें उत्तराञ्जनागिरि है प्रत्यक अञ्जनगिरि १००० जो० धरतिमें ८४००० जो० धरतिसे उंचा है मूलमें साधिक दश हजार जो० धरतिपर दश हजार जोजन और सीखरपर एक हजार जोजनके विस्तारवाला है। साधिक तीनगुणी परद्धि है सर्व अरिष्ट (श्याम) रत्नमय है।

प्रत्यक अञ्जनगिरिके सीखरका तला शममादलका तला माफीक साफ है। सीखरके तलाका मध्यभागमें एक सिद्धायतन अर्थात् जिनमन्दिर है वह १०० जो० लम्बो ५० जो० चोडो ७२ जो० उंचा अच्छा सुन्दर रमणिय है उन्ही जिनमन्दिरके च्यारो दिशामें च्यार दरवाजा है वह १६ जो० उंचा ८ जो० पहूला च्यारो दिशाके दरवाजोके आगे च्यार मुखमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चोडा १६ जोजन साधिक उंचा है। च्यार दरवाजा १६ जो० उंचा ८ जो० चोडा. उन्ही मुखमंडपके आगे प्रेक्षापधरमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चोडा साधिक १६ जोजन उंचा है उन्हीके अन्दर ८ जोजन विस्तारवाली मणिपिठ चौतरो है (ठाणायंगवृत्ति) सिंहसन देवदुपवस्त्र तथा वज्रका अंकुश उन्हीके अन्दर घटमान अर्दघटमान मौक्ताफलकी मालावों फुन्दाकर शोभनिक है। उन्ही प्रेक्षपधर मंडपके आगे एक स्थुभ (छत्री) वह १६ जोजन साधिक विस्तारवाली है उन्हीके च्यारो दिशामें च्यार मणिपिठ चौतरा है उन्होंके उपर च्यार

जिन प्रतिमापद्मासन शान्तमुद्रा स्थुभ सन्मुख मुख किया हूवे विराजमान हे। उन्हि स्थुभसे आगे एक मणिपिठ चौतरो है वह आठ जोजनके विस्तारवाला उन्होंके उपर चैत्य वृक्ष आठ जोजनकों उचो है वर्णन करने योग्य है उन्होंके आगे ओर भी आठ जोजनका मणिपिठ चौतारा है उन्होके उपर महेन्द्र ध्वज ६४ जोजनकी उची ओर भी छोटी छोटी विजय विजयन्ति ध्वज है उन्होंसे आगे नन्दा पुष्करणी वावी १०० जो० लम्बी ५० जो० चोडी १० जो० उडी अनेक कमल पागोतीया तौरण चमर छत्र ध्वज कर शोभनिक है। उन्ही वावी के च्यारो दिशा च्यार वनखंड है यह मूल सिद्धायतनके एक दिशा के पदार्थ कहा है एसे ही च्यारो दिशामे समझना तथा पूर्व दिशाके वनखडमे १६००० गोज आसन १६००० चोत्तुणा आसन पडा हूवा है एव पश्चिममे और दक्षिणोत्तर दिशामे आठ आठ हजार है वह देवतोंके आने जाने वखत वह बेठनेकों काम आते है।

मूल जिनमन्दिरके मध्य भागमे एक मणिपिठ चातरो १६ जोजन लम्बो पहूलो है उन्ही के उपर एक देवच्छंदो १६ जोजन लम्बो पहूलो साधिक सोला जोजन उचो है अच्छो सुन्दर सर्व रत्नमय है उन्ही मूल गुभारामे १०८ जिनप्रतिमा पद्मासन शान्तमुद्रा विराजमान है। एव प्रत्यक जिनमन्दिरे

१२४ जिनप्रतिमावों है जेसे यह एक अञ्जन गिरिपर एक मन्दिर कहा है इसी माफीक च्यारो अञ्जनगिरिपर च्यार मन्दिर समझना सर्व पदार्थ रत्नमय वडा ही मनोहर है।

प्रत्यक अंजनगिरिपर्वत के च्यारों दिशामे च्यार च्यार वावी है वह वावी एक लक्ष जोजन लम्बी पचास हजार जो० चोडी और हजार जोजन कि उडी है पागोतीया तोरणादिसे सुशोभनिक है उन्ही वावी के अन्दर एकेक दाद्धिमुख पर्वत है वह पर्वत १००० जो० उडा है ६४००० उचा है दश हजार जोजन मूलसे ले के सीखरतक पहूला विस्तारवाला है पलक संस्थान है। एवं च्यार अञ्जनगिरिके चौतर्फ १६ वावीयों है उन्ही के अन्दर १६ दाधिमुखापर्वत और १६ पर्वतोंके उपर १६ जिनमंदिर है उन्होका वर्णन अञ्जनगिरि पर्वतोंके उपरका मन्दिर माफीक समझना.

स्थानायांग वृतिमें प्रत्यक वावी के अन्तरे में दोदो कनकगिरि है एवं १६ वावीयों के अन्तरामे ३२ कनकगिरि अर्थात् सुवर्णमय १०० जोजनका उचा पलंक संस्थान पर्वत है प्रत्य कनकगिरि के उपर एकेक जिनमन्दिर अञ्जनगिरि माफिक है एवं च्यार अञ्जनगिरि १६ दाद्धिमुखा ३२ कनकगिरि मीलके ५२ पर्वतोंके उपर बावन जिनमन्दिर है।

च्यार अञ्जनगिरि के अन्तरामे च्यार रतिगीरापर्वत है वह अढाइसो जोजन धरतिमे १००० जों० उचा सर्व स्थान हजार जोजन पहूला पलीक सस्थान है प्रत्यक रतीगीरापर्वत के च्यारों दिशामें च्यार च्यार राजधानीयों एवं १६ राजधानी है वह प्रत्यक राजधानी १००००० जो० के विस्तारवाली है ३१६२२७।३।१२८।१३॥–१–१–१–६ झाझेरी परद्धि है यावत् राजधानीका वर्णन माफीक समझना जिस्मे इशान और नैऋत्यकोन रतीगीराके ८ राजधानीयों तो शक्रेन्द्र के अग्रमेहषियोंकि हैं और अग्नि ओर वायुकोन रतीगीराके ८ राजधानीयों इशानेन्द्र के अग्रमेहषियोंकी है नन्दीश्वर द्विप आती है तब वह पर ठेरती है अब नदीश्वर द्विपका सर्व पदार्थ कहते है।

४ अञ्जनगिरिपर्वत अञ्जनरत्नमय.
१६ दधिमुखापर्वत अकरत्नमय.
३२ कनकगिरिपर्वत कनकमय.
५२ जिनमन्दिर सर्व रत्नोंमय.
६६५६ वाजन मन्दिरोंमें जिनप्रतिमायें.
२०८ मुखमडप ५२ मन्दिरके दरवाजेपर.
२०८ प्रेक्षप घरमटप ,, ,,
२०८ स्थुभ.

८१६ जिनप्रतिमावों स्थुभके चौतर्फ.

२०८ चैत्यवृक्ष.

२०८ महेन्द्रध्वज.

२०८ पुष्करणि वावीयों.

१६ वावीयों अञ्जनगिरीके चौतर्फ.

४ रतीगीरापर्वत.

१६ राजधानीयों.

नन्दीश्वरद्विपके अन्दर बहूतसे भुवनपति वाणमित्रा जोतीषी और वैमानिकदेव पाखी, चौमासी, समत्सेरी या जिनकल्याणक दिनें वहांपर एकत्र होते है जिनमहिमा भगवन् की मूर्तियोंकी भावभक्ति अर्चनपूजन करते है तथा जंघाचारण विद्या चारणमुनिभी वहांकि यात्रा करनेको पधारते है सूत्रोंमें बहूतसे विस्तारसे नन्दीश्वरद्विपका व्याख्यान किया है परन्तु भव्यात्मावोंके कंठस्थ करनेके लिये संक्षेपसे मुदासर वातों थोकडा-रूपमें लिखदि है वास्ते इन्हीकों पेस्तर कंठस्थ कर फीर बहू श्रुति-योंके पास शास्त्रश्रवण करो तोंके वडा ही आनन्द आवेगा इति.

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥



थोकडा नम्बर. ३



सूत्रश्री जीवाभिगमजी प्र ९



(निगोद)

शास्त्रकारों ने निगोद दो प्रकारकि बतलाई है।

१ सूक्ष्मनिगोद—सूक्ष्मनिगोदके गोला असंख्याते है यह स्मपूरणलोक व्याप्त है

२ बादर निगोद—जो लोकके देशभागमे है। जेसे कन्दमूल जमिकन्द कान्दा मूला लसण रताल् पडाल् आदो अडवी आलू आदि निन्दोंके सुचि अग्र भागमे अनन्त जीव होता है।

सूक्ष्मनिगोदके दो भेद है (१) निगोद जीवोंके शरीर (२) निगोदके जीव। जिस्मे निगोद जीवोंका शरीर असंख्याते है क्युकि निगोद जीवोंके तेजस ओर कार्मोण शरीर तो प्रत्यक जीवोंके प्रत्यक शरीर है परन्तु औदारीक शरीर है यह अनन्त जीवोंका एक शरीर होते है यह औदारीक शरीर भि असंख्याते है अर्थात् निगोदके औदारीक शरीर असंख्याते है ओर

प्रत्येक शरीरमें अनन्ते अनन्ते जीव हैं। वह असंख्याते शरीर है वह द्रव्यापेक्षा हैं परन्तु प्रदेशापेक्षा तो प्रत्यक शरीर के अनन्ता अनन्ता प्रदेश है क्युकि अनन्ता परमाणु वा एकत्र होनासे एक औदारीक शरीर बनता है। द्रव्यापेक्षा जो औदारीक शरीर है उन्हीका भि दो दो भेद हैं (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता एवं प्रदेशापेक्षा भि.

सूक्ष्मनिगोदका जीव हैं वह द्रव्यापेक्षा अनन्ता हैं और प्रत्यक जीव के असंख्याते असंख्याते आत्म प्रदेश हैं उन्हीका भी दो दो भेद हैं (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता एवं प्रदेशप्पेक्षा भि समझना.

बादर निगोद—जेसे सूक्ष्म निगोदका शरीर–जीव, द्रव्य, प्रदेश, पर्याप्ता अपर्याप्त के भेद उपर किया गया है इसी माफिक बादर निगोदका भि समझना.

भव्यात्मावोंको विशेषः बोध के लिये शास्त्रकार सूक्ष्म बादर निगोद कि अल्पाबहूत्व कर बतलाते है।

निगोदके शरीरकि अल्पाबहूत्व.

(१) द्रव्यापेक्षा.

(१) बादर निगोद के पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०

(३) सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(४) सूक्ष्म	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०

(२) प्रदेशापेक्षा

(१) बादर निगोदके		पर्याप्ता	शरीर	द्रव्य	स्तोक.
(२)	,, ,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०
(३) सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(४)	,, ,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्य० गु०

(३) द्रव्य और प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोदके		पर्याप्ता	शरीर	द्रव्य	स्तोक.
(२)	,, ,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०
(३) सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(४)	,, ,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०
(५) बादर	,,	,,	,,	प्रदेश	अनंतगु०
(६)	,, ,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०
(७) सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(८)	,, ,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्य० गु०

निगोदके जीवोंकि अल्पावहूत्व ।

(४) द्रव्यापेक्षा.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

(५) प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव प्रदेश स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्य० गु०

(६) द्रव्य ओर प्रदेश.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०
(५) बादर ,, ,, ,, प्रदेश असं० गु०
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, ,,
(७) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

निगोदके शरीर और जीवोंकि अल्प० ।

(७) द्रव्यापेक्षा.

(१)	बादर	निगोदके	पर्याप्ता	शरीर	द्रव्य	स्तोक.
(२)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	अस० गु०
(३)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(४)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्य० गु०
(५)	बादर	निगोदके	पर्याप्ता	जीव	द्रव्य	अनन्त गु०
(६)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	अस० गु०
(७)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(८)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	सख्या० गु०

(८) प्रदेशापेक्षा.

(१)	बादर	निगोदके	पर्याप्ता	जीव	प्रदेश	स्तोक.
(२)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	अस० गु०
(३)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(४)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	सख्या० गु०
(५)	बादर	,,	,,	शरीर	,,	अनन्तगुणा
(६)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०
(७)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(८)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	सख्या० गु०

(६) द्रव्य और प्रदेशापेक्षा.

(१)	बादर	निगोदके	पर्याप्ता	शरीर	द्रव्य	स्तोक.
(२)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०
(३)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(४)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०
(५)	बादर	,,	,,	जीव	द्रव्य	अनन्त गु०
(६)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०
(७)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(८)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०
(९)	बादर	,,	,,	जीव	प्रदेश	असं० गु०
(१०)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	,,
(११)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(१२)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०
(१३)	बादर	,,	,,	शरीर	,,	अनन्त० गु०
(१४)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०
(१५)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,
(१६)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥



थोकडा नं. ४.



सूत्र श्री आचारांग अध्य० १ उ० १



(द्रव्यदिशा भावदिशा)

पाचमा गणधर सौधर्मस्वामि अपने शीष्य जम्बुस्वामि प्रत्ये कहेते है हे जम्बु इन्ही ससारके अन्दर कितनेक जीव एसे अज्ञानी है कि जिन्होंको यह ज्ञान नही है कि पूर्वभवमें मैं कोन था श्रौर कोन दिशासे में यहापर आया हू दिशा दो प्रकारकि होती हैं (१) द्रव्यदिशा (२) भावदिशा.

(१) द्रव्यदिशा अढारा (१८) प्रकारकि है यथा (१) इन्द्रादिशा (पूर्वदिशा), (२) अग्निदिशा (अग्निकोन), (३) जमादिशा (दक्षिणदिशा), (४) नैऋतदिशा (नैऋतकोन), (५) वायुदिशा (पश्चिमदिशा), (६) वायुणा (वायुकोन), (७) सोमादिशा (उत्तरदिशा), (८) इसाना (इशानकोन), (९) विमलादिशा (उर्ध्वदिशा), (१०) तमादिशा (अधोदिशा) एव दश दिशा है जिस्में च्यार दिशा च्यार विदिशा इन्ही आठोंका अन्तरा आठ दश दिशाके साथ मिलानेसे १८ द्रव्यदिशा होती हैं पूर्वोक्त जीवोंको यह ख्याल नहीं है कि इन्ही अढारा

द्रव्यदिशासें में कौनसि दिशा या विदिशासें आया हूं जब द्रव्यदिशा है तो भावदिशाभी आवश्य होना चाहिये वास्ते शास्त्रकार भावदिशा केहते हैं.

(२) भावदिशा–पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, तथा वनस्पतिकायके च्यार भेद है (१) मूल बीया–जिन्होंके मूलमें बीज रहेता है मूलादि, (२) कन्दबीया–जिस्के कन्दमें बीज रहेते है नागरमोथादि, (३) पोरबीया–जिस्के गाठ गाठके अन्दर बीज रहेते है इक्षुवादि, (४) स्कन्धबीया–जिस्के स्कन्धमें बीज रहेते है शाली आदि एवं ८ बेरिन्द्रिय, तेरिन्द्रिय, चौरिन्द्रिय और तीर्यंच पंचेन्द्रिय तथा मनुष्य च्यार प्रकारके–कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तरद्विपे और समुत्सम मनुष्य एवं १६ नारकि और देवता सर्व मीलके भावदिशा १८ होती है पूर्वोक्त जीवोंको यह ख्याल नहीं है कि में कौनसी दिशासें आया हूं और कौनसी दिशामें जाउंगा अगर में जीन्ही कुटम्बके साथ रक्त हो रहा हूं वह कुटम्ब कौनसी दिशासें आया है और कौनसी दिशामें जावेगा अज्ञानवत् जीवोंको इतना ज्ञान नहीं होता है इसी अज्ञानके जरिये जीवअनादि कालसे इन्ही भवचक्रमें भ्रमण करते है.

कितनेक जीव एसेभि होते है कि स्वयं जानलेते है कि में पूर्वभवमें अमुक गतिजतिमें था या अमुक दिशासें यहांपर

आया हूं कारण जातिस्मरणादि ज्ञानसें जेसे मृगापुत्रकुमार या महानलकुमारादि और कितनेक ज्ञानवन्तोंके पाससे सुननेसे जानते है जेसे मेघकुमार भगवान के पास अपना भव सुननेसे जाना की में पूर्वभवमें हस्ती था इत्यादि ।

ज्ञानीपुरुषोंसे श्रवण करनेसे विशेष ज्ञान भी होसक्ते है तत्त्वदृष्टीसे बतलाये जाय तो सम्यक्त्व प्राप्तीके मौख्य च्यार वाद है ।

(१) आत्मवाद—आत्मा चैतन्य अरुपि अमूर्ति अखंड अमल शुद्धनिर्मल ज्ञानदर्शन चरित्रमय सद् चदानन्द असंख्यात प्रदेशमय साश्वत है निश्चय नयसे अकर्ता अभुक्त शुद्ध उपयोगमय है इन्हीसे शास्त्रकारोंने पाच भूत वादी-या नास्तिक वादीयोंका निराकार कीया है ।

(२) लोक वादी—जहा पाचास्तिकाय है उन्हीकों लोक कहाजाता है वह लोक असंख्याते कोडोन कोड योजनका है जिस्का भि तीन भेद है (१) उर्ध्वलोक (बारह देवलोक नौग्रीवेग पाचानुत्तर वैमान) (२) अधोलोक सात नारकरूप (३) तीरच्छो लोक जिस्मे जम्बुद्विपादि असंख्याते द्विप लवणसमुद्रादि असंख्याते समुद्र यावत् स्वयं-रमण समुद्र तक तथा अधोलोक विशेष विस्तारवाला है तीर-

च्छोलोक क्रमःसर संकोंचीत ओर उर्ध्वलोक पुनः विस्तार-वाला है अर्थात् कम्मरके हथ लगाके नाचता वोपाके आकार लोक है वह भी द्रव्यापेक्ष सास्वत है और वर्णादि पर्यायापेक्ष असास्वत है इन्हीसे इश्वर वादीयोंका नीरकार कीया है।

(३) कर्मवादी—कर्म अनादि से आत्माके गुणोंको रोक रखा है जेसे सूर्य तजस्वी है परन्तु वादलोंका अवरण आनासे तेजको रोक देता है वसे कर्म भी जीवके गुणोंको रोक देते हे जेसे—

कर्म	आवर्ण द्रीष्टान्त	कौनसा गुणोंको रोके.
ज्ञानावर्णीय	घाणीका वहल	ज्ञानगुणको रोके
दर्शनावर्णीय	राजाका पोलीया	दर्शनगुणको रोके
वेदानिय	मधुलीपत छुरी	अवाद सुखको रोके
मोहनिय	मदरापान पुरुष	क्षायक गुणको रोके
आयुष्य	केद कीया हूवा	अठलावगाहन गुणको रोके
नामकर्म	चित्रकार माफिक	अमूर्ति गुणको रोके
गौत्रकर्म	कुभकार ,,	अगुरू लघु गुणको रोके
अन्तरायकर्म	राजाका भंडारी	वीर्य गुणको रोके

इन्ही आठो कर्मोने आत्माके आठों गुणोको रोक रखा है व्यवहारनयसे जीवके शुभाशुभ अध्यवशासे कर्मोका दल एकत्र होते है वह अवधाकलपक जानेपर जीवके रसविपाक उदय होते हूवे जीव सुख और दुःख भोगवते है और काल लब्धि प्राप्त कर कर्मोसे मुक्त हो जीव मौक्षमे भी जाते है यह कर्मोका अस्तित्व बतलानेसे काल स्वभाव वादियोंका निराकार किया है.

(४) क्रिया वादी––जो जीव कर्म कर सहित है वह जीव सदैव क्रिया करताही रहेता है और वह शुभाशुभ क्रिया करनेसे शुभाशुभ कर्म रुप फल भी देती है अर्थात् सकर्मी जीवोंके क्रिया अस्तित्व भाव है ओर क्रिया का फल भी अस्तित्वमान है यहापर अक्रियावादीका निराकरण कीया है।

यह च्यार सम्यग्वाद है इन्हीको यथायोग्य जाननेसे ही सम्यग्द्रष्टीकेहलाते है इन्हीके सिवाय जो मन'कल्पत मत्तको धारण करनेवाले जीवोंको मिथ्याद्रष्टी कहा जाते है। वह अनादि प्रवाहमें परिभ्रमण करते आये है और करते ही रहेगो इस लिये भगवान्ने दो प्रकारकि प्रज्ञा फरमाइ है (१) वस्तुका स्वरुपका ज्ञानकर समझना, (२) परवस्तुका त्याग करना अर्थात् जीस आश्रव कर कर्म आरहा है उन्हींको रोकना चाहिये.

कारण संसारके अन्दर एकेक जीव अन्य जीवोंकी घात करते है उन्होंका शास्त्रकारोंने छे कारण बतलाया है.

(१) जीतव्य-आजीविकाके लिये आरंभादि करे।

(२) प्रशंसा-जगत्में अपनि तारीफी करानेके लिये।

(३) मान-दुसरेसे अधिक होनेका अभिमानके लिये।

(४) पूजा-जनलोकोंके पाससे पूजा करानेके लिये।

(५) जन्ममरण मिटानेके लिये या यज्ञहोमादि करणा।

(६) दुःख मीटानेके लिये शरीरमें हूइ वेदना मीटानेके लिये।

यह छे कारणोंसे हिंसा करते है वह अनार्य कर्मके करनेवाले है उन्हीको भवन्तरे अहितका कारण-अबोधका कारण होगा कारण वह करनेवाले अज्ञानी मिथ्यात्व अनार्य है और सम्यग्द्रष्टी तो पूर्वोक्त आरंभकों कर्मबन्धका हेतु जाने मोहकर्मकी गांठ जाने मरणका हेतु या नारकका हेतु जानते है इसी वास्ते समकितसार अध्ययनमें कहा है कि " समत्त दंसी न करोति पावं " इसी वास्ते आरंभ परिग्रहसे मुक्त हो वीतरागाज्ञाका आराद्धन करो इत्यादि।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥



थोकडा नं. ५



(सूत्रश्री सूयगडायांगजी श्रु० २ अ०३)



(आहार)

जीवात्मा सचदानन्द निजगुणभुक्ता सदा अनाहारीक है यह निश्चय नयका वचन है। और जीवके अनादि कालसे कर्मोका सयोग होनासे भिन्न भिन्न योनिमें नया नया जन्म धारण करते हूवे पुद्गलोंका आहार करता है यह व्यवहार नयका वचन है। व्यवहार नयसे जीव रागद्वेष की प्रवृति करते हुवे के कर्मबन्ध भी होता है उन्ही कर्मोका फल भवन्तरमे शुभा शुभ आवश्य भोगवना भी पडता है जाति अपेक्षा जीव पाच प्रकार के होते है यथा-एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पाचेन्द्रिय, जिस्मे एकेन्द्रियका पाच भेद है यथा-पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय वायुकाय वनास्पतिकाय सर्व जीवोंमे वनास्पतिकायके जीवाधिक होनासे शास्त्रकारोंने प्रथम वनास्पतिकायका ही व्याख्यान करते है

वनास्पतिकाय च्यार प्रकारकी होती है यथा—

(१) अग्गबीया—वृक्षके अग्रभागमे बीज होता है

(२) मूलवीया—मूलमे वीज जेसे कन्दा मूलाके
(३) पोरवीया—गाठ गाठमे वीज इक्षुआदिमे
(४) स्कन्धवीया—गद्दू चीणादिमे

इन्ही वनास्पतिकायके उत्पन्न होनेका स्थान दोय है (१) स्थलमे (२) जलमे जिस्मेंपेस्तर स्थलमे उत्पन्न होते हैं उन्हीका अधिकार लिखा जाते है.

पृथ्वीयोनिया वृत्त पृथ्वीमे उत्पन्न होता है तब पेहला पृथ्वीकायके स्नग्धपुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीर बन्धता है बादमे छे. काया के जीवोंके मुकेलगे पुद्गलोंका आहार लेते हैं वह आहार अपने शरीरपणे परिणमाते हूवे शरीरका वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होते है यह प्रथम अलापक हूवे । १ ।

पृथ्वीयोनिया वृत्त मे वृत्त उत्पन्न होता है तब पेहले उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार ले के अपना शरीर बन्धते हैं बादमे छे कायाके शरीरोंके पुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीरके वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारके बनाते है । २ ।

वृत्त योनिया वृत्तमे वृत्त उत्पन्न होता है तब पेहले अपने उत्पन स्थानके स्नग्धका आहार लेके शरीर बन्धता है बादमे छे कायाके शरीरोंका पुद्गलोंसे अपने शरीरके नानाप्रकारके वर्णगन्ध रसस्पर्श बनाते है । ३ ।

वृक्ष योनियावृक्षमें दश बोल उत्पन्न होते हैं यथा—मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, साखा, प्रतिसाखा, पत्र, पुष्प, फल, बीज यह १० बोल उत्पन्न होते पेहले अपने स्थानके स्निग्धका आहार लेके अपना शरीर बन्धता है बादमें छे कायाके जीवोंका मुकेलगा पुद्गलोंका आहार ले अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श नानाप्रकारके बनाते हैं । ४ ।

पृथ्वी योनिया वृक्षमें अज्झोरा (एक जातिका वृक्षमें दुसरी जातिका वृक्ष उत्पन्न होता है उन्हीको अज्झोरा केहते हैं) उत्पन्न होता है ।१। वृक्ष योनियावृक्षमें अज्झोरा उत्पन्न होता है ।२। अज्झोरा योनियावृक्षमें अज्झोरा उत्पन्न होता है ।३। अज्झोरा योनिया अज्झोरामें मुलादि १० बोल उत्पन्न होता है । ४ । एवं च्यारों अलापकमें उत्पन्न होते हैं । पेहले अपने उत्पन्न स्थानके स्निग्धके पुद्गलोंका आहार ले अपना शरीर बन्धते हैं बादमें छे कायाके शरीरोंके मुकेलगा पुद्गलोंका आहार ले अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श नानाप्रकारके बनाते हैं ।

एवं च्यार अलापक तृण वनास्पतिका एवं च्यार अलापक औषधी (२४ प्रकारका धान्य) का एवं च्यार अलापक हरिकायका भावना पूर्ववत् समझना सर्व २० अलापक हुवे ।

पृथ्वी योनियावृक्षमें भूइफोडा उत्पन्न होता है भावना पूर्ववत् सर्व २१ ।

जेसे पृथ्वी योनियावृक्षसे २१ अलापक हूवे है इसी माफीक उदक (पाणी) योनियावृक्षसे* भी २१ अलापकके हेना परन्तु इकवीसमा अलापकमें भूइफोडाके स्थान उत्पलादि कमल समझना एवं ४२ अलापक हूवे ।

पृथ्वी योनियावृक्षमें त्रसकाय उत्पन्न होती है । १ । वृक्ष योनियावृक्षमें त्रसकाय उत्पन्न होती है । २ । वृक्ष योनियावृक्षमें मूलादिया दश बोल उत्पन्न होता है । ३ । एवं अज्झोराका ३, तृणाका ३, औषदीका ३, हरिकायका ३, भूइफोडाका १ एवं १६ इसी माफीक उदक योनियाका भी १६ अलापक मीलाके ३२ अलापक हूवे ।

वेद मोहनिय कर्मोदय मनुष्यकों मैथुन संज्ञा उत्पन्न होती है तब स्त्रि के साथ मैथुन कर्म सेवन करते है उन्ही समय माताका रौद्र पिताका शुक्र के साथसं योग होते है उन्हींके अन्दर जीव उत्पन्न होते है वह स्त्रिवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद उत्पन्न होते ही पेहला माताका रौद्र पिताका शुक्रका आहार लेता है बादमे माता कि नाडी और पुत्र कि नाडी के साथ संबन्ध होनासे माता जो जो रसवती भोजन करती है उन्हीका एक विभाग पुत्र भी आहार करता है गर्भकाल पूर्ण हो तब

---

* पाणीमे कमलादि उत्पन्न होते है जिस्की योनि पाणीमे होती है ।

उन्दी पुत्रका जन्म होता है बादमे माताके दुद्ध सर्पीका आहार करता है फीर नाना प्रकारके त्रसस्थावरोंके शरीरके पुद्गलोंका आहार कर के अपने शरीरका वर्णगन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका बनाता है । ७५ ।

इसी माफिक जलचार जीव परन्तु जन्मतों पाणीका आहार लेते हैं । ७६ । एव खेचर परन्तु जन्मतों माताका । पोरकों आहार लेने । ७७ । एव स्थलचर मनुष्यकी माफीक । ७८ । एव उरपुरी सर्प परन्तु जन्मतों हवा (वायु) कों आहार लेने । ७९ । एव भूजपुर भी समझना । ८० ।

वींघस चर्ममे क्रीडा करमीयादि जीव उत्पन्न होता है यह पेहला अपने उत्पन्न स्थानके स्नाधका आहार लेवे यावत् पूर्ववत् सझना । ८१ । परसेवासे यु लीखादिका । ८२ । मल मूत्रमे समुत्सम जीवोंका । ८३ ।

त्रसस्थावर जीवोंके शरीरमे वायुकायाके योगमे अपकाय उत्पन हुवे पेहला उत्पन्न स्थानके स्नेघका आहार लेवे शेष पूर्ववत् । ८४ ।

त्रसस्थावर योनिया उदकमे उदक उत्पन्न होता है ।८५। उदक योनियाउदकमे उदक उत्पन्न होता है । ८६ । उदक योनिया उदकमें त्रस प्राणी उत्पन्न होता है । ८७ ।

त्रस स्थावर जीवोंका अचित तथा सचित शरीरमे अग्नि-काय उत्पन्न हूवे । ८८ । त्रसस्थावर योनिया अग्निमे अग्नि उत्पन्न हूवे । ८६ । अग्नियोनिया अग्निमे अग्नि उत्पन्न होती है । ६० । अग्नि योनिया अग्निमें, त्रसस्थावर जीव उत्पन्न होता है । ६१ ।

त्रसस्थावर जीवोंका सचित अचित शरीरमे वायुकाय उत्पन्न होती है । ६२ । त्रसस्थावर योनिया वायुकायमे वायु-काय उत्पन्न होती है । ६३ । वायु योनियावायुमें वायुकाय उत्पन्न होती है । ६४ । वायु योनियावायुकायमें त्रस स्थावर उत्पन्न होता है । ६५ ।

त्रस स्थावर जीवोंका सचित अचित शरीरमें पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ६६ । त्रस स्थावर योनिया पृथ्वीकायमें पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ६७ । पृथ्वीं योनियापृथ्वीमें पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ६८ । पृथ्वी योनियापृथ्वीकायमें त्रस स्थावर उत्पन्न होता है सर्व स्थानपर उत्पन्न होता है । वह पेहले अपना उत्पन्न स्थानके स्निग्धके पुद्गलोंका आहार लेता है बादमें छे कायाके शरीरके मुक्केलगे पुद्गलोंका आहार लेके अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श नानाप्रकारके बनाते हैं।

नारकी कुंभीमें उत्पन्न होते हैं । १०० । देवता शय्यामें उत्पन्न होते है । १०१ । इति आहार अलापक ।

हे भव्यात्मन् यह उपर लिखा योनिमें परिभ्रमण करता अपना जीव अनादिकालसे मारा मारा फीरता है इन्ही योनिको मीटानेवाला श्री वीतरागका ज्ञान है इन्हीकी सम्यक प्रकारे आराधना करो ताकें फीर दुसरीवार योनिमें उत्पन्न होनाका कमही न रहे । रस्तु ।

॥ सेवभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ६

(बहुश्रुति कृत.)

(प्रत्यक बोलपर ६२ बोल उतारा जावेगा)

नं.	मार्गणा	जीवभेद	गुणस्थान	योग १५	उप० १२	लेश्या ६
१	समुच्चय जीवमें	१४	१४	१५	१२	६
२	स० अपर्याप्तामें	७	३	५	९	६
३	स० अ० अनाहारी	७	३	१	८	६

४	स० अ० आहारीक	७	३	३	६	६
५	स० पर्यासा	७	१४	१४	१२	६
६	स० प० आहारीक	७	१४	१४	१२	६
७	स० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
८	पांचेन्द्रिय	४	१२	१५	१०	६
६	पां० अपर्यासा	२	३	५	६	६
१०	पां० अ० अनाहारीक	२	३	१	८	६
११	पां० अ० आहारीक	२	३	४	६	६
१२	पं० पर्यासा	२	१२	१४	१०	६
१३	पां प० आहारीक	२	१२	१४	१०	३
१४	चौरिन्द्रिमें	२	२	४	६	३
१५	चौ० अपर्यासा	१	२	३	६	३
१६	चौ० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
१७	चौ० अ० आहारीक	१	२	२	६	३
१८	चौ० पर्यासामें	१	१	२	४	३
१६	चौ० प० आहारीक	१	१	२	४	३
२०	तेइन्द्रिय	२	२	४	५	३
२१	ते० अपर्यासा	१	२	३	५	३
२२	ते० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
२३	ते० अ० आहारीक	१	२	२	५	३

२४	ते० पर्याप्ता	१	२	२	३	३
२५	ते० प० आहारीक	१	१	२	३	३
२६	बेन्द्रिय	२	७	४	५	३
२७	बे० अपर्याप्ता	१	२	३	५	३
२८	बे० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
२९	बे० अ० आहारीक	१	२	२	५	३
३०	बे० पर्याप्ता	१	१	२	३	३
३१	बे० प० आहारीक	१	१	२	३	३
३२	एकेन्द्रिय	४	१	५	३	४
३३	ए० अपर्याप्ता	२	६	३	३	४
३४	ए० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
३५	ए० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
३६	ए० पर्याप्ता	२	१	४	३	३
३७	ए० प० आहारीक	२	१	४	३	३
३८	अनेन्द्रिय	१	२	५।७	२	१
३९	अ० पर्याप्ता	१	२	५।७	२	१
४०	अ० अनाहारीक	१	२	१	२	१
४१	अ० आहारीक	१	१	५।७	२	१

॥ सेवंभते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ७



(बहू श्रुतिकृत)

नं.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	समुच्चय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
२	सकाय में	१४	१४	१५	१२	६
३	स० अपर्याप्ता	७	३	५	६	६
४	स० अ० अनाहारीक	७	३	१	८	६
५	स० अ० आहारीक	७	३	४	६	६
६	स० पर्याप्ता	७	१४	१४	१२	६
७	स० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
८	स० प० आहारीक	७	१३	१४	१२	६
९	पृथ्वीकायमे	४	१	३	३	४
१०	पृ० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
११	पृ० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
१२	पृ० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
१३	पृ० पर्याप्तामे	२	१	१	३	३
१४	पृ० प० आहारीक	२	१	१	३	३

१५	ष्पपकायमे	४	१	३	३	४
१६	अ० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
१७	अ० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
१८	अ० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
१९	अ० पर्याप्ता	२	१	१	३	३
२०	अ० प० आहारीक	२	१	१	३	३
२१	तेउकायमें	४	१	३	३	३
२२	ते० अपर्याप्ता	२	१	३	३	३
२३	ते० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	३
२४	ते० अ० आहारीक	२	१	२	३	३
२५	ते० पर्याप्ता	२	१	१	३	३
२६	ते० प० आहारीक	२	१	१	३	३
२७	वायुकायमें	४	१	५	३	३
२८	वायुअपर्याप्ता	२	१	३	३	३
२९	व० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	३
३०	व० अ० आहारीक	२	१	२	३	३
३१	व० पर्याप्ता	२	१	४	३	३
३२	व० प० आहारीक	२	१	४	३	३
३३	वनास्पतिकायमें	४	१	३	३	४
३४	व० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४

३५	व० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
३६	व० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
३७	व० पर्यासा	२	१	१	३	३
३८	व० प० आहारीक	२	१	१	३	३
३९	तसकायमें	१०	१४	१५	१२	६
४०	त० अपर्यासा	५	३	५	९	६
४१	त० अ० अनाहारीक	५	३	१	८	६
४२	त० अ० आंहारीक	५	३	४	९	६
४३	त० पर्यासा	५	१४	१४	१२	६
४४	त० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
४५	त० प० आहारीक	५	१३	१४	१२	६

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥



थोकडा नं. ८



(बहूश्रुति कृत)

न.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	सूक्ष्मेकन्द्रि अपर्यसा	१	१	३	३	३
२	,, ,, पर्यासा	१	१	१	३	३

३	बादर एकेन्द्रि अप०	१	१	३	३	४
४	" " पर्याप्ता	१	१	४	३	४
५	बेइन्द्रिय अपर्याप्ता	१	२	३	५	३
६	" पर्याप्ता	१	१	२	३	३
७	तेइन्द्रिय अप०	१	२	३	५	३
८	" पर्याप्ता	१	१	२	३	३
९	चौरिन्द्रिय अप०	१	२	३	६	३
१०	" पर्याप्ता	१	१	२	३	३
११	असन्नी पाचेन्द्रि अप०	१	२	३	६	३
१२	" " पर्याप्ता	१	१	२	३	३
१३	सन्नी पांचेन्द्रि अप०	१	३	५	८	६
१४	" " पर्याप्ता	१	१२	१४	१०	६
१५	मिथ्यात्व गुणस्थान	१४	१	१३	६	६
१६	सास्वादन "	६	२	१३	६	६
१७	मिश्र "	१	१	१०	६	६
१८	अव्रती सम्य० "	२	२	१३	६	६
१९	देशव्रती "	१	१	१२	६	६
२०	प्रमत्त सयति "	१	१	१४	७	६
२१	अप्रमत्त " "	१	१	११	७	३
२२	निवृत्ति बादर "	१	१	९	७	१

२३	अनिवृति बादर गुणस्थान	१	१	९	७	१
२४	सुक्षम संपराय ,,	१	१	९	७	१
२५	उपशान्त मोह ,,	१	१	९	७	१
२६	क्षीण मोह ,,	१	१	९	७	१
२७	संयोगी केवली ,,	१	१	५।७	२	१
२८	अयोगी केवली ,,	१	१	०	२	०
२९	सत्य मनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३०	असत्य मनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३१	मिश्र मनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३२	व्यवहार मनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३३	सत्य वचनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३४	असत्य वचनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३५	मिश्र वचनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३६	व्यवहार वचनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३७	औदारीक कायमें	१४	१३	९	१२	६
३८	औ० मिश्र काययोग	९	६	९	१२	६
३९	वैक्रय काययोग	३	७	९	१०	६
४०	वै० मिश्र काययोग	३	५	९	१०	६
४१	आहारीक ,,	१	२	९	७	६
४२	आ० मिश्र ,,	१	२	९	७	६
४३	कारमण काययोग	८	४	१	१०	६

४४	मतिज्ञानमे	६	१०	१५	७	६
४५	श्रुतिज्ञानमे	६	१०	१५	७	६
४६	अवधिज्ञानमे	२	१०	१५	७	६
४७	मन. पर्यवज्ञान	१	७	१४	७	३
४८	केवलज्ञानमे	१	२	५।७	२	१
४६	मतिअज्ञानमे	१४	२	१३	६	६
५०	श्रुतिअज्ञानमे	१४	२	१३	६	६
५१	वीभगाज्ञानमे	२	२	१३	६	६
५२	चक्षुदर्शनमें	३।६	१२	१४	१०	६
५३	अचक्षुदर्शनमे	१४	१२	१५	१०	६
५४	अवधिदर्शनमे	२	१२	१५	१०	६
५५	केवलदर्शनमे	१	२	५।७	२	१
५६	कृष्णलेश्यामे	१४	६	१५	१०	१
५७	निल ,,	१४	६	१५	१०	१
५८	कापोत ,,	१४	६	१५	१०	१
५६	तेजा ,,	२	७	१५	१०	१
६०	पद्म ,,	२	७	१५	१०	१
६१	शुक्ल ,,	२	१३	१५	१२	१
६२	मगुणपर्नामे	१४	१४	१५	१२	६

॥ सेरंभते सेरभने तमेव सच्चम ॥

थोकडा नम्बर. ९



(बहूश्रुत कृत)

नं.	मार्गणा.	जी०	गु०	यो०	उ०	ले.
१	द्रव्यात्मा	१४	१४	१५	१२	६
२	कषायात्मा	१४	१०	१५	१०	६
३	योगात्मा	१४	१३	१५	१२	६
४	उपयोगात्मा	१४	१४	१५	१२	६
५	ज्ञानात्मा	६	१२	१५	८	६
६	दर्शनात्मा	१४	१४	१५	१२	६
७	चारित्रात्मा	१	९	१५	८	६
८	वीर्यात्मा	१४	१४	१५	१२	६
९	पुलाक निग्रन्थ	१	३	९	६	६
१०	बुकश ,,	१	३	१२	६	६
११	प्रतिसेवना ,,	१	३	१२	६	६
१२	कषायकुशील ,,	१	५	१४	७	६
१३	निग्रन्थ ,,	१	२	९	७	१
१४	स्नातक ,,	१	२	५/७	२	१

१५	औदारीक शरीर	१४	१४	१५	१२	६
१६	वैक्रय शरीर	३	७	१५	१०	६
१७	आहारीक शरीर	१	२	१०	७	६
१८	तेजस शरीर	१४	१४	१५	१२	६
१९	कारमाण शरीर	१४	१४	१५	१२	६
२०	एक प्राणवाला जीवोंमें	७	३	१	८	६
२१	दोय ,,	१	१	०	२	०
२२	तीन ,,	२	१	३	३	४
२३	च्यार ,,	४	१	५	३	४
२४	पांच ,,	१	२	५।७	२	१
२५	छे ,,	२	२	४	५	३
२६	सात ,,	२	२	४	५	३
२७	आठ ,,	२	२	४	६	३
२८	नव ,,	२	२	४	६	३
२९	दश ,,	२	१२	१५	१०	६
३०	आहार पर्याप्ती	१४	१३	४	१२	६
३१	शरीर ,,	१४	१४	१५	१२	६
३२	इन्द्रिय ,,	१४	१२	१५	१०	६
३३	श्वासोश्वास ,,	१२	१३	१४	१२	६
३४	भाषा ,,	४	१३	१४	१२	६
३५	मन ,,	१	१३	१४	१२	६

॥ [illegible] ॥

थोकडा नं. १०



(बहुश्रुति कृत.)

नं.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	समुच्चय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
२	नारकीमें	३	४	११	९	३
३	ना० अपर्याप्ता	२	३	३	९	३
४	ना० अ० अनाहारीक	२	३	१	९	३
५	ना० अ० आहारीक	२	३	२	९	३
६	ना० पर्याप्ता	१	४	१०	९	३
७	ना० प० आहारीक	१	४	१०	९	३
८	तीर्यंचमे	१४	५	१३	९	६
९	ती० अपर्याप्ता	७	३	३	६	६
१०	ती० अ० अनाहारीक	७	३	१	५	६
११	ती० अ० आहारीक	७	३	२	६	६
१२	ती० पर्याप्तामे	७	५	१२	९	६
१३	ती० प० आहारीक	७	५	१२	९	६
१४	मनुष्यसे	३	१४	१५	१२	६

१५	म० अपर्याप्ता	२	३	३	६	६
१६	म० अ० अनाहारीक	२	३	१	८	६
१७	मनुष्य अ० आहारी	२	३	२	६	६
१८	म० पर्याप्तामें	१	१४	१४	१२	६
१६	म० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
२०	म० प० आहारीक	१	१३	१४	१२	६
२१	देवतावोंमें	३	[illegible]	११	६	६
२२	देवतावों अपर्याप्ता	२	३	३	६	[illegible]
२३	देव० अ० अनाहारीक	२	३	१	[illegible]	६
२४	दे० अ० आहारीक	२	३	२	६	६
२५	देव० पर्याप्ता	१	४	१०	६	६
२६	देव० प० आहारीक	१	४	१०	६	६
२७	सिद्धभगवानमें	०	०	०	२	०

॥ सेवभंते सेवंभते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ११

(वहू श्रुतिकृत)

अलद्धिया उसे केहते हैं कि जिस्मे वह वस्तु न मीले जेसे मतिज्ञानका अलद्धिया केहनेसे जिन्ही जीवोंमे मतिज्ञान न मीलता हो ऐसे पेहले तीजे तेरजे चौदवे इन्ही च्यार गुणस्थानमे मतिज्ञानका अभाव है इसी माफीक सर्व स्थानपर समझना ।

नं.	मार्गणा.		जी०	गु०	यो०	उ०	ले.
१	मतिज्ञानके	अलद्धियामे	१४	४	१३	८	६
२	श्रुतिज्ञानके	,,	१४	४	१३	८	६
३	अवधिज्ञानके	,,	१४	१४	१५	११	६
४	मनःपर्यवज्ञानके	,,	१४	१४	१५	११	६
५	केवलज्ञानके	,,	१४	१२	१५	१०	६
६	मतिअज्ञानके	,,	६	१२	१५	९	६
७	श्रुतिअज्ञानके	,,	६	१२	१५	९	६
८	विभंगाज्ञान	,,	१४	१४	१५	११	६
९	चक्षुदर्शनके	,,	१२	५	७	१०	६
१०	अचक्षु०	,,	१	२	५।७	२	१
११	अवधिज्ञानके	,,	१४	१४	१५	१०	६
१२	केवलदर्शन०	,,	१४	१४	१५	१०	६
१३	इन्द्रियका	,,	१	२	५।७	२	१
१४	श्रोतेन्द्रियका	,,	११	४	९	८	५
१५	चक्षुइन्द्रियका	,,	९	४	९	७	५
१६	घ्रणेन्द्रियका	,,	७	४	९	७	५
१७	रसेन्द्रियका	,,	५	३	९	५	५
१८	स्पर्शेन्द्रियका	,,	१	२	५।७	२	१
१९	अनेन्द्रियका	,,	१४	१२	१५	१०	६

४०	कृष्णलेश्या	,,	१	८	१५	९	३
४१	निललेश्या	,,	१	८	१५	९	३
४२	कापोतलेश्या	,,	१	८	१५	९	३
३४	तेजोलेश्या	,,	१	७	११	९	१
४४	पद्मलेश्या	,,	१	७	११	९	१
४५	शुक्ललेश्या	,,	१	१	०	२	०
४६	अलेश्या	,,	१४	१३	१५	१२	६
४७	संयोगिका	,,	१	१	०	२	०
४८	मनयोगिका	,,	१	१	०	२	०
४९	वचन०	,,	१	१	०	२	०
५०	काययोगि	,,	१	१	०	२	०
५१	अयोगि	,,	१४	१३	१५	१२	६
५२	सम्यक्द्रष्टी	,,	१४	२	१३	६	६
५३	मिथ्याद्रीष्टी	,,	६	१२	१५	९	६
५४	मिश्रद्रीष्टी	,,	१४	१३	१५	१२	६
५५	संज्ञीका	,,	१३	४	१०	८	५
५६	असंज्ञीका	,,	२	१४	१५	१२	६
५७	संसारका	,,	०	०	०	२	०

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. १२



(बहूश्रुति कृत)

नं.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	ज्ञानावर्णीयकर्ममें	१४	१२	१५	१०	६
२	दर्शना० ,, ,,	१४	१२	१५	१०	६
३	वेदनिय ,, ,,	१४	१४	१५	१२	६
४	मोहनिय ,, ,,	१४	११	१५	१०	६
५	आयुष्य ,, ,,	१४	१४	१५	१२	६
६	नामकर्ममें	१४	१४	१५	१२	६
७	गौनकर्ममे	१४	१४	१५	१२	६
८	अन्तरायकर्ममे	१४	१२	१५	१०	६
९	वज्रऋषभनाराच सहनन	२	१४	१५	१२	६
१०	ऋषभनाराच० ,,	२	११	१५	१०	६
११	नारचसहनन ,,	२	११	१५	१०	६
१२	अर्द्धनाराच० ,,	२	७	१५	१०	६
१३	कालकास० ,,	२	७	१५	१०	६
१४	छेवट स० ,,	१४	७	१५	१०	६

थोकडा नं. १२



(वहूश्रुति कृत)

नं.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	ज्ञानावर्णीयकर्ममें	१४	१२	१५	१०	६
२	दर्शना० ,, ,,	१४	१२	१५	१०	६
३	वेदनिय ,, ,,	१४	१४	१५	१२	६
४	मोहनिय ,, ,,	१४	११	१५	१०	६
५	आयुष्य ,, ,,	१४	१४	१५	१२	६
६	नामकर्ममें	१४	१४	१५	१२	६
७	गौत्रकर्ममे	१४	१४	१५	१२	६
८	अन्तरायकर्ममे	१४	१२	१५	१०	६
९	वज्रऋषभनाराच सहनन	२	१४	१५	१२	६
१०	ऋषभनाराच० ,,	२	११	१५	१०	६
११	नाराचसहनन ,,	२	११	१५	१०	६
१२	अर्द्धनाराच० ,,	२	७	१५	१०	६
१३	कालकास० ,,	२	७	१५	१०	६
१४	छेवट स० ,,	१४	७	१५	१०	६

१५	समचौंरंससंस्थान	२	१४	१५	१२	६
१६	निग्रोधसंस्थान	२	१४	१५	१२	६
१७	सादियसंस्थान	२	१४	१५	१२	६
१८	वामन संस्थान	२	१४	१५	१२	६
१९	कुब्ज संस्थान	२	१४	१५	१२	६
२०	हून्डक संस्थान	१४	१४	१५	१२	६
२१	सावचीया (सिद्ध)	०	०	०	२	०
२२	सोवचीया (भव्य)	१४	१४	१५	१२	६
२३	सा० सो (पडवाइ)	१४	१४	१५	१२	६
२४	नि० नि० (अभव्य)	१४	१	१३	६	६
२५	अछद्मस्थ	१	२	५।७	२	१
२६	अकेवली	१४	१२	१५	१०	६
२७	असिद्ध	१४	१४	१५	१२	६
२८	सचितयोनि	१२	२	६	६	४
२९	अचितयोनि	१४	४	१३	९	६
३०	मिश्रयोनि	१४	४	१३	९	६
३१	शीतयोनिमे	१२	२	६	६	४
३२	उष्णयोनिमे	२	१	३	३	३
३३	मिश्रयोनिमे	२	४	१३	९	६
३४	संवृतयोनिमे	४	६	१३	९	६

३५	वेहडायोनिमें	८	२	४	६	३
३६	मिश्रयोनिमें	२	१४	१५	१२	६
३७	क्रियावादी	२	१	१३	६	६
३८	अक्रियावादी	१४	१	१३	६	६
३९	अज्ञानवादी	१४	२	१३	६	६
४०	विनयवादी	७	२	१३	६	६
४१	आर्तध्यान	१४	६	१५	१०	६
४२	रौद्रध्यान	१४	५	१३	९	६
४३	धर्मध्यान	१	५	१५	७	६
४४	शुक्लध्यान	१	७	११	९	१
४५	वेदनि समुद्घात	१४	६	१५	१०	६
४६	कषाय ,,	१४	६	१५	१०	६
४७	मरणन्तीक ,,	१४	५	१३	१०	६
४८	वैक्रय ,,	३	६	१३	१०	६
४९	तेजस ,,	२	५	१३	१०	६
५०	आहारीक ,,	१	७	९	७	६
५१	केवली ,,	१	१	३	२	१

॥ सेवंभते सेवभंते तमेव सचम् ॥



थोकडा नम्बर. १३



(बहूश्रुत कृत)

नं.	मार्गणा	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	वासुदेवकी आगति	१	४	१०	६	४
२	हास्यादि सम्यक् द्रीष्टी	६	६	१५	७	६
३	अव्रती मनयोगमें	१	३	१२	६	६
४	एकान्तसंज्ञी सम्य० अव्रती	२	२	१३	६	६
५	अप्रमत्त हास्यादिमें	१	२	११	७	३
६	तेजोलेशी एकेन्द्रिमें	१	१	३	३	१
७	अमर गुणस्थानमें	१	३	१२	१२	६
८	अमर गु० छद्मस्थ	१	२	१०	१०	६
९	अमर गु० चरमान्त	१	२	१२	८	६
१०	यथाख्यात-संयोगि	१	३	११	६	१
११	गुण० चमरान्त	१४	२	१३	८	६
१२	संयोग गु० चमरान्त	१४	२	१३	८	६
१३	छद्मस्थ गु० च०	१४	२	१३	१०	६

१४	सकपाय गुणस्थान चरमान्त	१४	२	१३	१०	६
१५	सवेद गु० च०	१४	२	१३	१०	६
१६	व्रतीछ्मस्थ गु०	१	७	१४	७	६
१७	अप्रमत्त छद०	१	६	११	७	३
१८	हास्यादि मयती	१	३	१४	७	६
१९	हास्यादि अप्रमत्त	१	२	११	७	३
२०	व्रती सकपाय	१	५	१४	७	६
२१	व्रती सवेद	१	४	१४	७	६
२२	व्रती छ्मस्थ	१	७	१४	७	६
२३	सम्य० सवेद	६	७	१५	७	६
२४	सम्य० सकपाय	६	८	१५	७	६
२५	परभव जाता जीवमें	७	३	१	१०	६

॥ सेवंभते सेवभते तमेव सच्चम् ॥



थोकडा नं. १४



(बहूश्रुत कृत)

(२८ लब्धि)			भव्य		अभव्य	
नं.	मार्गणा.		पुरुष	स्त्रि	पुरुष	स्त्रि
१	आमोसहि	लब्धि	हूवे	हूवे	हूवे	हूवे
२	विप्पोसहि	,,	,,	,,	,,	,,
३	जलोसहि	,,	,,	,,	,,	,,
४	खेलोसहि	,,	,,	,,	,,	,,
५	सव्वोसहि		,,	,,	,,	,,
६	संभिन्नश्रोता	,,	,,	नहीं	नहीं	नहीं
७	अवधिज्ञान		,,	हूवे	,,	,,
८	ऋजोमति		,,	,,	,,	,,
९	विपुलमति	,,	,,	,,	,,	,,
१०	केवलज्ञान	,,	,,	,,	,,	,,
११	चरण	,,	,,	नहीं	,,	,,
१२	अरिहंत	,,	,,	,,	,,	,,

१३	गणधर	"	"	"	"	"
१४	चक्रवर्त	"	"	"	"	"
१५	नलदेव	"	"	"	"	"
१६	वासुदेव	"	"	"	"	"
१७	आहारीक	"	"	"	"	"
१८	वैक्रय	"	"	हूवे	हूवे	हूवे
१९	पुलाक	"	"	नहीं	नहीं	नहीं
२०	तेजोलेश्या	"	"	हूवे	हूवे	हूवे
२१	शीतलेश्या	"	"	"	"	"
२२	कोठवुद्धि	"	"	"	"	"
२३	वीजवुद्धि	"	"	"	"	"
२४	पूर्वधर	"	"	नहीं	नहीं	नहीं
२५	पदानुसारणी	"	"	हूवे	हूवे	हूवे
२६	आसीवीन	"	"	"	"	"
२७	क्षीरमजुवा	"	"	"	"	"
२८	अक्षीणमाणसी	"	"	"	"	"

॥ सेवंभते सेवंभंते तमेव सच्चम ॥



थोकडा नं. १५

(पुद्गलपरावर्तन)

असंख्याते वर्षका एक पल्योपम होता है दश कोडाकोड पल्योपमका एक सागरोपम होता है दश कोडाकोड सागरोपमका एक उत्सर्पिणी काल तथा दश कोडाकोड सागरोपमका एक अवसर्पिणी काल होता है इन्ही उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकों मीलाके वीस कोडाकोड सागरोपमकों शास्त्रकारोंने एक कालचक्र कहा है एसे अनन्ते कालचक्रका एक पुद्गलपरावर्तन होता है वह प्रत्यक जीवों भूतकालमें अनन्ते अनन्ते पुद्गलपरावर्तन कीये है विशेष बोधके लिये पुद्गलपरावर्तनकों च्यार प्रकारसे बतलाते है. यथा-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव। प्रत्यकके दो दो भेद है (१) सूक्ष्म, (२) बादर. वह इस थोकडा द्वारा बतलाया जावेगा.

(१) द्रव्यापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—लोकमें रहे हुवे द्रव्य जिन्हीकों जीव ग्रहन करते है वह आठ वर्गणा द्वारे ग्रहन करते है यथा-औदारीकशरीर द्वारे, वैक्रयशरीर द्वारे, आहारीकशरीर द्वारे, तेजसशरीर द्वारे, कार्मणशरीर द्वारे, श्वासोश्वासद्वारे, भाषा द्वारे. मन द्वारे, इन्ही आठ वर्गणासे एक

आहारीक शरीर वर्गणा छेडदेना कारण एक जीव अधिकसे अधिक आहारीक शरीर करे तो च्यारसे ज्यादा न करे, वास्ते सर्व लोकका द्रव्य ग्रहनका अभाव है। शेष ७ वर्गणासे अनुक्रमे एकेक जीव सर्व लोकका द्रव्यको अनन्ती अनन्ती वार ग्रहण कर छोडा है अर्थात् औदारीक शरीर वर्गणासे सर्व लोकका द्रव्य अनन्तीवार ग्रहन कर छोडा एव वैक्रय॰ तेजस॰ कार्मण॰ श्वासोश्वास॰ भाषा॰ ओर मनवर्गणासे सर्व लोकका द्रव्यको अनन्तीवार ग्रहन कर छोडा इन्हीकों द्रव्यापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है। इसमें अनन्तों काल लगता है

(२) द्रव्यापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त बतलाइ हुइ सात वर्गणामे प्रथम जीव औदारीक वर्गणासे लोकका द्रव्य ग्रहन करना प्रारंभ कीया है वह क्रमःसर सर्व लोकका द्रव्य केवल औदारीक वर्गणासे ही ग्रहन करे अगर वीचमें वैक्रयादि छे वर्गणासे द्रव्य ग्रहन करे वह गीनतीमें नहीं जेसे औदारीक शरीरका भाव कर तो वीचमें वैक्रय शरीरका भव करे यहापर आचार्यो महाराजका दो मत्त है एक केहते है कि औदारीक वर्गणामे द्रव्य ले तो वीचमें वैक्रयादि वर्गणासे द्रव्य लेवे वह गीनतीमें नहीं किन्तु औदारीक गीनतीमें है दुसरोंका मत्त है कि औदारीक वर्गणासे द्रव्य ले तो वीचमें वैक्रयादि वर्गणामे द्रव्य लेवे तो औदारीकमे और

वैक्रयसे लिये हूवे सर्व द्रव्य गीननीमे नही अर्थात् फीरसे औदारीक वर्गणाद्वारे द्रव्यग्रहन करे तात्पर्य यह है कि औदारीक वर्गणाद्वारे द्रव्यग्रहन करतों जहॅ तक सम्पुर्ण लोकके द्रव्य औदारीक वर्गणाद्वारे ग्रहन करे वहातक वीचमे दुसरी वर्गणा न आवे वह एक वर्गणा कही जावे। इसीमाफीक वैक्रय वर्गणासे द्रव्यग्रहन करतों वीचमे औदारीकादि वर्गणासे द्रव्य लेवेतों गीनतीमे नही परन्तु सर्व लोकका द्रव्य वैक्रयसेही लेवे वीचमे दुसरा भव नकरे तों गीनतीमे आवे इसी माफीक सातों वर्गणासे क्रमःसर सम्पुरण लोक द्रव्यग्रहन करे उन्हीकों द्रव्यापेक्षा सूक्षम पुद्गल परावर्तन केहते है.

(३) क्षेत्रापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—असंख्याते कोडो न कोड योजनके विस्तारवाला यह लोक है जिन्ही के अन्दर रहे हूवे आकाश प्रदेश भी असंख्याते है उन्ही आकाश प्रदेशोंको एकेक समय एकेक प्रदेश निकाला जावे तों असंख्याते कालचक्र पुर्ण हो जावे इतने आकाश प्रदेश है.

एक आकाशप्रदेश पर जीव जन्ममरण कीया है वह गीनतीमे और फीरसे उन्ही आकाशप्रदेशपर मेरे वह इन्ही पुद्गलपरावर्तन कि गीनतीमे नही आवे इसी माफीक अस्पर्श किये हूवे आकाशप्रदेश पर जन्ममरण करते हूवे सम्पुरण लोकाकाशप्रदेशोंको स्पर्श करे। जीव जन्ममरण करता है वह

असख्याते प्रदेशपर करता है तद्यपि यहांपर मोरयता एकही प्रदेशकी गीनी गइ है। इसी माफीक प्रत्येक प्रदेशपर जन्म-मरण करते हूवे सम्पुरण लोक पुरण करदे उन्हीको क्षेत्रापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है तात्पर्य यह हूवे कि एकेक प्रदेशपर भूतकालमें जीव अनन्तीवार जन्ममरण कीया है बादर पुद्गलपरावर्तनमें काल अनन्ता लगता है।

(४) क्षेत्रापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन-पक्तीबन्ध आकाश प्रदेशको श्रेणि केहते है वह श्रेणियों लोकमें असख्याती है जिस आकाशप्रदेशपर जीव जन्मा है उन्ही आकाशप्रदेशकि पक्तीबन्ध श्रेणिपर जन्ममरण करता जावे इन्हीसे सम्पुरण श्रेणि पुरण करदे अगर बीचमें विषमश्रेणि अर्थात् श्रेणि बहार जन्म करे तो गीनतीमें नहीं एक आचार्य महाराजकी मान्यता है कि जीतना विषमश्रेणि भव करे वह गीनतीमें नहीं दुसरे आचार्योकी मान्यता है कि वहांतक जितने शमश्रेणि विषमश्रेणि भव कीया है वह सर्वही गीनतीमें नहीं है। तत्त्वके बलीगम्य इसी माफीक श्रेणि पुरण करे पीछे उन्हीके पासकि श्रेणिपर जन्ममरण करे बीचमें विषमश्रेणि न करे तो गीनतीमें अगर करे तो गीनतीमें नहीं इसी माफीक सम्पुरण लोककि श्रेणियोंको क्रमःसर पुरण करे उन्हीको क्षेत्रापेक्षा सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन केहते है बादरसे सूक्ष्ममें काल अनन्तगुणो लागे है।

(५) कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—बीस कोडा-कोड सागरोपमका एक कालचक्र होता है उन्हीका समय असंख्याते है एक कालचक्रके पेहला समयमें जीव जन्ममरण कीया फीर दुसरा कालचक्रके पेहला समयमें जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं परंतु अन्य अस्पर्श समयके अन्दर जन्म-मरण करे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक जन्ममरण करते करते सम्पुरण कालचक्रके सर्व समयोंपर जन्ममरण करे उन्हीकों कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है। उन्हींमें भी काल अनन्त पुरण होते है।

(६) कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त काल-चक्रके प्रथम समय जन्ममरण कीया और दुसरे कालचक्रके दुसरे समय जन्ममरण करे तो गीनतीमें शेष समयमें जन्म-मरण करे तो गीनतीमें नहीं इसी माफीक तीसरा कालचक्रका तीसरा समयमें चोथा कालचक्रके चोथा समयमें एवं क्रमःसर समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें आवे किन्तु विचमें अन्य समयमें जन्ममरण करे तो सब भव गीनतीमें नहीं इसी माफीक सम्पुरण कालचक्रकों पुरण करदे उन्हीकों कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन केहते है बादरसे सूक्ष्मकों काल अनन्तगुणा लगता है।

(७) भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—रूपोंके अनु-